मुहम्मद (सल्ल०) कौन?

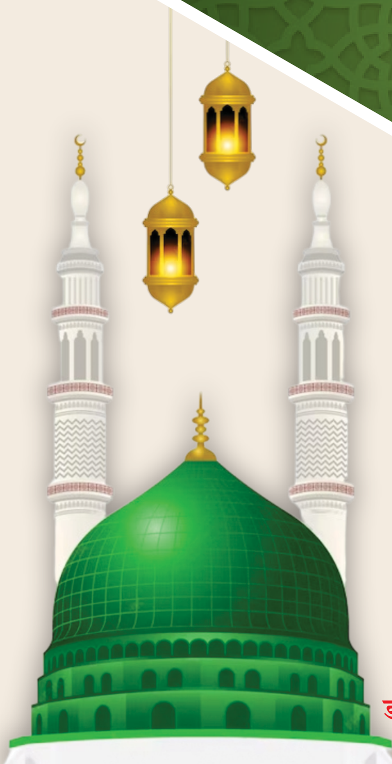

डॉ० अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली

अल-मनार पब्लिशिंग हाउस

(सल्ल.)
मुहम्मद कौन ?

लेखक

डॉ० अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली

अनुवादक

मुशर्रफ़ अली

AL-MANAR

अल-मनार पब्लिशिंग हाउस

N-27, अबुल-फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर,

ओखला, नई दिल्ली-25

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम किताब	:	मुहम्मद (सल्ल.) कौन?
लेखक	:	डॉक्टर अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली
अनुवादक	:	मुशर्रफ़ अली
पृष्ठ	:	180
प्रथम संस्करण	:	जुलाई 2024 ई.
बाएहतिमाम	:	मुहम्मद ख़ालिद आज़मी
प्रकाशक	:	अल-मनार पब्लिशिंग हाऊस, N-27, अबुल-फ़ज़ल एनक्लेव, जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025 khalid.azmi64@gmail.com

Not for Sale

मिलने का पता

AL-MANAR

अल-मनार पब्लिशिंग हाउस

N-27, अबुल-फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिआ नगर,

ओखला, नई दिल्ली-110025

+965 65948929 | +91 9667072147

विषय-सूची

दो शब्द	07
प्राक्कथन	09
भूमिका	11
पुस्तक में प्रयुक्त कुछ शब्दों के अर्थ	13
कुछ मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन के बारे में	15
सातवीं सदी ईसवी में दुनिया की बुरी हालत	19
रसूल (सल्ल०) और न्याय	28
रसूल (सल्ल०) और समानता	32
रसूल (सल्ल०) और सम्मान	36
रसूल (सल्ल०) और महिलाएँ	39
रसूल (सल्ल०) और माँ-बाप	49
रसूल (सल्ल०) और बच्चे	52
रसूल (सल्ल०) और पशु-पक्षी	59
रसूल (सल्ल०) और पड़ोसी	63
रसूल (सल्ल०) और यतीम (अनाथ)	66
रसूल (सल्ल०) और फ़क़ीर	69
ग़ुलामी और इन्सानों का व्यापार	73
रसूल (सल्ल०) और रहमत	78
रसूल (सल्ल०) और 'अफ़्व' व 'दरगुज़र'	83
रसूल (सल्ल०) और पर्यावरण	88

रसूल (सल्ल०) और सफ़ाई	91
रसूल (सल्ल०) और आज़ादी	103
रसूल (सल्ल०) और उनके सेवक	113
रसूल (सल्ल०) और हिंसा	117
रसूल (सल्ल०) और भलाई के कामों में ख़र्च	124
रसूल (सल्ल०) और एहसास की समझ	128
रसूल (सल्ल०) और संतुलन	134
रसूल (सल्ल०) और सकारात्मक मूल्यों का विकास	138
मानव क्षमताओं का विकास	140
रसूल (सल्ल०) और वैज्ञानिक अनुसंधान	144
रसूल (सल्ल०) और अल्पसंख्यक	163
रसूल (सल्ल०) की वे भविष्यवाणियां जो पूरी हुईं	168
मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व विद्वानों की नज़र में	176
समाप्ति	180

— — —

यह किताब

उन सभी भाइयों और बहनों के लिए है,

जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को

केवल मुसलमानों का रसूल समझते हैं,

हालाँकि वे पूरी मानवजाति के रसूल हैं।

जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए आम हैं,

उसी तरह मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाएँ सबके लिए आम हैं।

इस किताब में ऐसा जीवंत संदेश है,

जो नीरस जीवन को रंगों से भर देता है।

हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।

(अल-अंबिया : 107)

दो शब्द

डॉ० अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली द्वारा लिखित किताब मुहम्मद (सल्ल०) कौन ? पढ़ी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इस जीवनी में लेखक ने हदीसों यानी रसूल (सल्ल०) की कथनी और करनी के प्रमाणों से आप (सल्ल०) के जीवन में नैतिकता के उच्च आदर्शों का वर्णन किया है, इसमें विशेष रूप से एक मख़ज़ूमी महिला की घटना बहुत ही प्रेरणादायक है। लेखक ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की कथनी और करनी तथा क़ुरआन में अल्लाह के आदेशों से बताया है कि इस्लामी क़ानून की नज़र में सभी मानव बराबर हैं। इस्लाम का उद्देश्य है कि समाज में समानता हो, न्याय में समानता हो और व्यवहार में मर्यादा हो, सदाचार हो। समान अधिकार, सामाजिक मर्यादा, बेटा या बेटी के साथ समान व्यवहार, माँ-बाप के साथ नम्रतापूर्वक सद्व्यवहार, उनकी आज्ञा का पालन रसूल (सल्ल०) की शिक्षाएँ हैं। पुस्तक के अनुसार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षा है कि पत्नी, पति की आज्ञा का पालन करे और पति पत्नी से सद्व्यवहार करे। पड़ोसी, पड़ोसी के साथ सद्व्यवहार करे। रसूल (सल्ल०) का केवल मानवजाति के प्रति ही नहीं अपितु समस्त जीवों के प्रति दयालुतापूर्ण व्यवहार का वर्णन किताब में प्रमाण के साथ किया गया है।

लेखक ने क़ुरआन और हदीसों से, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अमल से प्रमाणित किया है कि माफ़ी देना, क्रोध को रोकना, सेवकों से अच्छा व्यवहार करना, हिंसा केवल आत्म-रक्षा के लिए व बड़ी हिंसा को रोकने के लिए करना और दुश्मन के साथ भी न्यायपूर्ण व्यवहार करना मुसलमानों के स्वाभाविक कर्तव्य होने चाहिए।

पुस्तक में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा बताए गए वैज्ञानिक अनुसंधानों का तर्कपूर्ण प्रमाणों के साथ वर्णन किया गया है। लेखक ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा बताई गई भविष्यवाणियों का भी वर्णन किया है जो सच साबित हुईं।

सारतः यह कि यह पुस्तक बहुत ही रोचक और एक अच्छे समाज के निर्माण हेतु बहुत उपयोगी है।

दिनांक : 01-06-2024

–स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

प्राक्कथन

एक ऐसी दुनिया, जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस का क़ानून आम था। जिसमें ग़रीबों का आर्थिक शोषण अमीरों के लिए खिलवाड़ था, जिसमें कई बार लड़कियों को पैदा होते ही ज़िंदा दफ़्न कर देना भी प्रचलित था। जिसमें औरतों की इज़्ज़त-आबरू कोई मानी नहीं रखती थी। जब एक अल्लाह के बजाय अनगिनत ख़ुदाओं की पूजा होती थी। ऐसे समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ, जिसके लिए हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ माँगी थी और जिसकी ख़ुशख़बरी हज़रत ईसा मसीह ने सुनाई थी। एक ऐसा नबी जो किसी क्षेत्र विशेष या वर्ग विशेष के लिए नहीं भेजा गया था, बल्कि जो समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शक और पथ-प्रदर्शक था। जो समस्त संसार के इन्सानों के लिए रहमत (दयालुता) बनाकर भेजा गया था। जिसने बीमार मानवता को क़ुरआन के रूप में एक ऐसा उपचार दे दिया जो उसके सभी दुखों से स्थायी रूप से छुटकारा दिलाने वाला है।

यह सच्चाई भी किसी से ढकी-छिपी नहीं कि मुहम्मद पर ईमान रखने का दावा करनेवालों ने मानवजाति के उस मुक्तिदाता को दुनिया के सामने उस तरह पेश नहीं किया, जिस तरह पेश किया जाना चाहिए था। परिणामस्वरूप स्थिति यह हो गई, एक कवि के शब्दों में–

क्या ख़बर थी ये ज़माने भी हैं आने वाले,
सोते रह जाएँगे दुनिया को जगाने वाले।

जिसने हमें ज्ञान अर्जित करने का सबक़ दिया। जिसने कहा कि इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औरत पर। जिसने जन्म से मृत्यु तक इल्म हासिल करने का आदेश दिया। जिसने हमें यह भी बताया कि तत्वदर्शिता ईमानवाले की खोई हुई पूंजी है, वह जहाँ से मिले ले लो। जिसने हमें यह बताया कि इन्सान को जो भी मिलता है वह उसकी कोशिश

के बिना नहीं मिलता है, लेकिन साथ ही यह भी समझाया कि अच्छा और बुरा जो कुछ होता है वह तक़दीर से होता है जो अल्लाह की ओर से है। आज दुनिया में इस्लाम और मुसलमानों की घेरा-बंदी केवल इसलिए हो रही है कि मुसलमानों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को भुला दिया है।

मुझे ख़ुशी है कि इसका एहसास कुवैत में बैठे हुए एक ऐसे अद्वितीय विद्वान को हुआ जो अपने सीने में सारे जहाँ का दर्द रखता है। उन्होंने अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं को आम इन्सानों में फैलाने के लिए 29 विषयों में विभाजित कर के हमारे सामने अरबी भाषा में पेश किया। फिर जनाब ख़ालिद आज़मी की कोशिशों से उसका पहले उर्दू फिर हिन्दी भाषा में अनुवाद हुआ। मुझे यक़ीन है कि वे सभी लोग जो इस किताब का अध्ययन करेंगे वे इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। विशेष रूप से किताब का यह हिन्दी संस्करण हमारे विस्तृत देश में अल्लाह के रसूल को लेकर पाई जानेवाली ग़लतफ़हमियों को दूर करने में बहुत मददगार साबित हो सकती है।

–पद्मश्री प्रो० अख़्तरुल वासेअ
प्रोफ़ेसर इमेरेट्स, इस्लामिक स्टडीज़ विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
पूर्व अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग, दिल्ली

भूमिका

सभी मानव सभ्यताओं और ऐतिहासिक कालखंडों में यह एक आम कहावत रही है कि मनुष्य जिस चीज़ से अपरिचित होता है, वही उसका शत्रु है। मनुष्य हर ऐसी चीज़ से बिदकता है, जिससे वह परिचित नहीं होता। इसी प्रकार, वह अपने मूल में निहित सामाजिक रीति-रिवाजों और शिष्टाचार से विचलन को बर्दाश्त नहीं करता है। यही कारण है कि जब अल्लाह तआला ने इंसानों की ग़लत मान्यताओं को सही करने के लिए नबियों को भेजा, तो सभी राष्ट्रों और समुदायों का एक ही उत्तर होता–

> ‘‘हमने अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हैं।’’[1]

इसी लिए आयत में ‘उम्मत’ का मतलब तौर-तरीक़ा है इसी लिए सभी क़ौमें अपने नबियों और रसूलों की दावत को ठुकरा दिया करती थीं। क्योंकि वे बाप-दादा से मिले हुए अक़ीदे, रस्मों-रिवाजों और धार्मिक तौर-तरीक़ों से मानूस थे।

किसी चीज़ की सच्चाई जाने बिना उसे ठुकरा देना तार्किक सोच और बौद्धिक अपेक्षा के सरासर ख़िलाफ़ है। इसी तरह किसी व्यक्ति को जाने बिना ही उसे नापसन्द करना और इन्सान के व्यक्तित्व, आचरण और कारनामों से परिचित होने से पहले ही इससे नफ़रत करना समझदारी नहीं है। लोगों की बाहरी शक्ल-सूरत देखकर या रंग और नस्ल पर निगाह डाल कर उनकी हैसियत का अन्दाज़ा लगाना ठीक नहीं है। मानव स्वभाव की इस पृष्ठभूमि में जिन लोगों ने मुहम्मद (सल्ल०) के ख़िलाफ़ दुश्मनी का झंडा बुलंद किया और इतिहास में सबसे कठोर यातना की मिसाल स्थापित की। हालाँकि उन्होंने न मुहम्मद

1. अल-ज़ुख़रुफ़ : 22

(सल्ल०) को जाना था न उनके व्यक्तित्व को पढ़ा, न उनके नैतिक को बरता था, और न उनके कारनामों के बारे में जानकारी प्राप्त की, बल्कि इस्लाम के ख़िलाफ़ दुश्मन मीडिया के ग़लत प्रोपेगंडे के नतीजे में शत्रुतापूर्ण रवैया अपना लिया या इन्होंने ख़ुद को इस्लाम का मुद्दई समझने वाले इस अपराधी वर्ग को देखकर यह स्टैंड लिया जो रक्तपात करता है, शांतिप्रिय लोगों को आतंकित करता है। फिर उसी पक्ष को इन्होंने इस्लाम से जोड़ दिया। इस किताब का मक़सद मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व से परिचित कराना है। यह किताब मुहम्मद (सल्ल०) के नैतिक और गुणों, आदमी, औरत, बच्चे, जानवर, पेड़-पौधे, और दूसरे धर्मों के प्रति उनके रवैये का बिलकुल क़रीब से परिचय कराती है और मानवाधिकार और उस नैतिकता से जिसकी दुनिया इस दौर में या किसी दौर में अपेक्षा करती है और मानव जीवन के सभी विभागों के बारे में मुहम्मद (सल्ल०) के मार्गदर्शन से परिचित कराती है।

दुआ है कि अल्लाह तआला इसकोशिश को क़बूल फ़रमाए। इसके फ़ायदे के दायरे को वुसअत करे और उसके बन्दों को इससे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचे।

–अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली

(कुवैत)

पुस्तक में प्रयुक्त कुछ शब्दों के अर्थ

इस किताब में कुछ ऐसे शब्द आएँगे, जिनका संक्षिप्त रूप लिखा गया है। किताब पढ़ने से पहले ज़रूरी है कि उन शब्दों का पूरा रूप और मतलब समझ लिया जाए, ताकि किताब पढ़ते समय कोई परेशानी न हो। शब्द ये हैं–

(सल्ल०) : इसका पूरा रूप है, 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' जिसका मतलब है, 'अल्लाह उनपर रहमत और सलामती की बारिश करे!' जब लोग अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम लिखते, बोलते या सुनते हैं तो उनके सम्मान के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।

(अलैहि०) : इसका पूरा रूप है, 'अलैहिस्सलाम' यानी 'उन पर सलामती हो! नबियों और फ़रिश्तों के नाम के साथ आदर और प्रेम सूचक ये शब्द बढ़ा देते हैं।

(रज़ि०) : इसका पूर्ण रूप है, 'रज़ियल्लाहु अन्हु' इसका अर्थ है, 'अल्लाह उनसे राज़ी हो!' 'सहाबी' के नाम के साथ यह आदर और प्रेम सूचक दुआ बढ़ा देते हैं।

सहाबी : उस ख़ुश-क़िस्मत मुसलमान को कहते हैं, जिसे नबी (सल्ल०) से मुलाक़ात का गौरव मिला हो। सहाबी का बहुवचन सहाबा है स्त्रीलिंग सहाबिया है।

अगर किसी सहाबिया के नाम के साथ (रज़ि०) इस्तेमाल हुआ हो तो उसे 'रज़ियल्लाहु अन्हा' पढ़ते हैं और अगर सहाबा के लिए आए तो 'रज़ियल्लाहु अन्हुम' कहते हैं।

कुछ मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन के बारे में

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नैतिक गुणों के उल्लेख से पहले आप (सल्ल०) के जीवन के हालात के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करना ज़रूरी है। ताकि हमें यह मालूम हो सके कि हम किस हस्ती का उल्लेख करने जा रहे हैं।

नाम : मुहम्मद (सल्ल०)

पिता का नाम : अब्दुल्लाह

माँ का नाम : आमिना बिंते वह्ब

दादा का नाम : अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ बिन कुसई बिन किलाब बिन मर्राह, इस तरह आप (सल्ल०) का शिजरा-ए-नस्ब नबी बरहक़ इस्माईल अलैहिस्सलाम और नबी इबराहीम अलैहिस्सलाम से जा मिलता है।

जन्म स्थान

मुहम्मद (सल्ल०) मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए । जिस साल अबरहा ने बैतुल्लाह पर हाथियों के ज़रिये चढ़ाई की वह साल आमुल-फ़ील (हाथियों का साल) कहलाया । ईसवी साल 571 था, सोमवार की रात थी । अरबी कैलेंडर के अनुसार रबीउल-अव्वल की 12 तारीख़ थी ।

सामाजिक हालत

आप (सल्ल०) यतीमी की हालत में (पिता की मृत्यु के बाद) पैदा हुए। आप (सल्ल०) के पिता अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल उस समय हो गया था जब आप (सल्ल०) अपनी माँ आमिना बिंते वह्ब की कोख में थे। अभी आप (सल्ल०) की उम्र केवल छः साल थी कि माँ की ममता से वंचित हो गए। फिर आप (सल्ल०)

का पालन-पोषण आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब करने लगे, जिनका इंतिक़ाल उस समय हो गया जब आप (सल्ल०) की उम्र आठवीं बहार में थी। इस तरह आप (सल्ल०) चाचा अबू-तालिब के संरक्षण में आ गए और वयस्कता की आयु तक पहुँचने तक वे बराबर आप (सल्ल०) का पालन-पोषण करते रहे।

नैतिक चरित्र

क़बीला क़ुरैश में मुहम्मद (सल्ल०) की सच्चाई और अमानतदारी की चर्चा थी। आप (सल्ल०) का नाम ही सादिक़ (सत्य-मूर्ति) और अमीन (अमानतदार) पड़ गया था। आप (सल्ल०) की अमानतदारी की वजह से लोग आप (सल्ल०) के पास अमानतें रखते थे और यह सिलसिला नुबूवत के बाद भी रहा।

एकांतवास

नुबूवत से पहले मुहम्मद (सल्ल०) को एकांतवास अच्छा लगने लगा और आप 'हिरा' नामी पहाड़ पर जाकर ख़ुद को एकाग्र करने लगे।

सूझ-बूझ

मुहम्मद (सल्ल०) बड़े समझदार और बुद्धिमान थे। जब काबा के पुनर्निर्माण के समय हज्रे-असवद (काबे की दीवार में जड़ा काला पत्थर) को स्थापित करने को लेकर सभी क़बीलों में विवाद हो गया कि कौन उसे वहाँ रखेगा। इसलिए कि यह बड़ा सम्मान था, हरेक की इच्छा थी कि यह सम्मान उसे प्राप्त हो। इस कठिन घड़ी में इस मसले को हल करने के लिए सबने आप (सल्ल०) को फ़ैसला करने वाला बनाया। आप (सल्ल०) के फ़ैसले से सब संतुष्ट हो गए। आप (सल्ल०) ने यह सुझाव रखा कि हज्रे-असवद को एक चादर में रखा जाए और हर क़बीले का एक प्रतिनिधि चादर के एक कोने को पकड़े, ताकि हज्रे-असवद उठाने का सम्मान सबको मिल जाए। इसी तरह आप (सल्ल०) की वफ़ादारी, पाकदामनी और पाकीज़गी का हर कोई दम भरता था।

शादी

उम्र की पच्चीस बहारें देखने के बाद मुहम्मद (सल्ल०) ने क़ुरैश की एक मालदार शरीफ़, सभ्य, शालीन और ऊँचे कुल की महिला से शादी कर ली।

उनका नाम सय्यिदा ख़दीजा (रज़ि०) था। वे ख़ुवैलिद की बेटी थीं। ख़दीजा (रज़ि०) ने मुहम्मद (सल्ल०) के नैतिक गुणों के बारे में सुना और अपनी पूंजी देकर मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिये व्यापार कराया तो अनुभव आश्चर्यचकित करने वाला रहा। इस दौरान मुहम्मद (सल्ल०) की ईमानदारी और सच्चाई का सीधा अनुभव हुआ, तो उन्होंने शादी का प्रस्ताव रखा, जो मंज़ूर कर लिया गया। सय्यिदा ख़दीजा (रज़ि०) ही से आप (सल्ल०) की सारी औलाद (लड़के और लड़कियाँ) पैदा हुईं।

नुबूवत

जब मुहम्मद (सल्ल०) की उम्र चालीस साल हुई तो अल्लाह ने आप (सल्ल०) को नबी और रसूल बनाया और जब आप (सल्ल०) ने अपनी क़ौम के लोगों तक यह ख़बर पहुँचाई तो सब आप (सल्ल०) के विरोधी हो गए। बुतों और देवताओं की पूजा करने पर जमे रहे। इस भय के माहौल में बहुत थोड़े से लोग ईमान लाए, उनमें भी ज़्यादा संख्या ग़ुलामों की थी।

विरोध का दौर

जब मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी क़ौम के सामने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया तो इस पैग़ाम को केवल ठुकरा देने पर ही बस नहीं किया, बल्कि आप (सल्ल०) के और आप (सल्ल०) पर ईमान लाने वालों के ख़िलाफ़ हर तरह का ऐलान युद्ध कर दिया। आप (सल्ल०) के अनुयायियों को हर तरह प्रताड़ित किया जाने लगा, उनकी हत्या की जाने लगी, उन पर हालात तंग कर दिए गए, धमकियाँ दी जाने लगीं, कभी दिल लुभाने वाली चीज़ों का लालच दिया जाता। आप (सल्ल०) के पांवों में सरदारी, दौलत और महिलाएँ पेश करने के लिए तैयार हो गए, लेकिन आप (सल्ल०) ने हर पेशकश को ठुकरा दिया और मक्का से मदीना हिजरत कर गए, ताकि अल्लाह का पैग़ाम वहाँ के लोगों तक पहुँचाएँ। आप (सल्ल०) सभी क़बीलों और ख़ानदानों तक इस्लाम की बातें बराबर पहुँचाते रहे, लेकिन लोग मुँह मोड़ते रहे, अलबत्ता मदीना का एक समूह मानने के लिए तैयार हो गया, आप (सल्ल०) की मदद के लिए आमादा हो गया और आपके दीन को अपनाने के लिए तैयार हो गया।

हिजरते-मदीना

मदीना की हिजरत वास्तव में इस्लामी राज्य की स्थापना का आरंभ है। मुहम्मद (सल्ल०) को मदीना में कई तरह के विरोध का सामना करना पड़ा। वहाँ मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) का एक गिरोह उठ खड़ा हुआ। दूसरे धर्मों के कुछ मानने वाले भी मैदान में आ गए। लेकिन आप (सल्ल०) ने उनके साथ बड़ी उदार हृदयता और अपार नैतिकता का प्रमाण दिया। आप (सल्ल०) उन्हें नज़रअंदाज़ करते रहे और सहअस्तित्व के उसूल पर चलते रहे। इसके विपरीत विरोधियों का रवैया शत्रुतापूर्ण रहा और वह दुश्मनी के इज़हार और क़ुरैश का साथ देने से बाज़ न आए। और आपके आन्दोलन को कुचलने पर उतारू रहे। फिर तो कई झड़पें हुईं, लड़ाइयाँ हुईं और संसाधनों की कमी के बावजूद विजय प्राप्त हुईं और देखते-देखते आप (सल्ल०) के पक्ष में माहौल बन गया और आप (सल्ल०) के आन्दोलन को शक्ति मिल गई। आप (सल्ल०) ने नये राज्य की बुनियाद रखनी शुरू कर दी, उसका नैतिक फ्रेम तैयार किया। यक़ीनन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे अलग और विशिष्ट लीडर थे और आप (सल्ल०) ने मदीना के ग्यारह वर्षों के समय में एक मिसाली समाज तैयार कर दिया। जिस आदर्श नगर का अरस्तू ने ख़ाब देखा उससे कहीं ज़्यादा स्तरीय शहर और समाज अस्तित्व में आ गया। अरब के सारे क़बीले आप (सल्ल०) के झंडे तले जमा हो गए और आप (सल्ल०) ने दुनिया के राष्ट्राध्यक्षों को पत्र लिखे, इस्लाम की दावत दी और उन्हें सत्य की ओर बुलाया।

देहांत

जब मुहम्मद (सल्ल०) की उम्र 63 साल हुई तो आप (सल्ल०) का देहांत हो गया। आप (सल्ल०) के देहांत से मुसलमानों को सख़्त सदमा पहुँचा, लेकिन आप (सल्ल०) अपने पीछे ऐसे योग्य व्यक्ति छोड़ गए जो पूरी दुनिया पर छा जाने में कामयाब हुए और उस दौर के दो बड़े साम्राज्य रोम और फ़ारस ढेर हो गए।

– – – – –

सातवीं सदी ईसवी में दुनिया की बुरी हालत

ईसा अलैहिस-सलाम के जन्म के 571 साल बाद दुनिया मानवता का सबक़ भूल गई थी, होश खो बैठी थी, अन्याय और अत्याचार का साम्राज्य था, जिसकी लाठी उसकी भैंस का मामला था, दुनिया ऐसी रोशनी के इंतिज़ार में थी जो हर ओर फैले हुए अंधेरे को रोशनी में बदल दे। अगले पृष्ठों में हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्म के समय अरब प्रायद्वीप में बसने वाले क़बीलों के हालात पर रोशनी डालेंगे और उसके बाद उस ज़माने के प्रमुख साम्राज्यों का भी उल्लेख करेंगे।

(1) अरब प्रायद्वीप

अरब प्रायद्वीप के अरब क़बीले तीन हिस्सों में बंटे हुए थे। उनमें से एक रोमन साम्राज्य के वफ़ादार थे और ग़स्सानी कहलाते थे। कुछ लोग ईरानी सरकार के करदाता बन गए थे, उनके सिवा बाक़ी जितने क़बीले थे वे किसी बाहरी शक्ति के अधीन न थे, न किसी से दोस्ताना सम्बन्ध रखते थे। ये लोग नज्द और आस-पास के रेगिस्तानी इलाक़े और मक्का और मदीना में रहते थे। उनमें से अधिकतर बुतपरस्त थी और बला के मय-नोश थे। मुर्दार खाते थे। बच्चियों को ज़िंदा दरगोर करते थे। उन्हें (दुश्मन के हाथों) उनकी असीरी का ख़ौफ़ दामन-गीर रहता था। इन लोगों में जुआ, बदकारी और ग़ुलामी आम थी। इस जाहिली दौर का हाल इतना दर्दनाक था कि बाप के मरने के बाद बेटे सौतेली माओं के वारिस बन जाते और भी न जाने जाहिलियत ने कितने रोग फैला रखे थे।

उस दौर के अरब ग़रीबी और भुखमरी के डर और पोषण की क्षमता न रखने की वजह से बच्चे और बच्चियों की हत्या कर देते थे। लूट-मार और हत्या व रक्तपात के लिए युद्ध लड़ते, हमले करते थे। ये बुराइयाँ एक ओर लेकिन उनके अन्दर बहुत-सी खूबियाँ भी पाई जाती थीं, जैसे वे सच बोलते थे, भले तौर-तरीक़े रखते थे, वादे के पाबंद थे, पड़ोसी की इ़ज़्ज़त करते थे, धैर्य और भरोसे के आदी थे और बहादुरी और दिलेरी उनकी घुट्टी में पड़ी थी। महरम औरतों से बदकारी को हराम समझते थे और भी दूसरे अच्छे गुण से मालामाल थे।

(2) रोमन साम्राज्य

छठी और सातवीं सदी ईसवी में रोमन साम्राज्य और उसके सभी राज्य सामाजिक बुराइयों और नैतिक गिरावट के गर्त तक पहुँच चुके थे। सेल के अनुसार न्याय एक मामूली सामान की तरह ख़रीदा और बेचा जाता था, भाव-ताव होता और रिश्वत और घोटाले पर जनता की ओर से दाद मिलती थी।[1]

"गिब्बन" कहता है कि छठी सदी के अंत तक रोमन साम्राज्य पतन के अंतिम पायदान तक पहुँच गया, जबकि उसकी मिसाल एक छायादार वृक्ष की थी और दुनिया के राष्ट्र उसकी छाया में पनाह लेते थे, उसमें सिवाए उस तने के कुछ नहीं बचा जो दिन-ब-दिन मुर्झा रहा था।[2]

विश्व इतिहास पर निगाह रखने वाले इतिहासकार लिखते हैं कि जिन बड़े साम्राज्यों को तबाही ने तेज़ी से आ घेरा और वे दुबारा कभी न पनप सके, रोमन साम्राज्य उनकी मिसाल है। वह उस दौर में ज़बरदस्त पतन का शिकारा हुआ और यह हाहाकार, भारी टैक्स, मंदी, उत्पादन पर ध्यान न देने और शहरों की जनसंख्या दर घटने के कारण मची।[3]

रोमन साम्राज्य के अधीन पश्चिमी यूरोप पर अज्ञानता ने डेरा डाल लिया। शहंशाहों और नौकरशाही की बढ़ती अश्लीलता और अत्याचार ने बेड़ा ग़र्क़ कर दिया।

---

1. Sales Translation P-72/1986.
2. The History of the Decline and Fall of the Roman Empire
3. The Historians' (History) of the World V.vii p-175

राबर्ट ब्रेफ़ाल्ट कहता है यूरोप पर पाँचवीं सदी से दसवीं सदी तक एक अंधेरी रात छाई रही और रात का यह अंधकार दिन-ब-दिन बढ़ता रहा उस दौर की क्रूरता प्राचीनकाल के मुक़ाबले में ज़्यादा भयावह और घातक था, इसलिए कि यूरोप बड़ी सभ्यता की सड़ी बदबूदार लाश के जैसा हो चुका था। उसकी सभ्य दौर की अच्छाइयाँ मिट चुकी थीं, और उसे पतन का शिकार कर दिया था। हालाँकि बड़े क्षेत्र और विस्तृत इलाक़े में यह सभ्यता पली-बढ़ी थी और अतीत में इटली और फ़्रांस की तरह उन्नति को जा पहुँची थी, लेकिन तबाही, अराजकता और बर्बादी का शिकार हो गई।

(3) ईरानी साम्राज्य

रोमन साम्राज्य के बाद ईरानी साम्राज्य ही दूसरी बड़ी शक्ति थी जिसका सिक्का पूरी दुनिया पर चलता था। रोमन और ईरानी साम्राज्यों में यह फ़र्क़ ज़रूर था कि रोमन साम्राज्य अहले-किताब (किताबवाले) थे, मुक़द्दस किताब से परिचित थे, हलाल और हराम की समझ रखते थे, नैतिकता और पारिवारिक क़ानूनों से अवगत थे, अच्छे नैतिक आचरण पर थे । उसके विपरीत ईरानी शासन अहले-किताब न थी, बल्कि वहाँ के लोग आग की पूजा करते थे, वे न हलाल और हराम की पाबंदियों से परिचित थे, न ख़ानदानी और सामाजिक सम्बन्ध बरतने के नैतिक सिद्धांतों से परिचित थे । इसी लिए पाँचवीं और छठी सदी ईसवी में रोमन साम्राज्य के नैतिक पतन के मुक़ाबले में ईरानी साम्राज्य का नैतिक पतन ज़्यादा था। इस बारे में इतिहास बताता है कि ईरानी राजा यज़्दगज़्द द्वितीय (पाँचवीं सदी ईसवी के मध्य का शासक) ने अपनी बेटी से विवाह किया, फिर उसकी हत्या कर दी।[1] और छठी सदी ईसवी का शासक बहराम शाह अपनी बहन से शादी किए हुए था।[2] ये लोग औरतों के हलाल और हराम होने के बारे में गुमराही का शिकार थे। कभी वह फ़तक़ के बेटे मानी (जो उनका चिंतक था, की पैरवी करने लगे, क्योंकि फ़तक़ आम लोगों की तरह हैकल जाता था। तो उसने हैकल से परोक्ष की आवाज़ सुनी जो यह कह रही थी,

1. Historians History of The World V.8, P. 84
2. तबरी इतिहास 3/138

"फ़तक़-फ़तक़!" माँसाहार और मदिरापान त्याग दे और कदापि विवाह न कर।[1] मानी का विकास पैतृक धर्म पर हुई लेकिन जब वह बारह साल का हुआ तो उसने दावा किया कि उसके पास ईशवाणी आई है कि पैतृक धर्म से अलग हो जाओ क्योंकि वह तुम्हारे योग्य नहीं है, इच्छाएँ छोड़कर पवित्र बन जाओ।[2] इन कार्रवाइयों से उसका मक़सद देश में प्रचलित अश्लीलता पर आधारित व्यवस्था का मुक़ाबला करना था, उसने लोगों से कुँवारा रहने की अपील की और शादी को वर्जित क़रार देने का सुझाव रखा ताकि फैले हुए बिगाड़ पर रोक लगाई जाए। इस बात पर लोग उसके विरोधी हो गए और उसकी हत्या कर दी। 'मानी' की सोच और उसके चिंतन के ख़िलाफ़ परतिक्रिया में एक नए चिंतन को अपना लिया। यह चिंतन 'मज़दक' ने पेश किया था। उसने खुली अश्लीलता का नज़रिया पेश किया। वह आपसी विवाद, आपसी दुश्मनी और हिंसा और हत्या से रोकता था। चूँकि ये सारे बिगाड़ औरत और दौलत की वजह से होते हैं, इसलिए औरतों के साथ व्यभिचार और दुष्कर्म को वैध और हर तरह की दौलत और माल को जायज़ क़रार दिया और पानी, आग और चारे की तरह औरत और दौलत को भी साझा सम्पत्ति क़रार दिया। इसके बारे में यह भी लिखा गया कि उसने कुछ लोगों को फांसी पर इसलिए चढ़ा दिया ताकि वे तंग जीवन और ज़ालिमाना मिज़ाज से छुटकारा पा सकें।[3]

हज़रत मौलाना सय्यद अबुलहसन अली नदवी लिखते हैं ईरान के सलातीन का लक़ब किसरा (ख़ुसरो) हुआ करता था। वे इस बात के दावेदार थे कि उनकी रगों में ख़ुदाई ख़ून है। ईरान वाले भी उन्हें इसी नज़र से देखते थे कि जैसे वे ख़ुदा हैं। उनका विश्वास था कि इन राजाओं की फ़ितरत में एक मुक़द्दस आसमानी चीज़ है।[4]

(4) चीनी साम्राज्य

इन साम्राज्यों की तरह चीन की हालात भी ज़्यादा अच्छी न थी। एक दार्शनिक लाऊज़ी था, जिसको ताऊ मत का संस्थापक क़रार दिया जाता है।

1. इब्ने-ख़ुलदून :1/256 2. इब्ने-ख़ुलदून :1/256
3. अल-मिलल और नह्ल : 2/276
4. मानव दुनिया पर मुसलमानों के उत्थान और पतन का प्रभाव, पृष्ठ-42, 43)

उसके अनुयायियों ने ऐसा संन्यासी जीवन अपनाया कि शादी की सोच को खुरच फेंका, औरतों से मिलना-जुलना बल्कि उनको देखना भी छोड़ दिया। फिर हाल यह हुआ कि जैसे ही लाऊज़ी मरा, उसके मानने वालों ने उस का धर्म छोड़ दिया। और दूसरे धर्मों के अनुयायी बन गए। उसके बाद दूसरा फ़लसफ़ी, कनफ़ीवशस उठा। उसने शिक्षक और विद्वान के रूप में ख्यति पाई और समाज और लोगों के बीच सामाजिक संकोच के नज़रिये की बुनियाद डाली। उसके मानने वालों ने इसकी शिक्षाओं को किताबी शक्ल दी और इसका नाम 'लुन यू' (Lun-yu) रखा जिसका अर्थ है, 'लेख मंजरी'। मौलाना सय्यद अबुलहसन अली नदवी लिखते हैं उसके मानने वाले एक समय में किसी एक उपास्य की पूजा के पक्ष में न थे। वृक्ष या नदी जिसे चाहते पूजते। उस में यक़ीन की रोशनी, ईमान का जज़्बा न था और न ही किसी आसमानी क़ानून का कोई मार्गदर्शन था, बस दार्शनिक का विवेक, अनुभवियों के तज़ुर्बे ही सारी पूंजी थी।

उसके बाद बुद्ध मत आया और उसने पहले धर्मों का सफ़ाया कर दिया।

(5) भारत

भारतीय विद्वान मौलाना सय्यद अबुल-हसन अली नदवी पाँचवीं और छठी सदी ईसवी में भारत के हालात के बारे में लिखते हैं :

> "भारत के इतिहासकारों की इस बिन्दु पर सहमति है कि छठी सदी ईसवी से जो ज़माना शुरू होता है वह धार्मिक, सामूहिक और नैतिक दृष्टि से इस देश के इतिहास का (जो किसी ज़माने में ज्ञान और सभ्यता और नैतिक आन्दोलन का केंद्र रहा है) अंधकारमय दौर था, भारत के आस-पास दूसरे देशों में जो सामूहिक और नैतिक पतन आया हुआ था, उस में यह देश किसी से पीछे न था। इसके अलावा भी कुछ विशेषताएं थीं, जो केवल इसी देश में पाई जाती थीं। इन विशेषताओं को तीन शीर्षकों के तहत बयान किया जा सकता है :
>
> 1. उपास्यों (माबूदों) की हद से बढ़ी हुई संख्या।
> 2. यौन इच्छा की बाढ़।
> 3. वर्ग विभाजन और सामाजिक भेदभाव।

भारत में पांचवीं छठी सदी में जो वर्ण व्यवस्था थी वह उल्लेखनीय है। यहाँ तक कि उसके प्रभाव इस दौर में भी महसूस किए जाते हैं। वर्ण व्यवस्था के सिलसिले में जनाब इमरान हम्मादा लिखते हैं ईसा मसीह से तीन सौ वर्ष पहले भारत में ब्रह्मण सभ्यता उन्नति पर थी। उस समय नए क़ानून का संकलन हुआ और सभी देशवासियों ने एकमत होकर उसे क़ुबूल किया और उसने बहुत जल्द राष्ट्रीय क़ानून और एक धार्मिक दस्तावेज़ का रूप ले लिया। यह वही क़ानून है जिसको हम आज मनुस्मृति के नाम से जानते हैं।[1]

मनुस्मृति के पहले अध्याय में देशवासियों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है :

(1) ब्रह्मण
(2) क्षत्रिय
(3) वैश्य
(4) शूद्र

मनुस्मृति में लिखा है कि सर्वशक्तिमान ब्रह्मा ने संसार के कल्याण के लिए अपने मुँह से और अपने बाज़ुओं से और अपनी रानों से और अपने पैरों से ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को पैदा किया।

(1) ब्रह्मण

ब्रह्मण का जन्म सबसे पवित्र एवं प्रतिष्ठित अंग मुँह से हुई इसलिए वह सभी वर्गों में प्रतिष्ठित एवं विशेष हैं और उनको विशेषाधिकार प्राप्त हैं। वे समस्त सृष्टि से बेहतर हैं इसी लिए इन ब्रह्मणों के लिए वेद की शिक्षा और पाठ, क़ानूनों की व्याख्या, देवताओं के चढ़ावे और दान-दक्षिणा लेने को उनके साथ विशेष कर दिया गया और दुनिया की हर चीज़ उनकी मिल्कियत क़रार दी गई। ब्रह्मण को अधिकार है कि वह चोरी करे, सारे गुनाह करे, क्योंकि वह अपना अधिकार खाता है, अपना माल खाता है और पहनता है, अपना ही माल दान करता है और इसकी दया दृष्टि से दूसरे लोग गुज़र बसर करते हैं।

---

1. दुनिया पर मुसलमानों के उत्थान और पतन का प्रभाव, पृ. 48, 49

ब्रह्मण जिस सभा में शरीक होता है, इस सभा में भाग लेनेवालों के साथ उनकी अगली सात पीढ़ियों और पिछली सात पीढ़ियों को पवित्र कर देता है।

ब्रह्मणों के प्रति राजाओं की ज़िम्मेदारीयों के बारे में कहा गया है कि राजा ब्रह्मण के ख़िलाफ़ अत्यंत गंभीर परिस्थिति में भी क्रोध का प्रदर्शन न करे। अगर राजा ने ऐसा किया तो वह सेनाओं और सवारियों सहित बर्बाद हो जाएगा। इसी तरह ब्रह्मणों की ज़िम्मेदारी है कि अगर क्षत्रिय उनसे बढ़ने की कोशिश करें, (राजा क्षत्रिय होता है) तो उन्हें औक़ात में रखें। इसलिए कि क्षत्रिय ब्रह्मण से पैदा हुए हैं।

(2) क्षत्रिय

ब्रह्मा ने क्षत्रियों को अपने भुजाओं से पैदा किया और भुजाएँ शक्ति और युद्ध के प्रतीक है, इसलिए राजा और सेना क्षत्रिय हों इसलिए क्षत्रियों की बुनियादी ज़िम्मेदारी जनता और देश की रक्षा और बचाव है। इसके अलावा वह कोई दूसरा पेशा नहीं अपना सकते। क्षत्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार इस शर्त के साथ प्राप्त है कि वे किसी को वेद की शिक्षा नहीं देंगे, क्योंकि यह अधिकार केवल ब्रह्मणों का है।

(3) वैश्य

वैश्य को ब्रह्मा ने अपनी रानों से पैदा किया, जिनकी ज़िम्मेदारी यह है कि वह पेशावाराना तौर पर अर्थ की व्यवस्था करें, खेती करें, मवेशी पालें। इसलिए कि स्रष्टा ने सृष्टि के जन्म के समय ब्रह्मणों और क्षत्रियों से जिस तरह वचन लिया। इसी तरह पशु पालन का वचन वैश्य के ज़िम्मा किया। वैश्य की ज़िम्मेदारी यह भी है कि कृषि की बारीकियों, बीज की क़िस्मों, ज़मीन की उर्वरता और दोष से परिचित हो, नाप तौल के पैमाने से अवगत हो, साथ ही हीरे जवाहरात, मोती-मूंगे, वस्त्र-परिधान और (लूबान व सनदल) अतरयात के भावों से परिचित हो।

(4) शूद्र

ब्रह्मा ने अपने पैरों से शूद्र को पैदा किया। भारतीय समाज में इस क़ानून के तहत यह सबसे निचला वर्ग है। ब्रह्मण और क्षत्रिय की सेवा करना उस का दायित्व है। ब्रह्मणों का आदेश पालन, उनके इशारों पर चलना ही उसके जीवन का मक़सद

है। उनकी सेवा सराहनीय काम है। अगर शूद्र अपने से ऊँची जाति के किसी व्यक्ति पर हाथ या लकड़ी उठाए तो इसका हाथ काट दिया जाएगा। अगर शूद्र किसी द्विज के साथ एक ही जगह बैठना चाहे तो राजा को चाहिए कि उसकी चूतर को दग़वा दे और उसे देश निकाला दे दे, या उसके चूतर को ज़ख़्मी करा दे। अगर कोई शूद्र किसी ब्रह्मण महिला की आबरू पर हमलावर होता तो फिर क्या था, क्रोध का पहाड़ टूट पड़ता और हर तरह की बदले की कार्रवाई वैध होती और ऐसी सज़ा दी जाती जो किसी मर्द और औरत को न दी गई हो।

अछूत

भारतीय निवासियों की एक और क़िस्म है जिसका उल्लेख उपर्युक्त चार वर्गों में नहीं किया गया और इसके बारे में इतिहास से भी कुछ पता नहीं चलता कि वह कब अस्तित्व में आया। वह है अछूत और यही भारत के मूल निवासी हैं। उनका सम्बन्ध आर्य वंश से नहीं है, उन्हें भारतीय नीग्रो कहा जाता है। भारतीय समाज ने उनको मानवाधिकार से वंचित कर रखा है और उनको जानवरों से ज़्यादा तुच्छ मानते हैं। उन्हें हिंदू मज़हब अपनाने या हिंदू रस्म और रिवाज के अनुसार पूजा करने की अनुमति नहीं है, इसलिए उनका मज़हब सादा क़ौमों की तरह आत्मा की पूजा पर आधारित था।[1]

रसूल बनाने के उद्देश्य

पाँचवीं सदी ईसवी में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म हुआ। उस ज़माने में भी अरब क़बीलों में नैतिक मूल्यों के बचे-खुचे प्रभाव सच्चाई और बहादुरी बाक़ी थे, इसी तरह उस समय की दुनिया से मानवता के नमूने विदा न हुए थे, लेकिन ये सारी ख़ूबियाँ सामाजिक समस्याओं का हल न थीं और मामूली-मामूली बातों पर मासूमों के ख़ून रोकने की उनमें योग्यता न थी। न उनमें यह योग्यता थी कि सारे जहाँ में बड़े पैमाने पर प्रचलित अत्याचार का उन्मूलन कर सकें। इन हालात में मुहम्मद (सल्ल०) को रसूल बनाया गया।

आप (सल्ल०) की रिसालत मानव मूल्यों को बाक़ी रखने के लिए हुई। मुहम्मद (सल्ल०) अरबी की रिसालत का बुनियादी मक़सद नैतिकता की

1. India-55 blogshot.com / view= sidebar

सुरक्षा है। आप (सल्ल०) ने कहा :

"मैं तो उच्च नैतिक मूल्यों की पूर्ति करने के लिए भेजा गया हूँ।"[1]

दूसरी हदीस में है :

"क़ियामत के दिन मेरे सबसे प्रिय और सबसे नज़दीक लोगों में तुम्हारे वे लोग भी शामिल होंगे जिनके आचरण अच्छे हैं, और तुम में से मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत वाले और क़ियामत के दिन मुझ से सबसे दूर वे लोग होंगे जो फ़ुज़ूल बोलने वाले बात-चीत के लिए बाछों को मोड़ने वाले और घमंड करने वाले हों।"[2]

एक और हदीस में बयान हुआ है :

"(क़ियामत के दिन) मीज़ान में सदाचरण और सद्व्यवहार से ज़्यादा भारी कोई चीज़ न होगी ।"[3]

इस्लाम नैतिकता पर निर्भर है, और आप (सल्ल०) को रसूल बनाने का सबसे ऊँचा मक़सद उन नैतिक मूल्यों की पूर्ति एवं सुधार था, जो उस समय मौजूद थीं, ताकि

- जेहालत और अंधकार ज्ञान और प्रकाश में बदल जाए।
- अन्याय की समाप्ति हो और न्याय का बोल-बाला हो।
- पिछड़ापन दूर हो और विकास आए।
- सख़्ती की जगह नरमी पैदा हो।
- रिश्तों को तोड़ने वाले उन्हें जोड़ने वाले हो जाएँ।
- उद्दंडता भलाई में बदल जाए।

– – – – –

1. हदीस : बुख़ारी-45
2. हदीस : तिर्मिज़ी-2018
3. अहमद-876

रसूल (सल्ल०) और न्याय

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन के समय दुनिया के हालात के संदर्भ में उल्लेख किया गया है कि अन्याय और अत्याचार ने पूरी दुनिया को जकड़ लिया था जिस पर रोक लगाना ज़रूरी था और अत्याचार की समाप्ति करके न्याय स्थापित करना अनिवार्य था। निस्संदेह यह मुहिम रिसालत के उद्देश्य में शामिल थी, बल्कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) द्वारा पेश किए गए नैतिकता के अध्याय में सबसे ऊपर थी। क़ुरआने-करीम में कई आयतें न्याय के बारे में हैं। आदेश है :

"मुसलमानो! अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतें अमानत वालों के हवाले करो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्याय के साथ करो, अल्लाह तुमको बहुत ही उम्दा नसीहत करता है और यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनता और देखता है।"[1]

अल्लाह का आदेश है :

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, न्याय के झंडावाहक और ख़ुदा वास्ते के गवाह बनो, चाहे तुम्हारे न्याय और तुम्हारी गवाही की चोट ख़ुद तुम्हारे अपने आप पर या तुम्हारे माँ-बाप और रिश्तेदारों पर ही क्यों न पड़ती हो। दूसरा पक्ष चाहे मालदार हो या ग़रीब, अल्लाह तुमसे ज़्यादा उनका भला चाहने वाला है। इसलिए अपनी इच्छा की पूर्ति में न्याय को न छोड़ो। और अगर तुमने लगी-लिपटी बात कही या सच्चाई से पहलू बचाया तो जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।"[2]

अल्लाह का कथन है :

---

1. अन्निसा : 58 2. अन्निसा :135

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह की ख़ातिर सत्य पर स्थापित रहने वाले और न्याय की गवाही देने वाले बनो। किसी गिरोह की दुश्मनी तुमको इतना उग्र न कर दे कि न्याय से फिर जाओ। न्याय करो, यह ईशपरायणता से ज़्यादा नज़दीकी रखता है। अल्लाह से डर कर काम करते रहो, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे पूरी तरह अवगत है।"[1]

न्याय हदीसों में

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने सहाबा और बाद में अपने अनुयायियों के दिलों में न्याय की अहमियत और क़ीमत को बिठाने के लिए बड़ी संख्या में हदीसें बयान की हैं। आप (सल्ल०) के आदेशों में से एक आदेश जलीलुल-क़द्र सहाबी अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) नक़ल करते हैं :

"रहमान के दोनों ओर नूर के मिंबर पर न्याय करने वाले जल्वा-अफ़रोज़ होंगे जो न्याय पर आधारित फ़ैसले अपने घराने और अधीन लोगों में करने के आदी थे।"[2]

इसी सिलसिले की एक रिवायत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं कि आप (सल्ल०) ने कहा :

"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिन सात लोगों के बारे में कहा कि क़ियामत के दिन जब कोई साया न होगा, अल्लाह की रहमत उन पर साया करेगी, उनमें पहला उल्लेख इंसाफ़-पसन्द शासक का है।"[3]

एक और हदीस में आया है कि जन्नतियों का विशेष गुण न्याय है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"जन्नती तीन होंगे, एक न्यायप्रिय शासक, दूसरे सदक़ा देने वाला, तीसरे रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिए रह्म-दिल, पाक-दामन पत्नी बच्चों वाला।"[4]

---

1. अल-मायदा : 8
2. मुस्लिम :1827
3. बुख़ारी : 6806
4. मुस्लिम : 2865

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में न्याय

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का जीवन उन उच्च नैतिक गुणों का व्यावहारिक रूप था, जिनकी आप (सल्ल०) दावत देते थे। आप (सल्ल०) जिस नैतिक गुण की दावत देते थे, ख़ुद उसके उच्चतम दर्जे पर थे। इन उच्च नैतिक गुणों में एक विशेष गुण न्याय है।

मख़्ज़ूमी महिला की घटना

क़बीला क़ुरैश की एक शाख़ बनी मख़्ज़ूम है मख़ज़ूमी महिला जिसने चोरी की थी, उसके मामला ने क़ुरैश को चिंता में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि इस बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से बात-चीत कौन करे। आख़िर यह तय पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) आप (सल्ल०) को बहुत अज़ीज़ हैं उनके सिवा और कोई इसकी हिम्मत नहीं कर सकता। अतः उसामा ने आप (सल्ल०) से इस बारे में बात की, तो आप (सल्ल०) ने कहा, ऐ उसामा क्या तुम अल्लाह की सीमाओं में से एक सीमा के बारे में मुझ से सिफ़ारिश करते हो। फिर आप (सल्ल०) खड़े हुए और ख़ुतबा दिया जिसमें आप (सल्ल०) ने कहा पिछली बहुत-सी उम्मतें इसलिए हलाक हो गईं कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद स्थापित करते । अल्लाह की क़सम अगर फ़ातिमा बिंत मुहम्मद (सल्ल०) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँ।[1]

इस मख़्ज़ूमी महिला का इस दौर के अरब क़बीले में बड़ा प्रभाव एवं रसूख़ था। बैतुल्लाह के सेवकगण उसी क़बीले के होते थे। वे लोग इसकी गुंजाइश ही नहीं समझते थे कि एक शरीफ़ महिला पर चोरी के अपराध में हाथ काटने की हद जारी हो, आम मजमा में सज़ा लागू की जाए और अरब के सभी क़बीलों में मशहूर हो जाए कि क़ुरैश की एक शरीफ़ मख़्ज़ूमी महिला ने चोरी की और उसका हाथ काटा गया । कितने शर्म की बात है और इस प्रतिष्ठित

1. बुख़ारी : 3475

क़बीले की तौहीन है, इसलिए ये लोग बेचैन होकर ऐसे व्यक्ति की तलाश में थे जो इस मुक़द्दमा के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से बात करे कि सज़ा या तो ख़त्म कर दी जाए या कम कर दी जाए। उन सबकी नज़र अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पसन्दीदा व्यक्तित्व उसामा (रज़ि०) पर पड़ी। उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और मुद्दा रखा। सुनते ही आप (सल्ल०) ग़ुस्से में आ गए और जिस न्याय का पैग़ाम लेकर आप (सल्ल०) उम्मत के पास आए थे, उसी न्याय के विरुद्ध अर्ज़ी को आप (सल्ल०) ने हैरत की निगाह से देखा। इस्लामी न्याय छोटे-बड़े, ग़ुलाम और आक़ा में अंतर नहीं करता, इस महान न्याय व्यवस्था को प्रभावहीन करने के लिए उसामा का हस्तक्षेप और उनका वास्ता बनना अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के लिए हैरतनाक था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बोले :

उसामा अल्लाह की बनाई हुई "हद" के बारे में तुम सिफ़ारशी बनकर आए हो? आप (सल्ल०) इसी जुमले पर न रुके, बल्कि आप (सल्ल०) ने ज़रूरी समझा कि न्याय व्यवस्था और नई सामाजिक व्यवस्था में इसकी अहमियत पर भरपूर रोशनी डाली जाए, क्योंकि यह क़ौमों और सभ्यताओं की अस्तित्व और विकास के बुनियादी सिद्धांतों में से है। अगर न्याय न हो तो क़ौमें और सभ्यताएँ संकट का शिकार हो जाएँ।

क़ौमों की बर्बादी का आरंभ उस समय होता है जब अदालती व्यवस्था संकट का शिकार हो जाती है और साफ़ रहे कि अदालती व्यवस्था अमीरों और ग़रीबों की औलाद या आम जनता के बीच किसी भेदभाव के पक्ष में नहीं है। लोगों के शक और संदेह मिटाने के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बड़ी साफ़ और दोटूक मिसाल पेश की कि अगर मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी भी चोरी करती तो न्याय का क़ानून उस पर भी लागू होता। यह है इस्लाम, यानी क़ानून की नज़र में सब बराबर हैं।

– – – – –

रसूल (सल्ल०) और समानता

पाँचवीं और छठी सदी ईसवी में विश्व समाज आक़ा और ग़ुलाम, काले और गोरे, मर्द और औरत के बीच भेदभाव और अंतर से भरी पड़ी थीं, जिसके नतीजे में हर ओर अत्याचार फैल चुका था। इन भेदभावों को रोकने के लिए मुहम्मद (सल्ल०) दुनिया में आए और खुलकर समानता के बुनियादी सिद्धांतों का ऐलान किया। समाज की इस बुराई को ठीक करने के लिए क़ुरआने-करीम की कई आयतों में इस शिक्षा का उल्लेख मौजूद है।

समानता क़ुरआने-करीम में

मर्द और औरत के बीच विशेष बर्ताव के बारे में क़ुरआने-करीम में आया है कि इनाम और सज़ा के मामले में मर्द और औरत में कोई फ़र्क़ नहीं। दोनों बराबर हैं। अल्लाह ने सूरह अन-नह्ल में कहा :

> "जो व्यक्ति भी नेक कर्म करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते के हो वह मोमिन, उसे हम दुनिया में पाकीज़ा जीवन बसर कराएँगे और (आख़िरत में ऐसे लोगों को उनके इनाम उनके बेहतरीन आमाल के अनुसार देंगे।"[1]

इसी पृष्ठभूमि में सूरह आले-इमरान में है :

> "जवाब में उनके रब ने कहा कि मैं तुम में से किसी का कर्म अकारथ करने वाला नहीं हूँ। चाहे मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे के समकक्ष हो। इसलिए जिन लोगों ने मेरे लिए अपने वतन छोड़े और जो मेरी राह में अपने घरों से निकाले गए और सताए गए और मेरे लिए लड़े और मारे गए उनके सब क़ुसूर मैं माफ़ कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में प्रवेश कर दूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका इनाम है अल्लाह के यहाँ और बेहतरीन इनाम अल्लाह ही के पास है।"[2]

---

1. अन-नह्ल : 97   2. आले-इमरान : 195

मर्द और औरत दोनों जिन्स क़ियामत के रोज़ फ़ितरत और बदला पाने में समान हैसियत के होंगे। सूरह अहज़ाब में है :

"मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करने वाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करने वाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखने वाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखाने वाले पुरुष और विनम्रता दिखाने वाली स्त्रियाँ, सदक़ा (दान) देने वाले पुरुष और सदक़ा देने वाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ–इनके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।"[1]

सारे इन्सानों की असल आदम अलैहिस-सलाम हैं और आदम की असल मिट्टी है कि वह मिट्टी से बनाए गए। अल्लाह ने कहा :

"ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ फैला दीं। अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने आपनी माँगें रखते हो। और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।"[2]

क़ियामत के दिन माल और दौलत, वंश और जाति, डिग्रियाँ और प्रमाण पत्र, सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान, शारीरिक शक्ति और शारीरिक सौंदर्य बदला पाने का आधार नहीं होंगी, बल्कि उसकी कसौटी तो केवल परहेज़गारी होगी। अल्लाह ने कहा :

"ऐ लोगो! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बिलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को

1. अहज़ाब : 35   2. अल-निसा : 1

पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।"[1]

समानता हदीसों में

एक ऐसे समाज में जो चौतरफ़ा भेदभाव और अंतर की बुनियाद पर स्थापित था उसमें समानता के बुनियादी उसूल की स्थापना के काम में नबी (सल्ल०) को सख़्त विरोध का सामना करना पड़ रहा था, लेकिन आप (सल्ल०) बख़ूबी जानते थे कि समाज की कामयाबी और नई सभ्यता का अस्तित्व नस्लपरस्ती की बुनियादों को ढहाए बिना नहीं हो सकता। इसके बाद ही समाज के विभिन्न वर्गों में समानता की सोच पैदा हो सकती है। आप (सल्ल०) ने कहा :

"लोगो यक़ीनन अल्लाह ने तुमसे जाहिलियत के गौरव और घमंड को दूर कर दिया है जो तुम बाप-दादों पर करते थे। अब दो किस्म के लोग हैं, परहेज़गार और अवज्ञकारी। सभी लोग आदम की औलाद हैं और आदम की अस्ल मिट्टी है, लोग पूर्वजों पर गर्व करना छोड़ दें, वर्ना वे अल्लाह की निगाह में एक हक़ीर कीड़े से ज़्यादा ज़लील होंगे।"[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में समानता

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जो करते और जिन चीज़ों का आदेश देते उनको पहले अपने व्यावहारिक जीवन का हिस्सा बनाते। आप (सल्ल०) के दिन-प्रतिदिन जीवन का एक पन्ना बताता है कि आप (सल्ल०) से सम्बन्ध रखने वाले दो लोगों में मतभेद हुआ। उनमें एक काले बिलाल हब्शी (रज़ि०) थे और एक सफ़ेद फ़ाम अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) अरब के बड़े ख़ानदान से सम्बन्ध रखते थे। हज़रत अबूज़र (रज़ि०) को हज़रत बिलाल (रज़ि०) पर ग़ुस्सा आ गया और सख़्त और तेज़ स्वर में उन्हें कह दिया, ऐ काली औरत के बेटे बिलाल (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) के पास नालिश कर दी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अबूज़र (रज़ि०) से पूछा : क्या तुमने इसे माँ का ताना दिया है?

---

1. अल-हुजुरात : 13
2. अबू-दाऊद : 4452, अहमद : 8381, अल-बानी ने हसन कहा।

तुम्हारे अन्दर अभी जाहिलियत का अंश बाक़ी है। तुम्हारे भाई तुम्हारे सेवक हैं। अल्लाह ने इनको तुम्हारा अधीन बनाया। तो याद रखो, जिसका अधीन उसका भाई हो तो जो ख़ुद खाए वही उसे खिलाए, जो ख़ुद पहने वही उसे पहनाए और उसकी क्षमता से ज़्यादा उससे काम न ले, अगर भारी काम कराना ही पड़े तो उसके साथ लग जाओ।[1] इस घटना में नबी अकरम (सल्ल०) ने अबूज़र (रज़ि०) को याद दिलाया कि जाहिली दौर में नस्ली भेदभाव और साम्प्रदायिकता की सोच रची-बसी थी। उसके प्रभावों का एहसास हो, ताकि उनको अपने क़ुसूर की गंभीरता का एहसास हो जाए।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अरफ़ात के मिंबर से जो आख़िरी ख़ुतबा दिया उसमें समाज के अस्तित्व की बुनियादों का उल्लेख करते हुए कहा, "ऐ लोगो बेशक तुम्हारा रब एक है, और तुम्हारे पूर्वज एक, सुन लो किसी अरबी को किसी अजमी पर या अजमी को अरबी पर, गोरे को काले पर, काले को गोरे पर वरीयता प्राप्त नहीं है। वरीयता का आधार तक़्वा है।"[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आख़िरत के सफ़र से पहले अवामी मुलाक़ात में समानता और समानता का ऐलान कर रहे हैं । यह सबसे बड़ी सभा और सबसे बड़ी असेंबली है। इसमें अरब प्रायद्वीप के सभी क़बीले जमा हैं और इस्लाम की बुनियादी शिक्षाएँ सुनने के लिए कान लगाए हुए हैं। इस्लाम का सबसे अहम गुण समानता है। रंग, नस्ल का कोई भेदभाव नहीं है, बल्कि अंतर का आधार अल्लाह के बताए रास्ते को अपनाना और इस दीन की बुनियादी शिक्षाओं का पालन है। समानता के उसूल के आगे रंग और वंश, सामाजिक पद और स्थान, उपाधि और आदाब ढेर होकर रह जाते हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"कर्म के ढीलेपन पर वंश की तेज़ी ग़ालिब नहीं आ सकती।"[3]

– – – – –

1. बुख़ारी : 30
2. बैहक़ी : 5/37
3. मुस्लिम : 2699

रसूल (सल्ल०) और सम्मान

रसूल भी इन्सान ही होते हैं, अल्लाह उनको चुनते हैं, वह मानव ख़ूबियों से माला-माल होते हैं, वे किसी मानव ऐब के शिकार नहीं होते कि उनकी दावत क़ुबूल करने में किसी को झिझक हो। यह सच्चाई है कि किसी इन्सान से ख़ुद को बरतर या किसी मानव वर्ग से बेहतर समझना नबी (सल्ल०) के आदर्श से मेल नहीं खाता, वह इसलिए भी कि घमंड और स्वाभिमान वाले व्यक्तित्व की बात को लोग क़ुबूल नहीं करते और दावत के मामले में यह बात बड़ी रुकावट बनती है। इसलिए मुहम्मद (सल्ल०) के महान व्यक्तित्व में तवाज़ो का गुण बहुत उभरा हुआ है।

क़ुरआन में सम्मान

क़ुरआन ने घमंड और अभिमान से रोका है और तवाज़ो व ख़ाकसारी का आदेश दिया है :

> "आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न धरती में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न बिगाड़। परिणाम तो अन्ततः डर रखने वालों के पक्ष में है।"[1]

> "और धरती में अकड़कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो।"[2]

> "और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतराकर चल। निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारने वाले को पसन्द नहीं करता।"[3]

सम्मान की शिक्षा

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) तवाज़ो और इनकिसारी का व्यावहारिक

1. अल-क़सस : 83 2. बनी-इसराईल : 37 3. लुक़्मान : 18

नमूना थे। दूसरों को भी अच्छे नैतिक आचरण की शिक्षा देते और ऐसी ख़ूबियों को अपनाने का आदेश देते कि अपनाने वाला लोगों में अच्छी निगाह से देखा जाए और लोग उसे पसन्द करें। आप (सल्ल०) ने कहा :

"अल्लाह-तआला ने मुझ पर वह्य भेजी है कि तवाज़ो अपनाओ, और कोई किसी पर गर्व न करे और न कोई किसी पर अत्याचार करे।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"सदक़े ने माल में कभी कोई कमी नहीं की और माफ़ करने से अल्लाह बंदे को इज़्ज़त ही में बढ़ाता है।"[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बड़ाई और घमंड के इज़हार से मना किया:

"जिसके दिल में कण बराबर घमंड होगा वह जन्नत में न जाएगा। एक व्यक्ति ने मालूम किया कि आदमी पसन्द करता है कि इसके कपड़े और जूते अच्छे हों। आप (सल्ल०) ने कहा : अल्लाह सुन्दर है और वह सौंदर्य को पसन्द करता है, घमंड का मतलब है कि सत्य को हठधर्मी के साथ न मानना और लोगों को नीच समझना।"[3]

इसके बाद आप (सल्ल०) ने जहन्नमियों की तीन बड़ी विशेषताएँ उल्लेख कीं। आप (सल्ल०) ने कहा :

"क्या मैं तुमको जहन्नमियों की ख़बर न दूँ? हर बदमिज़ाज, उद्दंड और अहंकारी व्यक्ति जहन्नमी है।"[4]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में सम्मान

आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी तवाज़ो व इनकिसारी की जीती-जागती मिसाल थी । आम लोग हों, बच्चे, महिलाएँ और ग़ुलाम और नौकर-चाकर हों, बड़े हों, छोटे हों सबके साथ व्यवहार में तवाज़ो की मिठास और इनकिसारी की नर्मी होती।

तवाज़ो के मामले में आप (सल्ल०) के घटनाएँ ऐसे अजीब और हैरतनाक

---

1. मुस्लिम : 2865
2. मुस्लिम : 2588
3. मुस्लिम : 91
4. बुख़ारी : 4918, मुस्लिम : 2853

हैं कि आज के ज़माने की कोई महत्वपूर्ण दीनी और दुनियवी हैसियत के व्यक्तित्व के सम्बन्ध से पेश आना मुश्किल है। आप (सल्ल०) का हाल यह था कि छोटी बच्चियाँ आप (सल्ल०) का हाथ पकड़ कर दौड़ ने लगतीं। आप (सल्ल०) उनसे अपना हाथ छुड़ाए बिना उनके साथ दौड़ने लगते यहाँ तक कि वे ख़ुद छोड़ देतीं। आप (सल्ल०) की पवित्र पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अनहा आप (सल्ल०) की घरेलू व्यस्तता का उल्लेख करती हैं। वे हैं : घर के लोगों के काम कर दिया करते थे। नमाज़ का समय हो जाता तो नमाज़ के लिए चले जाते।[1]

इस बारे में ईमान वालों की माँ सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) आगे कहती हैं जैसे आम मर्द अपने घर में काम करते हैं, वैसे ही आप (सल्ल०) घरेलू काम कर लेते थे, जूते-चप्पल ठीक कर लेते थे, कपड़े में पैवंद लगाते और रफ़ू कर लेते थे। आप (सल्ल०) ज़मीन पर बैठ जाते और उसी पर खा लेते, ग़ुलामों और सेवकों के साथ खाते, गधे की सवारी करते (अरब समाज में गधे की सवारी करना आम था।) आप (सल्ल०) बच्चों को सलाम करते और बड़े-बूढ़ों की बातें ग़ौर से सुनते।

– – – – –

1. बुख़ारी : 418

रसूल (सल्ल०) और महिलाएँ

जिस दौर में मुहम्मद (सल्ल०) नबी बनाए गए उस दौर में महिलाएँ हद दर्जा पीड़ित थीं और उनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। उनके साथ बुरा सुलूक किया जाता था, उनके साथ धांधली और बड़ा अत्याचार किया जाता था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिसालत से पहले महिलाएँ जिन अत्याचार का शिकार थीं उनकी कुछ सूरतों ये थीं :

(1) मर्दों के नज़दीक महिलाएँ एक तरह का सामान थीं, वे सामान और मवेशी की तरह उन पर मालिकाना अधिकार रखते और जिस तरह चाहते उनका इस्तेमाल करते।

(2) औरत को विरासत में हिस्सा नहीं मिलता था।

(3) बीवियों की संख्या या तलाक़ की संख्या में औरतों का कोई हस्तक्षेप नहीं था। मर्द जितनी शादियाँ चाहता करता और उसी तरह बार-बार तलाक़ देता।

(4) अरबों के यहाँ जब बाप मर जाता तो बड़ा बेटा सौतेली माँ का दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा हक़दार होता और उसे माल और दूसरे मामलात की तरह विरासत में लेता।

(5) उस दौर में औरत ज़ात पर अत्याचार की सबसे बुरी शक्ल बच्चियों को ज़िंदा दफ़्न करना था, क्योंकि वे अपने रुढ़िवादी मान्यता के अनुसार दामादी को शर्मनाक समझते थे। पाँचवीं और छठी सदी ईसवी में यूनानी, रोमन, भारतीय और चीनी की सभ्यताओं का हाल भी अरब से बेहतर न था, बल्कि उससे भी बुरा था।

उन हालात में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को नुबूवत मिली ताकि औरतों

के अधिकारों की बहाली करें और उस पर ढाए जाने वाले सामाजिक, घरेलू और आर्थिक अत्याचारों को दूर करें और उसकी खोई प्रतिष्ठा वापस दिलाएँ, ताकि वह मर्दों के साथ समाज निर्माण में हिस्सा ले सके।

आधुनिक युग में ब्रिटेन में पत्नी को बेच देने का रिवाज है और यह तरीक़ा तलाक़ का विकल्प था, क्योंकि आम लोगों के सम्बन्ध से तलाक़ एक ऐसी चीज़ है, जिसको लागू करना उनके लिए कठिन और नामुमकिन है। ब्रिटेन में तलाक़ केवल मालदार घरानों में ही मुम्किन है। पत्नी से अलग होने की यह रस्म सत्रहवीं सदी के अंत में शुरू हुई। इसकी शक्ल यह होती है कि शादी से परेशान जोड़े अवधि तय करते । पति एक पट्टा पत्नी की गर्दन या कलाई या कमर में बांध कर व्यापार सामग्री की तरह पेश करता। लोग बोली लगाते जो ज़्यादा क़ीमत लगाता उसके हवाले कर दी जाती ।[1]

पाँचवें सदी ईसवी में एक मीटिंग हुई जिसका मौज़ू था औरत केवल शरीर है या इसमें रूह भी है? बहस और संवाद के बाद तय पाया कि "औरत जहन्नम से नजात पाने वाली रूह से ख़ाली है।" 1958 मैं फ़्रांस में एक कान्फ्रेंस बुलाई गई जिसमें यह सुझाव पास हुआ कि औरत इन्सान तो है लेकिन केवल मर्दों की सेवा के लिए पैदा की गई है।[2]

क़ुरआन में औरत

क़ुरआने-करीम ने औरत का ख़ास ख़याल रखा और इसके नाम से एक सूरह को ख़ास किया है, सूरह 'निसा'। इसी तरह दूसरी सूरह मरयम के नाम पर रखी गई। क़ुरआन ने औरत के हालात और समस्याओं पर कई सूरतों में बहस की है। जैसे सूरह तलाक़, सूरह बक़रा, सूरह नूर, सूरह अहज़ाब, सूरह मुम्तहिना और सूरह तहरीम। इसके अलावा क़ुरआन ने जाहिली दौर में औरत को ज़लील और हक़ीर समझने पर सख़्त पकड़ की है। जैसे बच्ची को ज़िंदा दफ़्न किया जाना। क़ुरआन ने कहा :

"और जब जीवित गाड़ी गई लड़की से पूछा जाएगा, कि उसकी

1. ar.wikipedia.org.wiki (wife sale)
2. Sabaee M. women between lows and juris / prudence P.13-22,

हत्या किस गुनाह के कारण की गई।"[1]

क़ुरआन ने अंधकार युग के उस बाप की सोच पर पकड़ की है जो बच्ची के जन्म पर दुख और शर्म से ज़मीन में धँसा जाता है।

"और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है। जो शुभ सूचना उसे दी गई वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे। देखो, कितना बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं!"[2]

क़ुरआन ने औलाद की, चाहे बच्चा हो या बच्ची, भूख और ग़रीबी की आशंका से हत्या करने से मना किया है। कहा :

"कह दो, आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं: यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी सन्तान की हत्या न करो; हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि हक़ के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं, जिनकी ताकीद उसने तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो।"[3]

इसी तरह क़ुरआन ने कर्म और इनाम के सिलसिले में मर्द और औरत को समान ठहराया।

"ऐ लोगो! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बिलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित

1. अत-तकवीर : 8-9 2. अन-नह्ल : 58, 59 3. अल-अनआम : 151

वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।"[1]

क़ुरआन ने मर्द और औरत के बीच एक-दूसरे के लिए पूर्ति होने का उल्लेख किया और जीवन इस आपसी बर्ताव के बिना सीधी राह पर स्थापित नहीं रहता। क़ुरआन ने हर मैदान के बारे में औरत की ज़िम्मेदारीयों का उल्लेख किया और उसे पूर्ण रूप दिया।

"किन्तु जो अच्छे कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमान वाला है तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश होंगे। और उनका हक़ रत्ती भर भी मारा नहीं जाएगा।"[2]

अल्लाह ने क़ियामत के दिन मिलने वाले बदले के बारे में मर्द और औरत के बीच अंतर नहीं रखा है। कहा :

"मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और, अल्लाह की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का; जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।"[3]

इसी उसूल का उल्लेख सूरह अहज़ाब में किया। कहा :

"मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखनेवाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखानेवाले पुरुष और विनम्रता दिखानेवाली स्त्रियाँ, सदक़ा (दान) देनेवाले पुरुष और सदक़ा देनेवाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिक याद

1. अल-हुजुरात : 13 2. अन-निसा : 124 3. अत-तौबा : 72

करनेवाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ–इनके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।"[1]

क़ियामत के दिन अल्लाह की नेमतों से फ़ायदा उठाने में मर्द और औरत दोनों शरीक होंगे। कहा :

"जिस दिन तुम मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे-आगे दौड़ रहा है और उनके दाएँ हाथ में है। (कहा जाएगा,) आज शुभ सूचना है तुम्हारे लिए ऐसी जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें सदैव रहना है। वही बड़ी सफलता है।"[2]

हदीसों में औरतों का उल्लेख

मुहम्मद (सल्ल०) औरतों के मुद्दों को विशेष महत्व देते थे। उस समय के समाज में औरत की जो तस्वीर बिगाड़ दी गई थी उसे ठीक करने की कोशिश की। यह वह समाज था जो औरत का अपमान करने का आदी था। औरतों के साथ मानवता से गिरा हुआ रवैया अपनाता था। इसी लिए आप (सल्ल०) ने औरतों की समस्या को हल के लिए दो बातों पर ख़ास ध्यान दिया। एक समाज की इस ओर मार्गदर्शन करना कि वह औरतों के साथ अपने रवैये को बदले, दूसरे, ख़ुद औरतों को अपनी क्षमताओं के निखारने की ओर ध्यान दिलाना, और अपने अधिकारों और दायित्वों से परिचित होने पर ध्यान दिलाना ताकि औरत जीवन के तक़ाज़ों की पूर्ति में मर्दों के साथ शरीक हो सके।

औरत के विषय में ताकीद

आप (सल्ल०) ने औरतों के बारे में समाज को सख़्त ताकीद की है, क्योंकि वह माँ, बहन, पत्नी, बेटी, फूफी, ख़ाला, दादी, नानी होती है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया :

"अल्लाह औरतों के साथ सद्व्यवहार की ताकीद करते हैं, क्योंकि वे माएँ, बेटियाँ, ख़ालाएँ हैं। जो कोई अहले-किताब किसी औरत से

1. अल-अहज़ाब : 35 2. अल-हदीद : 13

शादी करता है, वे बंधन में बंध जाते हैं फिर दोनों एक दूसरे से जुदा नहीं होते यहाँ तक बूढ़े होकर मर जाते हैं।"[1]

आप (सल्ल०) ने आख़िरी हज के मौक़ा पर अरफ़ात के मिंबर से जो ख़ुतबा दिया उसमें यह भी ताकीद शामिल थी :

"औरतों के साथ सद्व्यवहार करो, क्योंकि तुम उनके ज़िम्मेदार हो।"[2]

दुनिया की सबसे सुन्दर चीज़

एक रिवायत में है कि औरत दुनिया की सबसे सुन्दर चीज़ है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया :

"दुनिया फ़ायदा उठाने की चीज़ है और दुनिया की बेहतरीन चीज़ अच्छी नेक औरत है।"[3]

आप (सल्ल०) ने औरत को दुनिया की बड़ी ख़ुशनसीबी की एक क़िस्म क़रार दिया है।

"ख़ुशनसीबी की चार चीज़ें हैं एक औरत, कुशादा घर, अच्छा पड़ोसी और आरामदायक सवारी।"

पति पर पत्नी का अधिकार

आप (सल्ल०) ने यह भी साफ़ कह दिया कि पति पर पत्नी के क्या अधिकार हैं। जब इस बारे में आप (सल्ल०) से पूछा गया, तो आपने कहा :

"जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब पहनो तो उसे भी पहनाओ, उले बुरा-भला न कहो, घर के अलावा कहीं उसे न छोड़ो।"[4]

औरत पर अत्याचार न करो

आप (सल्ल०) ने मर्दों को इस बात से रोका है कि वे औरतों को अत्याचार का निशाना बनाएँ। और यह ताकीद की है कि विवाद होने पर औरत की अच्छी

---

1. तबरानी : 2871 2. इब्ने-माजा : 1513
3. मुस्लिम : 1467 4. अबू दाऊद : 2142

बातें और ख़ूबियाँ याद की जाएँ।

"कोई मुसलमान मर्द किसी मुसलमान औरत से नफ़रत न करे। अगर उसकी कोई आदत बुरी लगती है तो इसकी कोई आदत उसको पसन्द भी होगी।"[1]

पत्नी के साथ बेहतर रहो

आप (सल्ल०) ने मर्दों के सामने यह बात साफ़-साफ़ कह दी कि जो पत्नीयों के साथ बेहतर बर्ताव करे, अच्छे व्यवहार से पेश आए वह बेहतरीन मर्द है। कहा :

"ईमान के आधार पर सच्चा ईमानवाला वह है जो नैतिकता में सबसे बेहतर हो और तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपनी औरतों के अधिकार चुकाने में सबसे बेहतर हो।"[2]

औरतों पर शक न करो

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पतियों को इस बात से मना किया है कि वे औरतों (पत्नियों) को शक की निगाह से देखें। आप ने बद-गुमानी से भी रोका है। वैवाहिक जीवन में आने वाले मामलात जैसे टोह में रहने और छोटी छोटी ग़लतियों की तलाश में रहने से भी मना किया है।

"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इससे मना किया है कि कोई व्यक्ति रात को इस नीयत से अपने घर आए कि पत्नी पर किसी तरह का इल्ज़ाम लगाए या उसकी ग़लतियों को पकड़े।"[3]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में औरत

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने घर वालों के साथ नरमी मुहब्बत और न्याय के साथ रहते और जीवन के हर मोड़ पर मददगार साबित होते।

पहली पवित्र पतनी के साथ आपके हालात

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर सबसे पहले ईमान लाने वाली हस्ती एक प्रतिष्ठित महिला हैं। वे आपकी पहली पवित्र पत्नी सय्यदा ख़दीजा हैं, जिनको

1. मुस्लिम : 1469 2. तिर्मिज़ी : 1162 3. बुख़ारी : 1801, मुस्लिम : 715

आप (सल्ल०) के उच्च नैतिक गुण भा गए और उन्होंने अपनी दौलत को व्यापार में लगाने के लिए आप (सल्ल०) से दरख़ास्त की। मुहम्मद जब व्यापारिक सफ़र पर निकले तो ख़दीजा ने अपने सेवक मैसरा को साथ कर दिया। वापस आकर मैसरा ने आप (सल्ल०) के नैतिक गुणों, आप (सल्ल०) के आचरण और आप (सल्ल०) की अमानतदारी का जो आँखों देखा हाल बताया तो ख़दीजा के मन में आप (सल्ल०) को अपना पति बनाने की इच्छा होने लगी। उन्होंने अपनी सहेली नफ़ीसा को पैग़ाम देने के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास भेजा। आप (सल्ल०) तैयार हो गए और दोनों शादी के रिश्ते में बंध गए।

आप (सल्ल०) हिरा की गुफा में ध्यानमग्न थे कि वह्य उतरती है। आप (सल्ल०) पहाड़ की चोटी पर बिल्कुल अकेले थे। जिबरील के साथ पहाड़ से उतरते हुए आप (सल्ल०) पर रोब तारी था, ख़ासतौर से इसलिए कि जिबरील को असली शक्ल में देखा था, आप (सल्ल०) तेज़-तर पांवों से हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के पास आए और उनसे कहा कि मुझे उढ़ाओ, मुझे उढ़ाओ! इस तरह से दो सूरतें उतरीं, 'मुज़्ज़म्मिल' और 'मुद्दस्सिर', जो नबी (सल्ल०) के इस माजरे को बयान करती हैं।

इस नाज़ुक घड़ी में सय्यदा ख़दीजा (रज़ि०) ने क्या ख़ूब तरीक़ा अपनाया। आप (सल्ल०) की मदद और दिल-जूई के लिए आप (सल्ल०) के साथ खड़ी हो गईं। उस मंज़र को इमाम बुख़ारी ने नक़्ल किया है। इस हाल में हिरा की गुफा से वापस हुए कि आप (सल्ल०) का दिल इस अनोखी घटना से काँप रहा था। आप (सल्ल०) ख़दीजा के हाँ आए और कहा मुझे कम्बल ओढ़ा दो। इन्होंने कम्बल ओढ़ा दिया। जब डर जाता रहा तो आप (सल्ल०) ने ख़दीजा को घटना सुनायी और कहने लगे कि मुझे जान का ख़तरा है। ख़दीजा (रज़ि०) ने ढारस बंधाई और कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं, अल्लाह आप (सल्ल०) को कभी रुस्वा नहीं करेगा। आप (सल्ल०) सबको लेकर चलते हैं, सच बोलते हैं, बेकसों का बोझ अपने सर पर रखते हैं, मेहमान-नवाज़ी करते हैं, मुश्किल समय में आप (सल्ल०) सत्य का साथ देते हैं। फिर वे आप (सल्ल०) को वर्क़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं जो जाहिली दौर में ईसाई हो गए थे।[1]

---

1. फ़त्हुल-बारी : 6581

हज़रत ख़दीजा को आपसे मुहब्बत थी, इसलिए उन्होंने अपने माल, अपनी मुहब्बत और आपकी दिलचस्पियों मैं ख़ुद को शरीक कर के आपकी मदद की। आपके विशेष गुण को बयान कर के आपके नैतिक स्थान को बुलंद किया। आपको अपने जज़्बात से परिचित किया कि जिस हस्ती के अन्दर ये गुण हों, उस हस्ती को अल्लाह कभी रुस्वा नहीं करेगा। इसके अलावा इन्होंने यह भी किया कि विद्वान व्यक्ति के पास लेकर गईं, ताकि आपके साथ जो घटना घटी थी उसके राज़ और सच्चाई को जान सकें। फिर जब यह साफ़ हो गया कि आप तो नबी हैं तो आप पर ईमान ले आईं। इसके बाद आजीवन आप उनकी मुहब्बत में गिगति रहे। इसी लिए आपको यह बात पसन्द नहीं थी कि कोई उनकी बुराई करे। उनकी मौत के बाद भी उनकी सहेलीयों के पास खाने पीने की चीज़ें भेजा करते थे, ताकि उनसे मुहब्बत का हक़ अदा होता रहे।

हज़रत आइशा (रज़ि०) से ताल्लुक़

आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) वह हैं जिनके बारे में कई हदीसों में आपने साफ़ कहा कि वह आपको सबसे ज़्यादा महबूब हैं। रसूल की हैसियत से अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद आप कुछ समय निकाल कर हज़रत आइशा की दिलदारी करते। उनसे मज़ाक़ और दिल-लगी करते थे। आप उस मुहब्बत का इज़हार भी करते थे ताकि यह मुहब्बत उन पर भी ज़ाहिर हो। हज़रत आइशा कहती हैं : “मैं हड्डी चूसती थी और इसके बावजूद कि मैं हैज़ की हालत में होती थी, वह हड्डी आपको पेश करती तो आप उस को उसी जगह से चूसते जहाँ मैंने इस पर अपना मुँह लगाया था। मैं पीने की कोई चीज़ पीती, फिर वह आपको पेश करती तो आप उसी जगह मुँह लगा कर पीते जहाँ से मैंने पिया था।[1]

वे यह भी कहती हैं कि आप (सल्ल०) मुझे या आइश कह कर पुकारते। एक बार कहा, ऐ आइशा, जिबरईल आए हैं और सलाम पेश कर रहे हैं। हज़रत आइशा ने ‘वअलैहिस-सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातुह’ से जवाब दिया।[2]

आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं कि आपकी दिल-लगी बहुत मज़ा देती। जब नहाना होता तो आप पानी पहले ले लेते, मैं कहती मेरे लिए भी बचा दीजिए, मेरे लिए भी बचा दीजिए।[3]

---

1. अबू-दाऊद : 259 2. बुख़ारी : 6201 3. मुस्लिम : 321

आप (सल्ल०) सफ़र में होते आइशा (रज़ि०) के साथ दौड़ लगाते, जब वह कमउम्र दुबली-पतली थीं तो एक-बार दौड़ के मुक़ाबले में वे आगे निकल गईं।

एक सफ़र में आप (सल्ल०) के साथ हज़रत आइशा (रज़ि०) थीं, आप (सल्ल०) ने सहाबा से आगे बढ़ने के लिए कहा। वे आगे बढ़ गए। फिर आप (सल्ल०) ने कहा आओ, दौड़ का मुक़ाबला करें। मैं आगे बढ़ गई। एक ज़माने के बाद दुबारा सफ़र में आप (सल्ल०) के साथ थी, आप (सल्ल०) ने सहाबा से कहा आगे बढ़िए वे बढ़ गए। फिर आप (सल्ल०) ने कहा आओ, दौड़ का मुक़ाबला करें। मैं पिछली घटना भूल चुकी थी और अब मेरा शरीर भर गया था। मैंने अर्ज़ किया या अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इस हालत में कैसे मुक़ाबले में हिस्सा लूँ। आप (सल्ल०) ने कहा तुम ज़रूर दौड़ोगी। हम दौड़े आप (सल्ल०) जीत गए तो कहा मेरा इस बार जीतना तुम्हारे उस बार जीतने का बदला है।[1]

हज़रत आइशा (रज़ि०) इस बात पर गर्व किया करती थीं कि उनके घर में आप (सल्ल०) ने आख़िरी सांस ली। वे कहती हैं : "मुझे पर अल्लाह का बड़ा एहसान है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मेरे घर में मेरी बारी के दिन और मेरी गर्दन और सीने के बीच सर रखकर मौत पाई। और मौत के समय आप (सल्ल०) के थूक से मेरा थूक मिल गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का आख़िरी समय था, जब अब्दुर्रहमान (रज़ि०) आ गए थे, उनके हाथ में दातुन थी और मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सहारा दिए हुए थी, मैंने देखा कि आप (सल्ल०) अब्दुर्रहमान की ओर देख रहे हैं, आप (सल्ल०) को दातुन पसन्द थी, मैंने महसूस कर लिया और पूछने लगी, आपको दूँ, आप (सल्ल०) ने सर से इशारा किया। मैंने दातुन लेकर आप (सल्ल०) को दी। आप (सल्ल०) के लिए दातुन करना मुश्किल था। मैंने कहा, नर्म कर दूँ? आपने इशारा किया, ज़रूर, मैंने अपने दाँतों से उसे नर्म किया और फिर आपने वह दातुन की।[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में औरतों के साथ पत्नी, बहन और बेटी की हैसियत से बड़ी दिलचस्प, सुन्दर और सबक़-आमोज़ घटनाएँ और दृश्य मौजूद हैं, जिनका उल्लेख आगे के पन्नों में आएगा।

– – – – –

1. अबू-दाऊद : 2578 2. बुख़ारी : 4449

रसूल (सल्ल०) और माँ-बाप

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अनाथ पैदा हुए थे। आप (सल्ल०) के पिता अब्दुल्लाह की मौत उस समय हुई जब आप (सल्ल०) की माँ आमना गर्भ से थीं। आप (सल्ल०) की माँ का इंतिक़ाल उस समय हुआ जब आप (सल्ल०) छः साल के थे। आप (सल्ल०) ने अपने माँ-बाप को नहीं पाया कि हम यह देख सकते कि आपका व्यवहार माँ-बाप के साथ किस तरह का था। अलबत्ता आप (सल्ल०) माँ की क़ब्र पर हाज़िरी देते, और आप (सल्ल०) की आँखें भीगी रहतीं। आप (सल्ल०) ने अपनी शिक्षाओं में माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार पर बहुत बल दिया।

माँ-बाप के बारे में क़ुरआन का आदेश

क़ुरआने-करीम की ऐसी बहुत-सी आयतें हैं जिनमें रब्बे-कायनात ने औलाद को माँ-बाप की आज्ञापालन का आदेश दिया है। अल्लाह के रसूल ने अपने साथियों की तर्बियत ऐसे सिद्धांतों पर की जिनकी गिनती कामयाब, स्थायी और प्रभावशाली घराने के निर्माण में होती है। जब घर-घराने के लोगों में स्नेह और सम्मान स्थापित रहता है, तो बच्चों का स्वाभाविक विकास होता है, बेचैनी की विभिन्न शक्लों और उलझनों का दौर दूर तक गुज़र नहीं होता। सूरह बनी-इसराईल में नैतिकता की बारीकियों पर रोशनी डाली गई है, जिनका बच्चों के लिए माँ-बाप के प्रति बरतना ज़रूरी है। अल्लाह का आदेश है :

> "तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उँह' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात करो। और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो, "मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"[1]

1. बनी-इसराईल : 23-24

क़ुरआन ने अल्लाह की इबादत के साथ माँ-बाप की आज्ञापालन का उल्लेख किया है। अल्लाह ने कहा :

> "अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।[1]

क़ुरआन ने इन आज़माइशों का उल्लेख किया है जो ईसा अलैहिस-सलाम को अल्लाह की ओर से पेश आईं। इसी मामले में ईसा अलैहिस-सलाम का अपनी माँ के साथ सद्व्यवहार और आज्ञापालन का उल्लेख भी किया, कहा :

> "उसने कहा, "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया ।और मुझे बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। और अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और बेनसीब नहीं बनाया। सलाम है मुझपर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूँ और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊँ!"[2]

माँ-बाप के बारे में हदीसें

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा और सभी मुसलमानों को अपने विभिन्न आदेशों में माँ-बाप के आज्ञापालन की ताकीद की है। एक व्यक्ति ने आकर आपसे पूछा मैं सबसे ज़्यादा अच्छे बर्ताव, नरमी, भलाई और आज्ञापालन का हक़दार किसे समझूँ? मेरे सद्व्यवहार का सबसे ज़्यादा हक़रदार कौन है? आपने कहा तुम्हारी माँ। उसने पूछा उसके बाद कौन? आपने कहा तुम्हारी माँ । उसने पूछा फिर कौन? आपने कहा तुम्हारी माँ । उसने पूछा फिर कौन? तो आपने जवाब दिया तुम्हारे पिता ।[3]

---

1. अन-निसा : 36 2. मरयम : 30-33 3. बुख़ारी : 5971, मुस्लिम : 2548

आपने यह भी कहा कि माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार और उनकी ताबेदारी जन्नत के उच्च श्रेणी की प्राप्ति के महत्वपूर्ण साधनों में से है। आपने कहा :

"बाप जन्नत का दरमयानी दरवाज़ा है चाहे उसे खो दो, चाहे सुरक्षित रखो।"[1]

आपने दोटूक अंदाज़ में कहा कि तुम माँ-बाप के साथ जितनी चाहो सद्व्यवहार कर लो लेकिन उनका अधिकार चुका नहीं सकते। हाँ एक सूरत है कि औलाद माँ बाप को किसी के हाथ में गुलामी की शक्ल में पाए तो ख़रीद कर उनको आज़ाद कर दे। आप कहते हैं :

"कोई औलाद पिता का बदला नहीं चुका सकती बस एक सूरत है कि बाप को को ग़ुलाम पाए तो ख़रीद कर आज़ाद कर दे।"[2]

एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि सारे गुनाहों की सज़ा अल्लाह टाल देते हैं कि आख़िरत में हिसाब होगा लेकिन तीन गुनाहों की सज़ा अल्लाह दुनिया में ही दे देते हैं, उनमें से एक माँ-बाप की नाफ़रमानी है। कहा :

"सभी गुनाहों में से अल्लाह जिसको चाहता है क़ियामत तक के लिए (उसके हिसाब किताब को) टाल देता है, अलबत्ता बग़ावत, माँ-बाप की नाफ़रमानी या रिश्तों को तोड़ने वाले का हिसाब उसकी मौत से पहले दुनिया में ही चुका देता है।"[3]

अल्लाह ने बंदों से दुआ क़ुबूल करने का वाअदा किया है। इसके बावजूद कुछ दुआएं ऐसी भी हैं कि अल्लाह ने उन्हें बहुत जल्द क़ुबूल करने की ज़मानत दी है। उनमें से एक माँ-बाप की बददुआ औलाद के पक्ष में है जब वह उनके साथ बदसुलूकी कर रहे हों। आप कहते हैं :

"तीन दुआओं की क़ुबूलीयत में कोई शक नहीं है। मज़लूम की बददुआ, मुसाफ़िर की दुआ और औलाद के लिए पिता की बद्दुआ।"[4]

ऐसी रिवायात बहुत ज़्यादा हैं जिनमें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने औलाद को माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने की हिदायत दी है।

---

1. तिर्मिज़ी :1900 2. अबू-दाऊद : 1537
3. अल-अदबुल मुफ़रद : 459 4. अल-अदबुल मुफ़रद : 372

रसूल (सल्ल०) और बच्चे

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बच्चों से ख़ास मुहब्बत रखते थे। आप बच्चों के साथ नर्मी, हमदर्दी और स्नेह के साथ पेश आते। आप बच्चों की प्रोत्साहन करते। आप बच्चों की बुनियादी जरूरतों का ख़याल रखते। आपने उम्मत को बच्चों के बारे में जो हिदायतें दी हैं उनमें ये सभी पहलू महत्वपूर्ण हैं। आप बच्चों के साथ इन हिदायतों पर ख़ुद भी अमल करते, वे बच्चे अपने हों, जैसे नवासे या दोस्तों के या आम बच्चे हों ,सब के साथ प्यार करते।

जिस नज़रिये को डॉक्टर विलियम ग्लासर आदि ने बच्चों के बारे में पेश किया है। उस का एहसास आपने चौदह सौ साल पहले कर लिया था। वह बच्चों की बुनियादी ज़रूरत का नज़रिया है जिसका उल्लेख आपकी शिक्षाओं में मिलता है और आप बच्चों के साथ जिस तरह पेश आते वह व्यवहारिक रवैया इस नज़रिये की पुष्टि करता है। वह बुनियादी ज़रूरतें हैं। मुहब्बत की ज़रूरत, शक्ति की ज़रूरत खेल की ज़रूरत और परवरिश की ज़रूरत और इन जैसी बुनियादी ज़रूरतें। इस बारे में आपके जीवन के कुछ रोशन पहलू बयान किए जा रहे हैं।

(1) बच्चों से दिल-लगी और हंसी-मज़ाक़

मदीना मुनव्वरा में एक बच्चा था, जिसका नाम ज़ैद बिन सहल था, जिसकी उम्र तीन साल से ज़्यादा न थी। उसके पास एक चिड़िया थी जिससे वह खेलता था। अल्लाह के रसूल का उधर से गुज़र हुआ। आपने उसे इस तरह आवाज़ दी, जैसे किसी बड़े व्यक्ति को पुकार रहे हों, ताकि उसे अपने महत्व का अंदाज़ा हो और उसकी प्रोत्साहन हो। आपने आवाज़ दी, अमीर! अरबों का तरीक़ा था कि वह कुनिय्यत रखते और किसी व्यक्ति को उसके बड़े बेटे के नाम से पुकारते और अबू फ़ुलाँ कहकर सम्बोधित करते थे। अगर किसी के औलाद

न होती या वह ग़ैर-शादीशुदा होता तो भी कुन्नियत रख लेते। इसी रिवाज के अनुसार आप (सल्ल०) ने अबू अमीर कहा और जिस तरह बड़ों को आवाज़ देते हैं उस तरह उस बच्चे को सम्बोधित किया। फिर आपने उसका हाल-चाल पूछा, और यह मालूम किया कि वह क्या पसन्द करता है, फिर चिड़िया के बारे में सवाल किया चिड़िया के बच्चे के साथ क्या हुआ?

ये कहानी उनके भाई अनस बिन मालिक की ज़बानी सुनिए :

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का अख़्लाक़ सबसे अच्छा था। मेरा एक भाई था उसे अबू-अमीर कहते थे। शायद अभी उसने माँ का दूध छोड़ा था। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) तशरीफ़ लाते और इस पर नज़र पड़ती तो पूछते अबू-अमीर परिंदे के बच्चे का क्या हुआ? वह इस बच्चे से खेला करता था।[1]

इस कहानी से हमें सबक़ मिलता है कि अल्लाह के रसूल बच्चों से दिललगी करते, उनका दिल ख़ुश करते और जिस चीज़ को बच्चे पसन्द करते उस का ख़याल रखते।

(2) आदर और सम्मान

हर इन्सान अच्छा और उम्दा जीवन बसर करने के लिए जिन बुनियादी ज़रूरतों का मुहताज होता है वें है आदर और सम्मान। इस सच्चाई का एहसास रसूले अकरम (सल्ल०) को बख़ूबी था। इसलिए आप बच्चों के साथ इसी जज़्बे से पेश आते। इसे बच्चों का अधिकार समझते हुए उन्हें किसी कमी के बिना पूरा आदर और सम्मान देते थे। न उन्हें छोटा समझ कर नज़रअंदाज़ करते थे और न उनकी उम्र और बचपन को देखते हुए उन्हें हक़ीर समझते थे।

हदीस में आता है कि हज़रत सहल बिन साद अल-साअदी ने कहा : रसूल अकरम की सेवा में एक प्याला दूध पेश किया गया। आपने उसमें से पिया। आपके दाएं हाज़िरीन में सबसे कमसिन लड़का बैठा था और बड़े बूढ़े आपके बाईं ओर थे। अल्लाह के रसूल ने पूछा: मियां, क्या तुम इस बात की अनुमति देते हो कि मैं यह प्याला बड़ों की ओर बढ़ा दूँ? उसने बरजस्ता कहा अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आपकी जूठन के बारे में अपने सिवा मैं किसी को तर्जीह नहीं

1. बुख़ारी : 6203, मुस्लिम : 2150

दे सकता। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने वह प्याला उसे दे दिया।[1]

रसूल ने अपने साथियों को जो आदाब सिखाये थे, उनमें से एक यह भी था कि हर काम दाएं से शुरू किया जाए। मस्जिद या घर के अन्दर प्रवेश होने, काबा के तवाफ़ में, खाने पीने में दाएं को पहले रखा जाए। अब यह बच्चा रसूल अकरम के दाएं बैठा था और बड़े सहाबा, बड़े बूढ़े बाईं ओर थे। जब प्याला में दूध पेश किया गया तो आपने साथियों को देना चाहा और आपके सामने यह सच्चाई थी कि जो दाईं ओर है वह पहले उस का हक़दार है। लेकिन वह बहुत कमसिन है इसलिए आपने उस से अनुमति चाही कि अपना अधिकार छोड़ दे ताकि आप बचा हुआ दूध बड़ों को दे दें, लेकिन इस कमसिन बच्चे ने उसे क़ुबूल नहीं किया तो अल्लाह के रसूल ने इसकी इच्छा की पूर्ति की और उसकी राय का आदर किया। बचे हुए दूध में इसके अधिकार को स्वीकार किया ताकि सारी दुनिया जान ले कि बच्चे को कितना महत्व दिया जाता है और उन्हें उनका पूरा अधिकार कैसे दिया जाता है। उनकी राय और पसन्द का ख़याल कैसे रखा जाता है, खासतौर से उस समय जब वह अधिकार नैतिकता से न टकराता हो।

(3) जीवन में सच्चाई बताना

बच्चा जब छोटा हो तो ज़रूरी है कि इसी उम्र में उसके अन्दर नैतिक मूल्यों को सिमो दिया जाए ताकि वह इन नैतिक मूल्यों का आदी हो जाए और उनको अपनाना उसके लिए आसान हो। यह कह कर कि अभी तो बच्चा है, उसके अन्दर नैतिकता के बीच बोने में विलम्ब करने का कोई औचित्य नहीं है। क्योंकि बच्चे का व्यक्तित्व बड़ी तेज़ी से बनती है और उम्र के आरंभिक सालों में बच्चे आसानी से प्रभावित होते हैं। इन नैतिक मूल्यों में से एक सच बोलने की शिक्षा है, झूठ बोलने से रोकना है, वादा तोड़ने से बचना और वादा पूरा करने की ताकीद अनिवार्य है, चाहे वादा बड़े की निगाह में मामूली क्यों न हो, जैसे किसी ने वादा किया कि चॉकलेट ख़रीदेंगे या जूस लेंगे, या उपहार देंगे या घूमने या खेलने के लिए निकलेंगे। अल्लाह के रसूल बच्चों के मन मस्तिष्क में सच

1. बुख़ारी : 2351

बोलने की अहमियत को बिठाने की कोशिश करते।

अब्दुल्लाह बिन आमिर से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मेरे घर में थे कि मेरी अम्मी ने मुझे बुलाया कि आओ तुम्हें कुछ दूँगी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनसे पूछा क्या दोगी? इन्होंने उत्तर दिया, खजूर दूँगी। उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा अगर तुमने उसे कुछ न दिया होता तो तुम्हारे नामा-ए-आमाल में एक झूठ लिखा जाएगा।[1]

इस हदीस में ध्यान देने की यह बात है कि इसके रावी अबदुल्लाह बिन आमिर अपने बचपन की घटना सुना रहे हैं, जिसे वे भला न सके। उम्मत के लिए नबी (सल्ल०) की इस नसीहत मैं कितनी गहराई है और कितनी शानदार है यह नसीहत जिसकी वजह से रावी ने बचपन की इस बात को बड़े होने के बाद भी याद रखा। इस लुभावने और प्रभावशाली अंदाज़ का क्या कहना।

दूसरी बात यह है कि रसूल अकरम (सल्ल०) बच्चों की तर्बियत के बारे में केवल हिदायात ही नहीं देते थे, बल्कि समाज के लोगों पर निगाह भी रखते थे कि वे बच्चों के साथ किस तरह पेश आ रहे हैं और उनको ध्यान दिलाते, ताकि बच्चों को जिस राह पर ले जाना है उस राह को साफ़ कर दें और व्यावहारिक नमूना उपलब्ध करा दें।

(4) बच्चों को न्याय की ताकीद

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) समाज के सभी लोगों को में न्याय की रूह फूँकने के लिए कोशिश करते रहते थे, जब कि बहुत से माँ-बाप बच्चों को न्याय की अहमियत जताने में ग़फ़लत से काम लेते हैं। इसी लिए हम देखते हैं कि अल्लाह के रसूल जब इस बारे में उसूली शिक्षाओं में कहीं गड़बड़ पाते हैं तो पकड़ करते हैं, ताकि उच्च नैतिक मूल्यों के अनुसार नस्लों की परवरिश हो सके और अल्लाह के आदेश “अल्लाह तुम्हें अद्ल और एहसान का आदेश देता है।” की पैरवी हो सके।

आप न्याय और इनसाफ़ की सच्चाई और उसके महत्व से परिचित

---

1. अबू-दाऊद : 4991

कराने के लिए किस हद तक चिंतित थे, उस का अंदाज़ा आपकी इस बारे में शिक्षाओं और हिदायात और पेश आने वाले घटनाएँ से होता है। एक बहुत ही प्रभावशाली और हैरतअंगेज़ घटना जिसे हज़रत नोमान बिन बशीर सुनाते हैं। वे कहते हैं कि मेरे पिता ने अपने माल में से कुछ मुझे दे दिया। तो मेरी अम्मी उमरा बिंत रुवाहा ने कहा मैं उसे हरगिज़ न मानूँगी जब तक आप अल्लाह के रसूल को इसका गवाह न बनाएँ। मेरे अब्बा अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए ताकि गवाह बनाएँ। इस मुक़द्दमा की समाअत के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अब्बा से पूछ लिया क्या आपने जितना माल उनको दिया है इतना ही माल अपनी सारी औलाद को भी दिया है? अब्बा ने जवाब दिया नहीं।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : अल्लाह से डरो, अपने बच्चों में न्याय करो। अब्बा जान लौट आए और दिया हुआ माल वापस ले लिया।[1]

(5) बच्चों से प्यार

इन्सान को स्वभाविक रूप से विकासित होने में जिन बुनियादी चीज़ों की ज़रूरत होती है उनमें एक अहम चीज़ मुहब्बत, प्यार और स्नेह है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) प्यार और मुहब्बत को ख़ानदान के सारे लोगों में बाँटते और बच्चों पर ख़ास ध्यान देते। आपकी औलाद हो या नवासे या सहाबा के बच्चे सबसे प्यार करते। बच्चों से मुहब्बत और प्यार के इज़हार की निशानियां भी हैं। जैसे चूमना, चिमटाना, गोद लेना, दिल-लगी करना, सम्मान करना, सराहना, मुस्कुराहट, और बच्चे से कहना कि मुझे तुमसे प्यार है। बच्चे की तौहीन से बचना, उस का दिल न दुखाना, चाहे आप बहुत अहम काम में क्यों न लगे हों और नमाज़ ही क्यों न पढ़ रहे हों। एक सहाबी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की एक रोचक तर्बियती घटना बयान की है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक नवासे को खेलने कूदने का जी भर मौक़ा दिया जब कि आप नमाज़ जैसी बड़ी इबादत की इमामत कर रहे थे, उस में नमाज़ भी रुकावट न बन सकी।

हज़रत शद्दाद बिन हाद लैसी (रज़ि०) कहते हैं, "ज़ुहूर या अस्र की नमाज़ के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आए, आप हसन या हुसैन को गोद में

1. मुस्लिम : 1623

लिए हुए थे। आप आगे बढ़े, नवासे को दाएं पैर के पास बिठा दिया और नमाज़ शुरू की। नमाज़ के दौरान आपने एक सजदा बहुत लंबा किया । शद्दाद कहते हैं, मैंने सजदे से सर उठा कर देखा तो बच्चा रसूल अकरम की पीठ पर था और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सजदे में। मैं फिर सजदे में चला गया। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने नमाज़ पढ़ा ली तो लोगों ने पूछा, या अल्लाह के रसूल आपने एक सजदा बहुत लंबा किया। हमें ख़याल आने लगा कि कोई हादिसा तो नहीं हो गया या आप पर वह्यी तो नहीं उतरने लगी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जवाब दिया: ऐसा कुछ नहीं हुआ लेकिन मेरा नवासा मेरी पीठ पर सवार हो गया, तो मुझे यह अच्छा न लगा कि इसका जी भरने से पहले मैं सजदे से उठने में जल्दी करूँ ।[1]

आप (सल्ल०) के इस सुनहरे कथन पर ग़ौर करें, "उस का जी भरने से पहले मैं सजदे से उठने में जल्दी करूँ।" आप नमाज़ में हैं, सैकड़ों या हज़ारों नमाज़ी आपके पीछे हैं। आप सजदे में हैं, पूरी जमअत आपके साथ सजदे में है, इतने में आपका नवासा नाना की पीठ पर बैठ जाता है, आप उसे झिड़कते नहीं, न हटाते हैं, इसी हालत में कुछ देर रहते हैं। (यहाँ तक कि कुछ नमाज़ी को रूह निकल जाने का ख़याल आया या उसी हाल में वह्य उतरने का गुमान हुआ) जब बच्चा ख़ुद ही पीठ से उतर गया तो आपने सजदे से सर उठाया। वाह बच्चों के साथ कितना सुन्दर बर्ताव है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) आँखों देखा हाल बयान करते हैं कि रसूल अकरम नवासों से कितनी मुहब्बत करते थे। अबू हुरैरा कहते हैं कि दिन के किसी समय आप निकले, न आपने बात की न मैंने बात-चीत की । आप बनी क़ैनक़ाअ के बाज़ार आए। मंज़िल फ़ातिमा के सेहन में बैठ गए । और आवाज़ लगाने लगे, क्या यहाँ कोई बच्चा है? क्या यहाँ कोई बच्चा है? लेकिन हज़रत फ़ातिमा ने बच्चे को थोड़ी देर रोके रखा तो मुझे ख़याल हुआ कि कपड़े बदले जा रहे हैं या हाथ मुँह धोया जा रहा है। इतने में आपके नवासे दौड़ते आए और आपने उन्हें चिमटा लिया और प्यार किया। और कहा, ऐ अल्लाह इनसे मुहब्बत फ़र्मा और जो इनसे मुहब्बत करे उसे महबूब बना ले।[2]

---

1. निसाई : 1131 2. बुख़ारी : 2122, मुस्लिम : 2421

यह प्यारा बच्चा अली और फ़ातिमा के जिगरका टुकड़ा हसन था। देखिए, आपके अन्दर कितनी उनकी चाहत है और बच्चा भी नाना की ओर खिंचा चला आ रहा है। आप कैसे उन्हें चिमटा लेते हैं और प्यार करते हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह उन्हें अज़ीज़ रखे और लोग भी इन्हें प्यार करें।

(6) बेटे के इंतिक़ाल पर ग़मगीन होना

आपके बेटे इबराहीम का जब इंतिक़ाल हुआ तो आपकी आँखें गीली हो गईं। हज़रत इबराहीम सय्यदा मारिया के बतन से थे। सय्यदा मारिया को मक़ोक़स राजा ने आपकी सेवा में पेश किया था। आपके उदास हो जाने पर सहाबा को ताज्जुब हुआ। इससे पहले उन्होंने आपको कभी उदास नहीं देखा था। लेकिन अल्लाह के रसूल किसी बनावट का सहारा लिए बिना लोगों को अपना मानव मिज़ाज दिखाना चाहते थे कि आप बहैसियत इन्सान हंसते भी हैं और रोते भी हैं, उदास भी होते हैं और ख़ुश भी। इसी चीज़ को हज़रत अस्मा बिंते यज़ीद बयान करती हैं कि जब रसूल के बेटे इबराहीम का इंतिक़ाल हुआ तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) रो पड़े। अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अल्लाह ने जो बातें आपको सिखाई हैं आप उनके ज़्यादा हक़दार हैं। इस पर आप बोले, आँखें आंसू बरी हैं, दिल उदास है, अल्लाह की नाराज़गी का कोई काम हम नहीं करते, ऐ इबराहीम हम बेशक ग़मगीन हैं।[1]

– – – – –

1. तबरानी फ़ी औसत : 346/8)

रसूल (सल्ल०) और पशु-पक्षी

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दीन की जो बुनियादें खड़ी की हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण बुनियाद न्याय व इनसाफ़ की स्थापना और अत्याचार का समाप्ति है। न्याय या अत्याचार का समाप्ति केवल इन्सानों का अधिकार नहीं है, बल्कि हर जानदार का अधिकार है। पशु हों, पक्षी हों या कीड़े-मकोड़े हों सब न्याय के हक़दार हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रहमत के अर्थ को केवल इन्सानों के लिए विशेष नहीं किया, बल्कि इसे पशु-पक्षी और कीड़ों-मकोड़ों के लिए भी आम कर दिया। आपने यह भी साफ़ कर दिया कि न्याय का तक़ाज़ा है कि सबके अधिकार अदा किए जाएँ, तो जिस तरह इन्सानों के अधिकार हैं इसी तरह पशु-पक्षी के भी अधिकार हैं। आप पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने दुनिया में पशु-पक्षी के अधिकार रखे, अगर पशु-पक्षी के अधिकारों के बारे में बात-चीत की जाए तो पन्ने कम पड़ जाएँ, इसलिए संक्षेप के साथ इस बारे में उल्लेख किया जाता है।

(1) पशु-पक्षी के नाम पर क़ुरआनी सूरतें

पशु-पक्षी के लिए पहला शरफ़ और एज़ाज़ तो यही है कि अल्लाह ने आप (सल्ल०) पर कुछ सूरतें ऐसी नाज़िल कीं जिनके नाम पशु-पक्षी और कीट पतंगों के नाम पर रखे गए। यह पशु-पक्षी के लिए बड़ा गौरव है और यह गौरव उन्हें बड़े कारनामों के चलते मिला।

(अ) सूरह अल-फ़ील (हाथी के नाम पर)

इस सूरह में अल्लाह ने हब्शा के राजा अबराह की काबा ढाने की कोशिश का क़िस्सा बयान किया है जो बड़े बड़े हाथी लेकर आया था ताकि काबा को ध्वस्त कर दे।

(ब) सूरह अन-नमल (चींटी)

अल्लाह ने इसमें उस चींटी की बात दोहराई है जिसने अपने झुण्ड से कहा था कि ऐ चींटियो, अपने बिलों में घुस जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान और उसके सेना तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो।[1]

(ज) सूरह अन-नह्ल (शहद की मक्खी)

इस सूरह में शहद की मक्खी का जो उल्लेख आया है वह आपसी सहयोग की एक मिसाल और सुव्यवस्था का शाहकार है। इसका उल्लेख इस तरह आया है कि शहद की मक्खी बहुत साहस और हिम्मत वाली है, वास्तु कला में दक्ष है,शहद उस का उत्पादन है जो इन्सान के लिए उपयोगी है।

(2) पशु-पक्षी को खिलाने पिलाने का आदेश

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पशु-पक्षी के लिए जिन बुनियादी अधिकारों का ऐलान किया वह उनकी ख़ुराक की व्यवस्था और खाने-पीने का अधिकार है। यह अधिकार उस समय ख़ासतौर से अहम हो जाता है जब वह जानवर किसी इन्सान की मिल्कियत और ज़िम्मेदारी में हो। इस बारे में सहाबा से विभिन्न हदीसें आई हैं। हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने कहा एक व्यक्ति रास्ते में जा रहा था। उसे ज़ोर की प्यास लगी, उसे एक कुँआं नज़र आया वह उस में उतरा और पानी पी कर निकल आया। फिर वह क्या देखता है कि एक कुत्ता ज़ुबान हिला रहा है और प्यास की वजह से गीली मिट्टी खा रहा है। उस व्यक्ति ने सोचा प्यास की वजह से जो हाल मेरा था वही इसका हो रहा है। बस वह कुँवें में दुबारा उतर पड़ा और अपने मौज़े में पानी भर लिया, और उसे मुँह से पकड़ लिया और कुँवें से बाहर आ गया और कुत्ते को पिला दिया। अल्लाह ने उसके इस कर्म की वजह से उसे बख़्श दिया।

सहाबा पूछा, क्या पशु-पक्षी का ख़याल रखने से हमको सवाब मिलेगा? आपने कहा हर ज़िंदा जिगर रखने वाले की सेवा में इनाम है।[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस व्यक्ति की सज़ा का भी उल्लेख किया जिसने एक जानवर को खाने पीने से वंचित कर दिया था और उसे बाँधे रखा

1. अन-नमल : 18 2. बुख़ारी : 6323, मुस्लिम : 2244)

था, आज़ाद छोड़ा भी नहीं कि कहीं वह कुछ खा पी ले। आपने एक औरत के बारे में बताया कि वह इसी वजह से अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुई। एक बिल्ली को उसने बंद कर दिया, न खाने को दिया, न पीने को और न आज़ाद किया कि वह ज़मीन पर गिरी पड़ी चीज़ें खा ले, यहाँ तक कि वह उस क़ैद की हालत में मर गई, तो वह औरत जहन्नम रसीद हुई।[1]

(3) परिंदे के बच्चे न लें

अल्लाह के रसूल ने पशु-पक्षी के अधिकारों का उल्लेख कहा और ताकीद की कि परिंदों से उनके छोटे बच्चों को अलग नहीं करना चाहिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान करते हैं कि हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ एक सफ़र में थे। आप किसी ज़रूरत से चले गए , हमने एक लाल रंग का पक्षी देखा, उसके साथ दो चूज़े थे, हमने चूज़ों को पकड़ लिया, उनकी माँ हमारे आस-पास मंडलाने लगी, इतने में नबी अकरम आए और पूछने लगे इस परिंदे के बच्चों को लेकर इसे किस ने सताया ? उसके चूज़ों को वापस कर दो।[2]

(4) तकलीफ़ न दी जाए

आपने पशु-पक्षी के अधिकारों के बारे में कहा कि पशु-पक्षी को बेवजह सताया न जाए, तकलीफ़ न दी जाए, मारने से बचा जाए । हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि चीटियों का एक झुण्ड नज़र आया, हमने उसे आग लगा दी। आपने पूछ लिया कि किस ने जलाया? हमने जवाब दिया, या अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हमने। आपने कहा आग के ज़रिये सज़ा केवल आग के रब के लिए है।[3]

(5) निशाना न बनाए

पशु-पक्षी के अधिकारों में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यह भी साफ़ कह दिया कि लोग निशानेबाज़ी के अभ्यास के लिए किसी जानदार को निशाना न बनाएँ । किसी ज़िंदा परिंदे को निशानागाह पर बिठा दें और उस पर निशाना साधें, जैसा कि विश्व मुक़ाबलों और शिकार व घुड़ सवारी के क्लबों में होता है।

1. मुस्लिम : 2242 2. अबू दाऊद : 5268 3. अबू दाऊद : 5368

कबूतर या किसी परिंदे को अभ्यास के लिए निशाना साधने का निशाना बना लेते हैं। हदीस में साफ़ हिदायत है कि किसी ऐसी चीज़ को निशाना मत बनाओ जिसके अन्दर जान है।[1]

(6) बुरा-भला कहने पर रोक

पशु-पक्षी के अधिकारों में से एक अधिकार यह भी है कि उनको बुरा-भला न कहा जाए, हालाँकि वे समझते नहीं हैं। लेकिन चूंकि वे जानदार हैं, उनकी क़द्र की जाए। कि वे इन्सान के काम आते हैं, इसलिए इन्सान उनकी क़द्र करे और बुरा-भला न कहे।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक महिला की आवाज़ सुनी कि वह ऊंटनी को कोस रही है और उसे लान-तान कर रही है। इस पर अल्लाह के रसूल ने कहा, "ऊंटनी पर जो सामान है उसे उतार लो और उसे ख़ाली कर दो, क्योंकि अब यह 'मलऊन' हो गई है।[2]

(7) सताने पर रोक

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पशु-पक्षी को सज़ा देने और तकलीफ़ पहुँचाने से सख़्त मना कहा है। और अगर आप देखते कि कोई किसी जानवर को तकलीफ़ पहुँचा रहा है या आग से दाग़ रहा है तो नाराज़ होते। एक बार राह से गुज़रते हुए आपने देखा कि एक गधे के चेहरे को आग से दाग़ा गया है तो आपने बद्दुआ दी कि उस व्यक्ति पर अल्लाह की लानत हो जिसने दाग़ा।[3]

– – – – –

1. मुस्लिम : 1957
2. मुस्लिम : 2595
3. मुस्लिम : 1673

रसूल (सल्ल०) और पड़ोसी

पड़ोसी का दर्जा इस्लाम में बहुत बड़ा है। घर के क़रीब रहने वाले पड़ोसी कहलाते हैं। घर के आस-पास रहने वाले लोग कुछ दूरी पर क्यों न रहते हूँ वे भी पड़ोसी हैं। उनका मज़हब दूसरा है। उनका रंग अलग है। उनकी नागरिकयत अलग है। लेकिन आपके मुहल्ले में रहते हैं तो वे आपके पड़ोसी हैं। मुहल्ला शहर का एक हिस्सा होता है, जो कुछ घरों से बनता है। हर घर दूसरे घर का पड़ोसी है। जब मुहल्ले और कॉलोनी के सारे लोगों को एक दूसरे से मिल-जुल कर रहते हैं और हर पड़ोसी दूसरे पड़ोसी के अधिकारों को अदा करता है तो सब संतुष्ट और ख़ुश रहते हैं और एक दूसरे के लिए पूरक बन जाते हैं। सब एक ख़ानदान की तरह हो जाते हैं। इस तरह ऐसा मुहल्ला समाज का एक सक्रिय भाग बन जाता है और सकारात्मक कार्रवाइयों में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। अगर पड़ोसियों के मामलात ख़राब होते हैं तो जीना दुभर हो जाता है। सुकून ख़त्म हो जाता है, ऐसा मुहल्ला परेशानियों और दिक़्क़तों का जमघटा बन जाता है और विकास के बजाय बर्बादी का ज़रिया बन जाता है। इन कारणों से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पड़ोसियों के बेहतर सम्बन्ध की ओर बड़ा ध्यान था।

क़ुरआन में पड़ोसियों के अधिकार

क़ुरआने-करीम ने पड़ोसी से सम्बन्ध के सही होने को समाज की विकास की प्रतीक क़रार दिया है और पड़ोसी के अधिकारों और वाजिबात की यह हैसियत है कि उनको अदा किए बिना किसी मोमिन का इस्लाम भरोसे के काबिल नहीं समझा जाता। सूरह निसा की कई आयतें पड़ोसी के अधिकारों के बारे में आई हैं :

> "अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों,

अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।[1]

पड़ोसी के बारे में रसूल (सल्ल०) की हिदायात

अल्लाह के रसूल ने पड़ोसी के बारे में इतनी ताकीद की कि लगता था कि उसे वारिस होने वाले रिश्तेदार का दर्जा दे देंगे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) करते हैं जिबरील मुझे पड़ोसी के बारे में बार-बार ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि मुझे महसूस होने लगा कि पड़ोसी का हिस्सा विरासत में भी क़रार दे देंगे।[2]

पड़ोसी को कष्ट पहुँचाने की सज़ा

इस्लाम में पड़ोसी से रिश्ता की अहमियत का अंदाज़ा लगाइये कि पड़ोसी को कष्ट देने वाले को उसकी दीनदारी और इबादत की बहुतायत भी सज़ा से नहीं बचा सकती। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास एक सज्जन आए और कहने लगे फ़ुलां औरत की लंबी नमाज़ों, रोज़े पे रोज़ों और सदक़ा व ख़ैरात करने की हर ओर चर्चा है, लेकिन वह अपनी लम्बी ज़ुबान से पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुँचाती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा वह जहन्नम में होगी। उन्होंने फिर पूछा फ़ुलां औरत के सिलसिले में कहा जाता है कि वह रोज़े कम रखती है, सदक़ा कम देती है, (नफ़्ल) नमाज़ें भी कम पढ़ती है। पनीर के कुछ टुकड़े सदक़ा कर देती है, लेकिन अपनी ज़बान से पड़ोसियों को तकलीफ़ नहीं देती। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा वह जन्नत में होगी।[3]

पड़ोसी के अधिकार

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बहुत सी हदीसें में पड़ोसियों के अधिकार बताए हैं। उनमें से कुछ विशेष अधिकार ये हैं :

---

1. अन-निसा : 36 2. अबू-दाऊद : 4158 3. मुंज़री : 2560

(1) सलाम करना, आदर करना

(2) ख़ुशी से मिलना

(3) इयादत करना

(4) ख़ुशी और ग़म में साथ देना

(5) कमियों को बर्दाश्त करना

(6) पड़ोसी की महरम औरतों से पर्दे का व्यवस्था करना

(7) ज़रूरत के समय मदद करना

(8) भलाई के जज़्बात का इज़हार करना, नसीहत करना

(9) मुलाक़ात करना, हालात मालूम करना।

– – – – –

रसूल (सल्ल०) और यतीम (अनाथ)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ख़ुद यतीमी का जीवन गुज़ारा। आप यतीमी की पीड़ा से ख़ूब परिचित थे। आपके पिता का इंतिक़ाल उस समय हो गया जब आप माँ के पेट में थे। अभी छः साल के ही हुए थे कि माँ का साया भी उठ गया। आपके दादा परवरिश करने लगे, लेकिन आप आठ साल के होते हैं तो दादा भी जुदा हो जाते हैं। आप यतीमी की कड़वाहट को चख चुके थे, उसे महसूस कर चुके थे, फिर भला आप यतीमों का ख़याल क्यों न करते।

क़ुरआन में यतीमों का उल्लेख

क़ुरआन में शब्द 'यतीम' पाँच जगह पर आया है।

(1) सूरह अनआम में अल्लाह का आदेश है :

"और अनाथ के धन को हाथ न लगाओ, किन्तु ऐसे तरीक़े से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए।"[1]

अनाथ की दौलत के निगरानी करनेवालों को कहा गया है कि उनकी दौलत बेजगह ख़र्च न करें, अनाथ के फ़ायदे के लिए उनकी दौलत को व्यापार में लगाएँ।

(2) सूरह बनी-इसराईल में अल्लाह का आदेश है :

"और अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाए, और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जाएगा।"[2]

इसमें भी वही हिदायतें दी गई हैं जो सूरह अनआम में दी गई हैं।

---

1. अल-अनआम : 152 2. बनी-इसराईल : 34

(3) सूरह अल-फ़ज्र में अल्लाह का आदेश है :

"कदापि नहीं, बल्कि तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते।"[1]

इसमें उन इन्सानों पर जो अल्लाह की ओर से भलाई और हुराई के ज़रिये आज़माए जाने से अपरिचित हैं, सख़्त चेतावनी दी गई है कि वे समाज के कमज़ोरों का ख़ासतौर से यतीमों का ख़याल नहीं रखते, वे नन्हे बच्चे जिनके बाप मर चुके उनको पूछते नहीं।

(4) सूरह ज़ुहा में अल्लाह का आदेश है :

"अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना।"[2]

इसमें अल्लाह ने अनाथ पर अत्याचार करने और उस का माल हड़पने से मना किया है। अनाथ का अधिकार हनन करने, धमकाने और उसे हक़ीर समझने से रोका है।

(5) सूरह माऊन में अल्लाह का आदेश है :

"वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है।"[3]

इस आयत में दीन को झुठलाने वाले के बारे में बात की जा रही है, जो अनाथ पर अत्याचार करता है और उसका अधिकार इस तरह खा जाता है जैसे कि उसके अधिकारों की सुरक्षा और बचाव कर रहा है।

अनाथ के बारे में हदीसें

अनाथ समाज के एक कमज़ोर वर्ग है, इसलिए अल्लाह के रसूल ने इसका बड़ा ख़याल रखा। कमज़ोरों का ध्यान रखना समाज की अहम ज़िम्मेदारी है। इस आधार पर अनाथ के पालन-पोषण और उसके साथ हमदर्दी को पहला दर्जा प्राप्त है। इस बारे में कई हदीसें हैं :

(1) अनाथ के कफ़ील के लिए जन्नत की ज़मानत

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा मैं और अनाथ की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे। आपने दो उंगलियों (शहादत और बराबर वाली

1. अल-फ़ज्र : 17 2. अज़्ज़ुहा : 9 3. अल-माऊन : 2

से इशारा किया।[1]

अनाथ की कफ़ालत में उसकी तर्बियत और इसके मामलों की निगरानी सब शामिल है। यह रिश्तेदार करे या ग़ैररिश्तेदार उसे यह फ़ज़ीलत प्राप्त होगी। इसलिए कि अल्लाह के यहाँ उस का इनाम बहुत ज़्यादा है।

(2) सात विनाशक चीज़ें

यतीमों के अधिकारों की सुरक्षा रसूले-अकरम को बेहद प्रिय था, इसलिए आपने अनाथ के माल पर क़ब्ज़ा या उसके माल के साथ नामुनासिब कार्रवाई को बड़ा अपराध क़रार दिया, जिसका अंजाम जहन्नम है। आप कहते हैं, "सात विनाशक चीज़ों से बचो। लोगों ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल बताएँ वे सात चीज़ें क्या हैं? आपने कहा अल्लाह के साथ शिर्क, जादू, अल्लाह ने जिस जान को प्रतिष्ठित क़रार दिया है, उसकी हत्या सिवाए इसके कि उसे हत्या करना बरहक़ हो, अनाथ का माल खाना, युद्ध में पुश्त दिखाना, पाक दामन ईमानवाली भोली औरतों पर तोहमत लगाना ।[2]

– – – – –

1. अल-तिर्मिज़ी : 1918

2. बुख़ारी : 5768

रसूल (सल्ल०) और फ़क़ीर

मदीना के समाज पर ग़रीबी छाई हुई थी। मालदारों की संख्या बहुत कम थी, उधर अल्लाह के रसूल ग़रीबी और अमीरी की खाई पाटने और ग़रीबी की समस्या को हल करने की कोशिशें कर रहे थे और क़ुरआनी और नबवी शिक्षाएं पेश कर रहे थे और उसकी मार्गदर्शन के अनुसार आपसी सहयोग और ख़र्च करने की भावना को बढ़ावा दे रहे थे । ज़कात और सदक़ों की प्रेरणा के ज़रिये ग़रीबी से ग्रस्त समाज को आपस में एक दूसरे की मदद करने वाले और हमदर्दी से भरे समाज में बदल दिया, जिसके कारण वर्ग विभेद की समाप्ति हो गयी। ग़रीबों और मालदारों की आपसी रंजिश मिट गई, फिर ग़रीबी अपनी मामूल की सतह पर आ गई।

नबी अकरम ने ग़रीबी का उन्मूलन कैसे किया?

अल्लाह के रसूल जिस समाज में आए वह समाज ग़रीबी की पकड़ में था। लेकिन आपने उस का तत्वदर्शितापूर्ण हल पेश किया और उसके अंत के लिए कई उपाय किए जिसने ग़रीबी को जड़ से उखाड़ तो नहीं फेंका लेकिन उसकी दर कम से कम हो गई। ग़रीबी पर क़ाबू पाने के आपने कई सुझाव दिए जिसने ग़रीबी को पूर्णतःसमाप्त नहीं किया लेकिन उसे कम से कम सतह पर ले आए।

(1) हर व्यक्ति के लिए काम ज़रूरी

हर व्यक्ति रोज़ी कमाने और उसके लिए कोशिश करने का पाबंद किया गया, उसे प्रेरणा दी गई कि वह सारे साधनों का इस्तेमाल करे, कमाने की हर तरह की क्षमताओं को काम में लाए, दूसरों के भरोसे न रहे। अल्लाह का आदेश है :

“फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह

का उदार अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो।"[1]

किताब हिदायत में मानवता के नाम रब का पैग़ाम है कि नमाज़ की अदायगी के बाद रोटी रोज़ी की तलाश के लिए कोशिश शुरू कर दें और ख़रीद-बिक्री के ज़रिये मुनाफ़ा प्राप्त कर के अपने और घरवालों के खाने पीने की व्यवस्था करें। इसी तरह दूसरी हिदायत है :

"वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को वशीभूत किया। अतः तुम उसके (धरती के) कन्धों पर चलो और उसकी रोज़ी में से खाओ, उसी की ओर दोबारा उठकर (जीवित होकर) जाना है।"[2]

अल्लाह ने इन्सानों के लिए ज़मीन को संसाधनों से परिपूर्ण बनाया कि साधनों की प्राप्ति के लिए सभी स्रोत का इस्तेमाल किया जाए और मेहनत के ज़रिये अल्लाह की फैली हुई ज़मीन से जीविका कमाए और हाथ पर हाथ रखकर न बैठे।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम नबी की सेवा में हाज़िर हुए और आपसे कुछ माँग की। आपने उनको बड़े सभ्य अंदाज़ में ध्यान दिलाया कि वे अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करें और माँगने से बचें। वह सहाबी ख़ुद बयान करते हैं:

मैंने अल्लाह के रसूल से माँगा, आपने दे दिया, उसके बाद फिर माँगा, आपने फिर दे दिया। और कहा, "बेशक यह दौलत हरी-भरी और मीठी है, जिसने ख़ुशदिली से प्राप्त किया उसे इसमें बरकत मिली और जिसने लालच के साथ प्राप्त किया तो उसके माल में बरकत नहीं होगी और वह उस व्यक्ति जैसा हो जाता है जो खाता जाता है लेकिन सैर नहीं होता। ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है।[3]

(2) भीख माँगने के ख़िलाफ़ एलाने-जंग

दूसरों से पैसे या खाने पीने की चीज़ें माँगना भीख माँगना है। जीविका के लिए साधन न अपनाना और हाथ फैलाना भीख माँगना है। इसको पेशा बना लेना भीख माँगने का पेशा है। लोगों से दया की अपील करना ताकि उनके माल

1. अल-जुमुआ : 10 2. अल-मुल्क : 15 3. अल-नसाई : 2530

और दौलत का कुछ हिस्सा मिल जाए, ललचाई निगाहों से लोगों की ओर देखना और इसी को कमाई का ज़रिया बनाना बहुत ही अनैतिक काम है।

भीख माँगने को पेशा बनाना इस्लाम ने वर्जित क़रार दिया है। किसी के आगे हाथ फैलाने की अनुमति बहुत ही सख़्त हालात में है। कोई कमाने में असमर्थ हो, या जो कमाई हो रही है वह उसकी बुनियादी ज़रूरत की पूर्ति नहीं कर रही हो, या इसी तरह की कोई दूसरी मजबूरी हो। अल्लाह के रसूल ने कहा :

> "जो व्यक्ति सदक़े या सिला-रहमी के ज़रिये लोगों को देने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उसको बड़ी बरकत देते हैं और जो व्यक्ति माल बढ़ाने के लिए लोगों से माँगने का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह उसके माल में और कमी कर देते हैं।"[1]

इस हदीस में अल्लाह के रसूलने ज़रूरतमन्दों को सदक़े देने की प्रोत्साहन की है और इसके लिए माल में इज़ाफ़ा की दुआ दी, और जिसने जमा करने के लिए भीख माँगने को पेशा बनाया उसके लिए बददुआ की है कि उस का माल दिन बदिन घटेगा, क्योंकि भीख माँगने से समाज में सुस्ती और काहिली फैलती है और दूसरों के भरोसे रहने की आदत पड़ती है और बेकारी आम होती है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।"[2]

यानी लेने वाले की तुलना में देने वाला बेहतर है।

हज़रत अबू हुरैरा ने रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल ने कहा :

> "ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम में से जो रस्सी ले और पीठ पर लकड़ियाँ ले आए, इससे बेहतर है जो किसी के सामने हाथ फैलाए, किसी से माँगे और वह उसे दे या न दे।"[3]

अल्लाह के रसूल के इस आदेश में आत्मविश्वास के जज़्बे को बढ़ावा दिया गया है, और यह भी बताया गया कि किसी पेशे को उस समय तक मामूली और हक़ीर न समझो जब तक उस से इन्सान की शराफ़त व इज़्ज़त की

---

1. अहमद : 5646 2. बुख़ारी :1427, मुस्लिम : 1034 3. बुख़ारी :1470

सुरक्षा होता हो। इस पेशे से कमाया हुआ माल आत्मसम्मान का कारण बनता हो और आत्मविश्वास पैदा करता हो, चाहे वह पेशा लोगों की नज़र में कितना ही हक़ीर हो।

(3) ज़कात

ज़कात इस्लाम के बुनियादी अरकान में से एक है। ज़कात पर ईमान और कर्म के बिना इन्सान का दीन सही नहीं होता है। ज़कात माल का वह हिस्सा है जिसे अल्लाह के लिए निकालना ज़रूरी है। इसके हक़दार कौन हैं इसका उल्लेख क़ुरआने-करीम में मौजूद है। इस सूची में फ़क़ीर व मिस्कीन भी शामिल हैं। फ़क़ीर वह व्यक्ति कहलाता है जिसके पास इतना माल न हो जिससे उसकी ज़रूरतों की पूर्ति हो सके। कभी उसके पास एक दो दिन का ख़र्चा भी नहीं होता। मिस्कीन का हाल फ़क़ीर से कुछ बेहतर होता है, लेकिन वह भी अपनी जरूरतों के बराबर पैसे नहीं पाता है और पूरे महीना के गुज़र बसर का सामान भी इसके पास नहीं होता है। दूसरी बुनियादी जरूरतों को पूरा करना भी उसके बस में नहीं होता। इस्लाम ने फ़क़ीर, मिस्कीन और दूसरी मदों में को ज़कात निकालना मुसलमानों के लिए ज़रूरी क़रार दिया है।

सुफ़्फ़ा वाले

सुफ़्फ़ा एक जगह का नाम है, जो मस्जिदे नबवी के एक किनारे पर स्थित थी । यहाँ वे ग़रीब सहाबा रहते थे, जिनका कोई ठिकाना न होता था, न घराना होता, लोग उनको सदक़ा व ख़ैरात देते। उनकी बड़ी संख्या मक्का से आए मुहाजिरों की थी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उन्हें प्रिय रखते, उनके साथ बैठते, खाते पीते और लोगों से उनको सदक़ा देने की अपील करते । जब आपके पास खाने पीने की कोई चीज़ सदक़ा में आती तो आप सुफ़्फ़ा वालों के पास भेजने का आदेश देते। आप फ़क़ीरों और मुहताजों के साथ यह सुलूक करते और इस तरह ग़रीबी का हल निकालते।

– – – – –

ग़ुलामी और इन्सानों का व्यापार

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जिन बुनियादी शिक्षाओं को लेकर आए, उनमें एक बुनियादी शिक्षा आज़ादी है, इसी लिए आप इन्सान की आज़ादी पर पाबंदी की हर कोशिश के ख़िलाफ़ संघर्ष करते नज़र आए और आज़ादी की सच्चाई से परिचित कराने और ज़ेहनों में बिठाने की कोशिश नबुव्वत के पहले दिन से मक्का में करते रहे। यही वजह है कि आरंभिक दौर में आपके अनुयायियों में बड़ी संख्या ग़ुलामों की थी। क्योंकि उन्होंने गुलामी के अत्याचार से छुटकारा इसी देन में देखी और उज्ज्वल भविष्य उनके सामने था। यह भी सच्चाई है कि जिस दौर में आपकी रिसालत हुई, उस दौर में गुलामी और मानव व्यापार को समाज के विकास में गिना जाता था और यह व्यापार का एक अहम ज़रिया था। उस दौर के सामाजिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता था।

इस सामाजिक समस्या को आप (सल्ल०) ने कैसे हल किया ?

ग़ुलामी केवल अरब प्रायद्वीप तक सीमित न थी, बल्कि पूरी दुनिया उसकी लपेट में थी और छोटे बड़े सभी देशों में यह कारोबार आम था। अमेरिका में गुलामी की व्यवस्था और इन्सानों का व्यापार राष्ट्रपति अबराहाम लिंकन के ज़माने में जाकर बंद हुआ। यूरोप में भी 1814 ई. में सभी यूरोपीय देशों ने वियना कान्फ्रेंस में एक समझौता किया जिसके द्वारा ग़ुलामों के व्यापार को वर्जित कर दिया गया।

ग़ुलामों का पहला मसीहा

ग़ुलामों को आज़ादी दिलाने वाले सबसे पहले व्यक्ति अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। दुनिया में प्रचलित गुलामी

की व्यवस्था के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाले आप पहले क्रांतिकारी व्यक्ति हैं। अमेरिका और यूरोप में आज़ादी के आन्दोलन से बारह सदी पहले हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने छठी सदी ईसवी में गुलामी के ख़िलाफ़ आंदोलन चलाया।

(1) क़ुरआन में ग़ुलामों को आज़ादी की प्रेरणा

जर्मन ओरिएंटलिस्ट एडम मिट्ज़ (Adam Mitz) कहता है :

इस्लाम में ग़ुलामों के हित और पक्ष में एक उसूल था, और वह यह था कि ग़ुलाम पैसों के बदले आज़ादी ख़रीद सकता था। ग़ुलाम और दासी को अपनी पसन्द का काम और पेशा अपनाने की अनुमति थी । नेकी और उच्च नैतिक गुणों में यह गिना जाता था कि इन्सान मरने से पहले वसीयत कर जाए कि मेरे ग़ुलामों में से कुछ ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया जाए।

क़ुरआने-करीम में ग़ुलाम आज़ाद करने के विषय में कई आयतों में अल्लाह का आदेश है :

> "किन्तु वह तो दुर्गम घाटी में से गुज़रा ही नहीं (और न उसने मुक्ति का मार्ग पाया) और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है! किसी गरदन का छुड़ाना।"[1]

आख़िरत की मुश्किलें दूर करने का एक ज़रिया ग़ुलामों की आज़ादी क़रार दिया । क़ुरआने-करीम में यह आयत है :

> "उनमें से जो लोग लिखा-पढ़ी के इच्छुक हो उनसे लिखा-पढ़ी कर लो, यदि तुम्हें मालूम हो कि उनमें भलाई है। और उन्हें अल्लाह के माल में से दो, जो उसने तुम्हें प्रदान किया है।"[2]

अल्लाह ने मुसलमानों को प्रेरणा दी कि वे ग़ुलामों को यह फ़ैसला करने का अधिकार दें कि वे माल के बदले ख़ुद को आज़ाद करालें, ताकि गुलामी से छुटकारा पा लें। दूसरी ओर यह भी कहा कि जो ग़ुलाम आज़ादी के लिए वांछित रक़म अदा नहीं कर पाते उनकी माली मदद करें ताकि वे गुलामी के चंगुल से निकल सकें। इसी तरह अल्लाह ने कई गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) ग़ुलाम

1. अल-बलद : 11,13 2. अन-नूर : 33

आज़ाद करना क़रार दिया, जैसे हत्या की कुछ सूरतों और ज़िहार के कफ़्फ़ारा में भी है। (ज़िहार : अर्थात कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से यूं कह दे कि तू मुझ पर मेरी माँ या बहन या बेटी जैसी है।) इसका आदेश यह है कि ज़िहार से तलाक़ नहीं होती लेकिन कफ़्फ़ारा अदा किए बिना पत्नी के पास जाना हराम है। कफ़्फ़ारे की एक सूरत ग़ुलाम आज़ाद करना है। (अनुवादक)

(2) ग़ुलाम को आज़ाद करने की प्रेरणा

मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन में जब भी कोई मौक़ा आया तो उसे ग़नीमत समझा और ग़ुलामों को आज़ाद करने की प्रेरणा दी। आपको बख़ूबी यह अंदाज़ा था कि जो बुराई पूरी दुनिया में फैली हुई है उसकी जड़ें बेहद मज़बूत हैं। इसे 23 वर्षों में पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता। (और यही 23 साल नुबूवत का दौर है जब कि चालीस साल की उम्र में आपको नबुव्वत मिली थी, लेकिन आपने इस कुरीति के उन्मूलन की बुनियादें रख दीं, जिसके नतीजे में आपके बाद पूरे इस्लामी जगत में ग़ुलामी का सफ़ाया हो गया। आपने आज़ादी की बुनियादों पर काम शुरू कर दिया, और व्यवहार में इन बुनियादों को लागू किया। इसके लिए एक तरीक़ा यह भी अपनाया कि दोज़ख़ की आग से आज़ादी को ग़ुलाम की आज़ादी से जोड़ दिया और कहा, "जिस मुसलमान ने किसी मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद किया तो वह उसके लिए जहन्नम से छुटकारे का ज़रिया है। इसके हर जोड़ का बदला उस को दिया जाएगा। जो मुसलमान औरत किसी मुसलमान बांदी को आज़ाद करे तो वह उसके लिए जहन्नम से छुटकारे का ज़रिया होगा। इसके हर जोड़ पर उसे इनाम दिया जाएगा। और जो मुसलमान दो मुस्लिम बांदियों को आज़ाद करे तो वह दोनों जहन्नम से उसकी नजात का कारण बनेंगी। उनका हर दो जोड़ उसके हर जोड़ और के बदले होगा।[1]

एक सज्जन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और मालूम किया बेहतरीन काम क्या है? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जवाब दिया अल्लाह पर ईमान लाना। राहे-ख़ुदा मैं जिहाद करना। रावी कहते हैं, मैंने पूछा किस ग़ुलाम को आज़ाद करना ज़्यादा अफ़ज़ल है? कहा जिसकी क़ीमत ज़्यादा हो और मालिक का सबसे पसन्दीदा हो।[2]

1. तबरानी, अलबानी ने सही कहा। 2. मुस्लिम : 84

इस आदेश के ज़रिये बताने का मक़सद यह है कि ग़ुलाम की क़ीमत जितनी ज़्यादा होगी वह इतना ही मालिक को प्रिय होगा, फिर उस का आज़ाद करना अल्लाह के यहाँ भी बहुत पसन्दीदा होगा।

ग़ुलाम जिसको आज़ाद करने के बाद आप (सल्ल०) ने मुँह बोला बेटा बना लिया

ग़ुलामों के साथ अल्लाह के रसूल के व्यवहार की बहुत ही सुन्दर और उच्च स्तरीय मिसाल मिलती है। ख़दीजा का ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा आठ साल का था। उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को उपहार में दे दिया। आपने उसे आज़ाद कर के मुँह बोला बेटा बना लिया और उसे औलाद की तरह रखा।

इसके बाद अल्लाह की ओर से मुँह बोला बेटा बनाने का निषेध कर दिया गया और इस बात पर उभारा गया कि औलाद को उनके असल बाप की हवाले से पुकारा जाए। अल्लाह के रसूल ज़ैद से बहुत ज़्यादा प्यार करते थे। आपके प्यार से वे इतने ख़ुश थे कि जब उनके बाप और चाचा तलाश करते हुए पहुँच गए और नबी (सल्ल०) के सामने हाज़िर हुए, ताकि ज़ैद को वापस अपने साथ ले जा सकें। ज़ैद के सगे भाई जब्ला बिन हारिसा यह घटना बयान करते हुए कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल की सेवा में हाज़िर हो कर कहा, या अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ज़ैद को मेरे साथ भेज दें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जवाब दिया ज़ैद तुम्हारे सामने हैं, अगर तुम्हारे साथ जाना चाहें तो मैं मना नहीं करूँगा। यह सुनते ही ज़ैद बोल पड़े अल्लाह के रसूल ख़ुदा के लिए मैं आपके मुक़ाबले में किसी को नहीं चुनूंगा। जब्ला कहते हैं मैंने भाई की राय को अपनी राय से बेहतर पाया।[1]

ये आप (सल्ल०) की मुहब्बत ही का नतीजा था कि ज़ैद की शादी अपनी फूफी की बेटी ज़ैनब बिंत जह्श से करा दी और एक बड़े युद्ध का उनको कमांडर बनाया। ज़ैद अकेले ऐसे सहाबी हैं जिनके नाम का उल्लेख क़ुरआन में आया। ज़ैद के एक बेटे थे, जिनका नाम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसामा रखा।

---

1. तिर्मिज़ी : 3815, अलबानी ने सही कहा।

आप (सल्ल०) उनसे बेटे की तरह मुहब्बत करते और उन पर आप (सल्ल०) का ख़ास ध्यान रहता। यहाँ तक कि आपने उसामा को अपनी मौत से पहले रोम के मुक़ाबले के लिए भेजी जाने वाली सेना का कमांडर नियुक्त किया।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जीवन की आख़िरी सांस तक ग़ुलामी के ख़िलाफ़ युद्ध जारी रखा। आप (सल्ल०) आख़िरी सांस ले रहे थे और ग़ुलामों के बारे में सद्व्यवहार की ताकीद कर रहे थे। अली बिन अबी तालिब ने रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के दुनिया से विदा होते समय आख़िरी शब्द थे: "नमाज़! नमाज़! ग़ुलामों और अधीनस्तों के बारे में अल्लाह का ख़ौफ़ रखना।[1]

– – – – –

1. अबू-दाऊद : 5156

रसूल (सल्ल०) और रहमत

अल्लाह ने रहमत को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के गुण के तौर पर क़ुरआन में उल्लेख किया :

"हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।"[1]

सूरह आले-इमरान में आदेश है :

"(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते।"[2]

आपका यह गुण, रहमत अर्थात दयालुता, छोटे बड़े, पशु-पक्षी यहाँ तक कि जड़ तत्वों तक के लिए थी। यही रहमत दीने इस्लाम के अन्दर लोगों के प्रवेश का सबसे महत्वपूर्ण कारण थी। यही रहमत एक छोटे से समाज के बीच सद्भावना और एकजुटता, और अस्तित्व में आने वाली नई उम्मत (समुदाय) की अपने दया और स्नेह रखने वाले रहनुमा से मुहब्बत का सबसे महत्वपूर्ण कारण थी।

रहमत का उपहार

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का जीवन क़ुरआन की इस आयत का प्रतिबिम्ब था :

"हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।"[3]

1. अल-अंबिया : 107 2. आले-इमरान : 159 3. अल-अंबिया : 107

अतः अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहते हैं :

"मैं रहमत का एक उपहार हूँ।"[1]

आप (सल्ल०) लोगों के प्रति रहमत होने की बहुत ही उम्दा मिसाल इस तरह पेश करते हैं :

"मेरी और लोगों की मिसाल उस व्यक्ति की तरह है जिसने अलाव जलाया, जब चारों ओर रोशनी फैल गई तो पतंगे और कीड़े मकोड़े आग में गिरने लगे। वह व्यक्ति उनको निकालने लगा लेकिन वे इस पर भारी पड़ गए और आग के अन्दर चले गए। उसी तरह मैं तुम्हारी कमर पकड़-पकड़ कर आग से निकाल रहा हूँ और तुम उसी में कूदे जा रहे हो।"[2]

आप (सल्ल०) की रहमत को बयान करने के लिए यह उम्दा मिसाल है। लोगों को पतंगों और हवा में उड़ने वाले कीड़े मकोड़े से उपमा दी गई है। जिनको आग की चमक भा जाती है उसकी शोभा लुभाती है और आग की लपटें उन्हें अपनी पकड़ में ले लेती हैं। और रसूल की मिसाल उस व्यक्ति से दी गई है जो आग में गिरने से पतंगों को रोकने के लिए बेचैन और प्रयासरत है, लेकिन लोग हैं कि मानते नहीं और आग की ओर बढ़े जा रहे हैं। जहन्नम की आग में जाने से बचाना आपका मक़सद है और यह आपकी दयालुता की चरम सीमा है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उम्मत को लोगों पर रह्म करने की शिक्षा दिया करते थे। कहते :

"जो बन्दे लोगों पर रह्म खाते हैं अल्लाह उन पर रह्म करेगा।"[3]

बड़े-छोटे सब पर मेहरबान

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में बड़ों और छोटों पर रहमत और मेहरबानी की बहुत-सी मिसालें मौजूद हैं। इसलिए आप लोगों को इसी तरह की मेहरबानियों की शिक्षा देते। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहते हैं :

---

1. हाकिम, दारमी : 2345 2. बुख़ारी : 6118 3. बुख़ारी : 1224

"जो हमारे छोटों पर रह्म न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे वह हम में से नहीं है।"[1]

आप (सल्ल०) बच्चों की पिटाई और सज़ा देने से रोकते और लोगों को सिखाते कि बच्चों से ख़ुशदिली और ख़ुशमिज़ाजी से पेश आएँ। उनकी कमज़ोरी और ज़रूरतों को समझने की शिक्षा देते, उनकी मदद करने पर आमादा करते, उनको ज़लील और रुस्वा और समझने से रोकते।

ग़लती करनेवालों के लिए भी मेहरबान

आप (सल्ल०) ग़लती करनेवालों को देखते या अपराध की स्वीकारोक्ति करने वाले आपकी सेवा में आते तो आप उन पर सख़्ती न करते, न डाँट डपट करते, न उन्हें तंग करते, बल्कि बड़ी मुहब्बत और हमदर्दी से उन्हें समझाते ताकि वे आसानी व सहूलत से ग़लती की क्षतिपूर्ति कर लें। ग़लती करनेवालों के साथ मुहब्बत के रवैय्ये की कुछ मिसालें ये हैं :

(1) मस्जिद नबवी में पेशाब : अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बद्दू आया और मस्जिदे नबवी में पेशाब करने लगा। लोग उसकी ओर लपके। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने आदेश दिया, रहने दो इसे पेशाब कर लेने दो। हाँ एक बाल्टी पानी पेशाब पर बहा दो। तुम्हें आसानियाँ पैदा करने के लिए तैयार किया गया है, परेशानियों में डालने के लिए नहीं।[2]

ये नैतिकता का कितना ऊँचा स्तर है। यह बद्दू सारी जगह छोड़कर नमाज़ की जगह पहुँचा और पेशाब करने लगा। जब सहाबा ने देखा तो उसे पेशाब से रोकने और इसे डांटने के लिए आगे बढ़े, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनको रोक दिया और पेशाब पूरा कर लेने का मौक़ा दिया। फिर सहाबा (रज़ि०) को आदेश दिया कि एक बाल्टी पानी उस जगह पर बहा दें। जब वह बद्दू पेशाब कर चुका तो उसकी ग़लती के बारे में बता दिया गया और मामला ख़त्म हो गया। इसके बाद सहाबा (रज़ि०) को बताया कि लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम आसानियों की सौग़ात लेकर पहुँचाया जाता है, कठिनाइयाँ पैदा करके नहीं की जातीं।

---

1. तिर्मिज़ी : 1919   2. बुख़ारी : 220

(2) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सेवक अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ चल रहा था, आप (सल्ल०) एक नजरानी रंगदार चादर डाले हुए थे, जिसका किनारा मोटा था। एक बद्दू आप (सल्ल०) तक पहुँच गया और आपकी चादर इस ज़ोर से खींची कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का चेहरा उसके सीने की ओर हो गया। यहाँ तक कि मेरी नज़र मूँढ़े की सफ़ेदी पर पड़ी जिस पर चादर के किनारे से रगड़ खाने का निशान था। बद्दू ने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह का माल जो आपके पास है इसमें से मुझे देने का आदेश दीजिए। आप (सल्ल०) ने उसकी ओर ध्यान दिया और हँसे फिर उसके लिए माल देने का आदेश दिया।[1]

मेरे साथ इस मंज़र का आप भी कल्पना कीजिए। दूर-दराज़ से एक व्यक्ति आता है और शासक के साथ बेअदबी की हद तक पहुँच जाता है। उस व्यक्ति ने चादर इतनी ज़ोर से खींची कि शासक की गर्दन उस ज़ालिम बद्दू के सीने के क़रीब पहुँच गई। फिर बड़े कठोर अंदाज़ और कड़े स्वर में कहता है कि अल्लाह के माल में से मुझे दो। इस सख़्त और उद्दंड का जवाब शासक मुस्कुराहट से और माल देने के आदेश से दे रहा है। आख़िर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) रहमत के किस दर्जा पर थे!

(3) एक जवान व्यभिचार की अनुमति चाहता है : एक जवान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से व्यभिचार की अनुमति चाहता है जो इस्लाम में वर्जित है। उसके साथ कितना समझदारी और दयालुता का व्यवहार दुनिया के सामने आता है उसकी एक झलक पेश है :

अबू अमामा बाहली नक़ल करते हैं एक नौजवान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुआ। वह कहने लगा अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मुझे व्यभिचार की अनुमति दीजिए, यह सुनते ही लोग उसकी ओर बढ़े और डांट-डपट करने लगे और कहने लगे ख़बरदार-ख़बरदार आप (सल्ल०) ने कहा क़रीब आओ। वह और ज़रा क़रीब आया और बैठ गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उससे पूछा क्या तुम अपनी माँ के साथ व्यभिचार किए जाने

1. बुख़ारी : 5809

को पसन्द करोगे? नौजवान ने कहा कि मैं आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान, ख़ुदा की क़सम बिल्कुल नहीं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहा : लोग भी उसे अपनी माओं के लिए पसन्द नहीं करते। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उससे पूछा क्या उसे अपनी बेटी के लिए गवारा करोगे? उसने कहा, कभी नहीं, मैं आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान जाऊँ। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहा : लोग भी अपनी बेटियों के लिए गवारा नहीं करते। आप (सल्ल०) ने पूछा क्या अपनी बहन के लिए पसन्द करोगे? उसने कहा बिल्कुल नहीं ख़ुदा की क़सम । मैं आप पर क़ुर्बान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा लोग भी अपनी बहनों के लिए उसे पसन्द नहीं करेंगे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा क्या अपनी फूफी के लिए बेहतर जानोगे? उसने कहा नहीं ख़ुदा की क़सम नहीं! मैं आप पर क़ुर्बान। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा लोग भी अपनी फूफियों के लिए उसे बेहतर नहीं समझते। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा क्या अपनी ख़ाला के साथ पसन्द करोगे? उसने कहा हरगिज़ नहीं। बंदा आप पर क़ुर्बान। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा लोग भी अपनी ख़ालाओं के साथ पसन्द नहीं करेंगे। रावी कहते हैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसके सीने पर हाथ रखा और दुआ की, ऐ अल्लाह इसके गुनाह बख़्श दे। इसके दिल को साफ़ कर दे। इसकी आबरू की रक्षा कर। रावी कहते हैं कि इसके बाद उस नौजवान कभी इस तरह की बुराइयों की ओर ध्यान नहीं गया।[1]

– – – – –

1. अहमद : 22211

रसूल (सल्ल०) और ‘अफ़्व’ व ‘दरगुज़र’

अफ़्व और दरगुज़र कहते हैं किसी ग़लती पर पकड़ न करना, उसे नज़रअंदाज़ करना और सज़ा न देना। लिसानुल अरब में इब्ने-मंज़ूर ने अफ़्व की तारीफ़ इस तरह की है, अपराध को नज़रअंदाज़ करना, उसकी सज़ा न देना, ‘अफ़्व’ का मूल ‘मह्व’ यानी मिटाना है। (लिसानुल अरब)

जब क्षमता हो और जिस पर ज़्यादती की गई हो वह ज़्यादती करने वाले से बदला लेने की शक्ति रखता हो, फिर भी माफ़ कर दे और अफ़्व व दरगुज़र से काम ले, तो यह बड़ा विशेष गुण बन जाता है। यह ऐसी अनोखी और नायाब ख़ूबी है जो केवल बड़ों और शरीफ़ों का गुण है। सयाने लोगों की आदत हुआ करती है जिन्होंने अपने नफ़्स की बेहतरीन तर्बियत की हो और अपने जज़्बात पर क़ाबू पा लिया हो, बल्कि उन्होंने ईमान और अक़्ल को कसौटी बनाया। और वह बदले की कार्रवाई के ख़तरनाक अंजाम और नकारात्मक प्रभावों पर निगाह रखते हैं।

क़ुरआनी प्रशिक्षण

अफ़्व और दरगुज़र के उच्च गुण से मालामाल होने के बारे में अल्लाह ने नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर क़ुरआने-करीम में कई आयतें उतारीं हैं। अल्लाह का आदेश है :

> “और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक

अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं–और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।"[1]

संयमी लोगों के दो विशेष गुण हैं :

(अ) ग़ुस्सा पीना : आक्रामकता और बदले की भावना को दबाना।

(ब) लोगों को माफ़ करना : लोगों से दरगुज़र करना, पकड़ न करना और सज़ा न देना।

अल्लाह का आदेश है :

"(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।"[2]

इसमें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को हिदायात दी गई है कि जब सहाबा से कोई ग़लती हो जाए तो उनके साथ सख़्ती का मामला न करें, बल्कि नर्मी और अफ़्व व दरगुज़र से पेश आएँ। ग़लतियों को माफ़ करें, कहीं ऐसा न हो कि वे सख़्ती से बचने के लिए आपको छोड़ दें।

अल्लाह ने कहा :

"जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो वे क्षमा कर देते हैं।"[3]

इस आयत में मोमिनों की श्रेष्ठ ख़ूबियों का उल्लेख है। उनमें कुछ महत्वपूर्ण ख़ूबियाँ हैं :

---

1. आले-इमरान : 133-134 2. आले-इमरान : 159 3. अश्शूरा : 37

(1) बड़े गुनाह से बचना

(2) ग़ुस्से की हालत में कोई उनका अधिकार हनन कर जाए तो इसको माफ़ कर देना।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के व्यावहारिक जीवन में अफ़्व और दरगुज़र

क़ुरआन की वह आयतें जो आपके अनुयायियों को अफ़्व और दरगुज़र की शिक्षा देती हैं। उन आयतों की छाप आपके व्यवहारिक जीवन में जगह-जगह नज़र आती है। आपका जीवन माफ़ कर देने और अनदेखा करने के सुन्दर गुणों का रंगा-रंग गुलदस्ता था। दुश्मनों, दोस्तों, मुनाफ़िक़ों और दूसरे लोगों के लिए जो भी कुछ ग़लत करता उसके लिए माफ़ी थी।

अफ़्व और दरगुज़र की कुछ सुन्दर घटनाएँ :

(1) क़ुरैश को आम माफ़ी : आप (सल्ल०) को मक्का में नुबूवत से सम्मानित किया गया। आपने ऐलान किया कि मैं सारे आलम के लिए रसूल हूँ। फिर क्या था मक्का के लोगों, (क़बीला क़ुरैश) की ओर से हर तरह के युद्ध का आरंभ कर दिया गया। पहले गालियाँ, संदेह पैदा करना, आपके मानने वालों को तरह-तरह की यातनाओं का निशाना बनाना। फिर बनी-हाशिम (जो आपके सगे थे) का सामाजिक और आर्थिक बायकॉट करना। सभी मक्का के निवासियों को बनी-हाशिम से ख़रीद-बिक्री, शादी-विवाह और हर तरह के सम्बन्ध की समाप्ति तीन वर्षों तक जारी रही। वे मौत के मुँह में पहुँच गए, पेड़ों की छाल और चमड़ा खाने पर मजबूर हो गए। जब प्रतारण की हद हो गई तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथियों ने हब्शा की ओर कूच किया। उसके बाद दूसरी हिजरत मदीना मुनव्वरा की ओर हुई। मक्कावालों ने उनकी सारी जायदाद, घर और सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया। फिर उनसे युद्ध शुरू हो गई। आप (सल्ल०) के मानने वालों की संख्या बढ़ती गई । शक्ति भी बढ़ गई । मक्का मुकर्रमा में विजयी प्रवेश हुए। जब मक्का विजय हो गया तो मक्का वालों को जमा किया । मक्का के डरे-सहमे लोगों ने सोचा कि आज तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सारे ग़मों, ज़ख़्मों और अत्याचार का हिसाब चुकाएँगे, जिनका

उनको और उनके साथियों और रिश्तेदारों को सामना करना पड़ा था। लेकिन रसूले-रहमत ने उन सबको अपनी रह्मदिली से हैरत में डाल दिया। इन पर क़ाबू पाने के बाद माफ़ी का आम ऐलान कर दिया और ऐलान किया जो अबू सुफ़ियान की हवेली में प्रवेश हो जाए उसे शांति है, जो मस्जिदे-हराम में आ जाए उसे शांति है, और जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर ले उसे शांति है।[1]

(2) बड़े काफ़िर योद्धाओं को माफ़ी : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने क़ुरैश के बड़े-बड़े योद्धाओं को माफ़ कर दिया जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ नेतृत्व करते थे। उनमें सबसे ऊपर ख़ालिद बिन वलीद थे, जो उह्द के युद्ध में काफ़िर फ़ौज के सेनापति थे, और वक़्ती तौर पर काफ़िरों को मुसलमानों पर ग़लबा भी प्राप्त हो गया था। इसी तरह अम्र बिन आस और इक्रिमा बिन अबू जेहल। इक्रिमा का बाप अबू जेहल अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का सख़्त दुश्मन था। इक्रिमा बीस साल तक बराबर आपके ख़िलाफ़ लड़ते रहे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसका ख़ून जायज़ क़रार दिया था। लेकिन जब उनकी मुसलमान पत्नी उम्मे-हकीम ने उन्हें अमान दे दी तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने माफ़ फ़रमा दिया। सुराक़ा बिन मालिक अरब के मशहूर शहसवार, यह वही हैं जिन्होंने मदीना की ओर हिजरत के दौरान आप (सल्ल०) को पा लिया था, लेकिन जब आप (सल्ल०) ने उन पर क़ाबू पा लिया तो माफ़ कर दिया। ये अमीर बिन वह्ब हैं जो युद्ध से पहले युद्ध के शोले भड़काया करते थे। वह मदीना मुनव्वरा में नबी (सल्ल०) की हत्या के इरादे से गए। जब राज़ खुला और पकड़े गए, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन्हें माफ़ कर दिया और यह माफ़ी उनके और दूसरे बहुत से लोगों के लिए इस्लाम लाने का ज़रिया बनी।

(3) हत्या की कोशिश करने वाले को माफ़ी : बहुत से लोगों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हत्या करने की कोशिश की लेकिन अल्लाह ने आप (सल्ल०) की रक्षा की और उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ हो गईं। जिन लोगों ने आप (सल्ल०) की हत्या करने की कोशिश की उनमें से ज़्यादातर को आप (सल्ल०) ने माफ़ कर दिया। इस तरह की माफ़ी की एक वृत्तांत इस तरह है। आप (सल्ल०) के एक सहाबी जाबिर बिन अब्दुल्लाह ग़ज़वे से आपके साथ वापस आ रहे थे। वापसी के समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सेना

1. फ़िक़्ह अल-सीरह : 377

के साथ आराम करने के लिए पड़ाव डाला। एक वृक्ष के नीचे लेट गए और तलवार वृक्ष पर लटका दी। हम सब सोए हुए थे। अचानक अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हमें आवाज़ देने लगे। उस समय एक बद्दू आपके पास था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बताया कि मैं सो रहा था कि उसने मेरी तलवार मेरे ऊपर तान ली। मेरी आँख खुल गई तो नंगी तलवार उसके हाथ में थी। उस बद्दू ने मुझ से कहा बताओ तुमको मुझ से कौन बचाएगा? मैंने तीन बार कहा अल्लाह।

एक रिवायत में आया है कि तलवार उसके हाथ से गिर गई तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने तलवार उठा ली, फिर पूछा कि अब बताओ मुझ से तुझे कौन बचाएगा ? तो उसने कहा आप तलवार लेने वाले बेहतर साबित हों।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा क्या तुम यह गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? उसने कहा नहीं। लेकिन वादा करता हूँ कि आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ युद्ध में शरीक नहीं रहूँगा। आप (सल्ल०) ने उसे छोड़ दिया। आप (सल्ल०) ने उसे सज़ा नहीं दी।[1]

(4) चचा के क़ातिल को माफ़ी : हज़रत हमज़ा मुहम्मद (सल्ल०) के सगे चचा थे और शुरुआती दिनों में जिन लोगों ने आप (सल्ल०) का बचाव किया, उनमें से थे। वह आप (सल्ल०) के सख़्ततरीन दुश्मन के सामने लोहे की दीवार बनकर खड़े हो जाते थे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उनसे अत्यधिक मुहब्बत करते थे। अरब के शहसवारों में भी वे महत्वपूर्ण थे और सामरिक विद्या के माहिर थे। मिसाली बहादुरों में उनकी गिनती होती थी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उनको हमेशा युद्ध में आगे रखते। इस्लाम के दुश्मनों के साथ पहले युद्ध के नायक वही थे। बद्र के युद्ध में बहादुरों की तरह लड़े और न जाने दुश्मनों के कितने सर उड़ा दिए। इसलिए वे नज़र में आ गए। मक्का के काफ़िर मौक़ा के इंतिज़ार में थे कि हमज़ा के हाथों मरने वालों का बदला ले सकें। उहद के युद्ध में उन्हें यह मौक़ा मिल गया, जिसमें एक वहशी नामी ग़ुलाम ने उन्हें शहीद कर दिया, ताकि इसके बदले में उसे ग़ुलामी से आज़ादी मिल जाए। चचा मुहतरम की जुदाई से आप बहुत दुखी हुए और उनको सय्यदुश्शुहदा के लक़ब से नवाज़ा।

---

1. बुख़ारी : 9915, अहमद :14929

रसूल (सल्ल०) और पर्यावरण

जिस फ़िज़ा और माहौल में हम जीवन गुज़ार रहे हैं उसकी रक्षा की मुहम्मद (सल्ल०) ने बड़े पैमाने पर व्यवस्था की। आपने रास्तों, पेड़ों, कुओं, नदियों और समुद्रों की रक्षा के बारे में हिदायते दीं, क्योंकि माहौल के रख-रखाव का ख़याल रखना विकसित समाज की अहम ख़ूबियों में से है।

(1) पानी और हवा

हमारे माहौल को जो चीज़ दूषित करे, वह पानी हो कि हवा या रास्ते तो वह माहौल की ख़राबी का ज़रिया और अल्लाह के रसूल की शिक्षाओं के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा दो लानत-ज़दा लोगों से बचो। पूछा गया वे कौन हैं? कहा एक तो वह जो लोगों के रास्ते में मल-मूत्र करे। दूसरा वह जो ऐसे साये में, जहाँ लोग बैठते हों, मल-मूत्र करे।[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ऐसे काम से लोगों को बचाना चाहते हैं जो लोगों के लॉन-तान का ज़रिया बनें, और तकलीफ़ पहुँचाए। ये हरकत गंदी और पिछड़ेपन का रूप है कि आम रास्ते और साये की जगहों पर पेशाब-पाख़ाना किया जाए।

(2) जल प्रदूषण

इन्सानों के लिए अल्लाह की बड़ी नेमत पानी है। यह जीवन का साधन है। पानी को दूषित करना या ख़राब करना बड़ा अपराध है। इसकी वजह से बीमारियाँ फैलती हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "ठहरे हुए पानी में

1. मुस्लिम : 269

कोई पेशाब न करे। न यह कि उसी में पेशाब करे और फिर उसी में स्नान करे। ज़ाहिर है इससे बीमारियाँ पैदा होंगी और महामारी का रूप ले लेंगी। इससे पानी की रंग और गंध बिगड़ जाता है, उसकी पवित्रता भी ख़त्म हो जाएगी।

(3) पानी में अपव्यय का निषेध

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने अनुयायियों को पानी के इस्तेमाल में संतुलन की शिक्षा दी है और अपव्यय से रोका है, ताकि पानी की सुरक्षा हो सके और पानी जैसी नेमत की क़द्र हो सके।

इमाम अहमद और इब्ने माजा की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल का गुज़र साद के पास से हुआ वे वुज़ू कर रहे थे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा "साद यह अपव्यय क्यों?"

साद ने अर्ज़ किया, "या अल्लाह के रसूल (सल्ल०), क्या वुज़ू में भी अपव्यय है?"

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जवाब दिया क्यों नहीं, "तुम बहती नदी में वुज़ू करो तो भी अपव्यय न करो।"[1]

हज़रत साद (रज़ि०) नमाज़ जैसे मुक़द्दस फ़रीज़े के लिए वुज़ू कर रहे थे, लेकिन आपने उनको ध्यान दिलाया और बुनियादी उसूल याद दिलाया कि फ़ुज़ूलख़र्ची और अपव्यय से बचें और पानी जैसी महान नेमत की रक्षा करें।

(4) वृक्षारोपण को प्रोत्साहन

वृक्षारोपण के प्रोत्साहन की आपसे पहले किसी ने शिक्षा नहीं दी थी। पांचवीं सदी ईसवी में वृक्षारोपण के ज़रिये शहर की सजावट और उसकी अहमियत की सोच आपने दी। उसके फ़ायदे में ऑक्सीजन की उपलब्धता, पक्षियों के लिए आकर्षण और उनके भोजन की उपलब्धता होती है, फिर जिस रेगिस्तानी माहौल में आप रह रहे थे, उसे और रेगिस्तानी बनाने से रोकना था। इसके लिए मुहम्मद (सल्ल०) ने सहाबा को वृक्षारोपण की हिदायत दी और इस पर अल्लाह की ओर से बदला पाने की उम्मीद दिलाई। आपने कहा जो

1. अल-सहीहा : 860/7, अलबानी ने सही कहा

मुसलमान पेड़ लगाता है या खेती करता है फिर उस में से कोई पक्षी, इन्सान या जानवर कुछ खा लेता है तो वह उसके लिए सदक़ा में गिना जाता है ।[1]

दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "जिसने बंजर ज़मीन को उपजाऊ बनाया तो इसका उसे इनाम मिलेगा और ज़मीन की उत्पादन में से किसी इन्सान, जानवर या पक्षी ने खाया तो वह उसके लिए सदक़ा होगा।

मुहम्मद (सल्ल०) इस तरह लोगों को वृक्षारोपण पर आमादा करते हैं और दुनया के इसकाम को आख़िरत के इनाम से जोड़ देते हैं।

(5) रास्ते की सफ़ाई और रक्षा

नबी (सल्ल०) माहौल की सौंदर्य और रक्षा के लिए रास्तों की सफ़ाई को बुनियादी हैसियत देते और इसकी व्यवस्था करते । आप (सल्ल०) ने कहा, "ईमान के सत्तर से ज़्यादा विभाग हैं। उनमें सबसे बेहतर यह कहना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। और सबसे कमतर रास्ते से कष्टदायक चीज़ का हटाना है और शील ईमान का एक विभाग है।[2]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कष्टदायक चीज़ की व्याख्या नहीं की बल्कि कहा कि जो चीज़ भी इन्सान के लिए कष्टदायक हो और रास्ते को ख़राब कर दे, उसे हटा देना और मिटा देना ईमान का तक़ाज़ा है। आप ऐसे समाज की कल्पना कीजिए जिसके रास्ते की सफ़ाई और रुकावटों को दूर करने में सारे लोग एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हों। सरकारी मिशनरी से पहले ही कार्रवाइयाँ होने लगती हों, तो उस समाज की हालात कितनी बेहतर होगी।

एक हदीस में आया आप (सल्ल०) ने एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख किया जिसको अल्लाह ने रास्ते की कष्टदायक चीज़ें हटाने की वजह से जन्नत में प्रवेश दे दिया। एक व्यक्ति का गुज़र हुआ उसे रास्ते पर एक वृक्ष की शाखा मिली। उसने सोचा ख़ुदा की क़सम मैं इसको लोगों की तकलीफ़ के आशंका से ज़रूर एक किनारे करूँगा, तो अल्लाह ने उसे जन्नत में प्रवेश कर दिया।[3]

– – – – –

1. बुख़ारी : 2320 2. मुस्लिम : 35 3. बुख़ारी : 2472, मुस्लिम : 1914

रसूल (सल्ल०) और सफ़ाई

हम दुनिया और यूरोप की सफ़ाई के विषय में पाँचवीं सदी ईसवी की हालात के बारे में बात-चीत नहीं कर रहे हैं, बल्कि बीसवीं सदी के आरंभ में सफ़ाई-सुथराई का क्या स्तर था, उसका उल्लेख यूरोपीय लेखकों के हवाले से कर रहे हैं।

हंगरी के लेखक सांदूर माराए (Sandor-marai) (1900-1989) जो उपन्यासकार, लेखक और शायर थे वे अपनी किताब, "Confesiones De Un Burgues" (एक बुर्जुआ की स्वीकारोक्ति) में लिखते हैं "मालदारों के महलों में स्नानघर केवल सजाट के लिए होते और अधिकतर मालदारों और समृद्ध लोगों को पानी की याद केवल त्योहारों के मौक़ा पर आती थी, बल्कि वे लोग तो कभी साल में एक बार स्नान करते। यह तो तय है कि यूरोपवालों के बदन से आने वाली बदबू असह्य होती थी।

सांदूर माराए उसी किताब में दूसरी जगह लिखते हैं, "यूरोपीय पूँजीपति वर्ग के लोग उन्नीसवीं सदी के आख़िर तक जब बीमार होते तब स्नान करते या अपनी शादी के मौक़ा पर स्नान करते थे।[1]

इस संक्षिप्त जायज़े में यूरोप की सामाजिक व्यवस्था के सभी क्षेत्रों का उल्लेख नहीं है, बल्कि लेखक ने केवल समृद्ध और मालदार वर्ग का उल्लेख किया है। यह वर्ग सफ़ाई के सामान तक अपनी पहुँच रखता था, उसके बावजूद उनकी यह हालत थी, तो पिछड़े वर्ग जिनको सफ़ाई के साधन प्राप्त न थे उनकी हालत कितनी बदतर रही होगी।

आइए हम देखते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पाँचवीं सदी में

---

1. एतिराफ़ात बरजवाज़ी

समाज में सफ़ाई के सिद्धांतों की कैसी मज़बूत बुनियादें रखीं और क्या आदेश जारी किए। किन शिक्षाओं की प्रेरणा दी और ताकीद की और वे शिक्षाएँ दीन का हिस्सा क़रार पाईं।

क़ुरआने-करीम में सफ़ाई के इशारे

आंतरिक और बाहरी सफ़ाई की व्यवस्था के बारे में क़ुरआने-करीम में कई इशारे और आयतें हैं और लिबास की सफ़ाई के बारे में साफ़-साफ़ आदेश आया है। अल्लाह ने कहा :

"और अपने कपड़े पाक रखो।"[1]

अल्लाह ने नबी (सल्ल०) को लिबास की सफ़ाई की प्रेरणा दी है, क्योंकि अल्लाह पाकी को पसन्द करता है। मस्जिदे-क़ुबा के लोगों की कुछ ख़ूबियों के आधार पर उनकी तारीफ़ की गई है। उनमें से एक ख़ूबी यह थी कि उनके शरीर, उनके लिबास और उनकी रूहें पाक थीं। अल्लाह ने कहा :

"तुम कभी भी उसमें खड़े न होना। वह मस्जिद जिसकी आधारशिला पहले दिन ही से ईशपरायणता पर रखी गई है, वह इसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं, जो अच्छी तरह स्वच्छ रहना पसन्द करते हैं, और अल्लाह भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।"[2]

जब पत्नी माहवारी के दौर से गुज़र रही हो तो जब तक पाक न हो जाए उस समय तक उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करने से क़ुरआने-करीम ने मना किया है, क्योंकि इस्लाम हर चीज़ में सफ़ाई पसन्द करता है। अल्लाह ने कहा :

"और वे तुमसे मासिक-धर्म के विषय में पूछते हैं। कहो, "वह एक तकलीफ़ और गन्दगी की चीज़ है। अतः मासिक-धर्म के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो और उनके पास न जाओ, जबतक कि वे पाक-साफ़ न हो जाएँ। फिर जब वे भली-भाँति पाक-साफ़ हो जाएँ, तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है, उनके पास आओ। निस्संदेह

---

1. अल-मुदस्सिर : 4 2. अत-तौबा : 108

अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और वह उन्हें पसन्द करता है जो स्वच्छता को पसन्द करते हैं।"[1]

क़ुरआने-करीम ने हर नमाज़ के समय वुज़ू का आदेश दिया। वुज़ू में चेहरा, दोनों हाथ कोहनियों सहित और दोनों पैर टख़नों तक धोए जाते हैं। सर का मसह किया जाता है, ताकि इन्सान अल्लाह के सामने पेश हो तो साफ़-सुथरा पेश हो। अल्लाह ने कहा :

"ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिरों पर हाथ फेर लो और अपने पैरों को भी टख़नों तक धो लो। और यदि नापाक हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। परन्तु यदि बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच करके आया हो या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो। उसपर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो। अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता। अपितु वह चाहता है कि तुम्हें पवित्र करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी कर दे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।"[2]

सफ़ाई के सिलसिले में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की प्रेरणा

सफ़ाई और पाकी के बारे में क़ुरआनी इशारे जहाँ मौजूद हैं वहीं बहुत सारे मामलों में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इन इशारों को विस्तार से बयान किया है।

(1) वुज़ू

वुज़ू नमाज़ से पहले ज़रूरी है। अरब क़बीले जो कि सफ़ाई को कोई अहमियत नहीं देते थे, वुज़ू के इस आदेश ने उनके यहाँ मौजूदा सफ़ाई की धारणा में एक बड़ी क्रांति ला दी। सफ़ाई के मामले में उनका हाल भी वही था, जो पाँचवीं सदी ईसवी के दौरान दुनिया के सभी क्षेत्रों का था। दिन-रात में मुसलमान पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। इसलिए पाँच बार हर दिन वुज़ू करने पर

1. अल-बक़रा : 222 2. अल-मायदा : 6

मुसलमान मजबूर होता है, जिसके नतीजे में मुसलमान पूरे दिन साफ़-सुथरा रहता है और उसके शरीर और खुले हिस्से पर जो गंदगी और धूल गर्द और ग़ुबार की जो तह जम जाती है वह साफ़ होती रहती है।

वुज़ू की अहमियत के बारे में कई हदीसें आई हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"जिसने वुज़ू किया और सलीक़े से किया तो गुनाह उसके शरीर से निकल जाते हैं, यहाँ तक कि इसके नाख़ुनों के नीचे से भी निकल जाते हैं।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया :

"साबित-क़दम रहो, और तुम सभी भलाइयों का अहाता नहीं कर सकते लेकिन यह जान रखो कि तुम्हारे कर्म में सबसे बेहतर नमाज़ है, और वुज़ू की पाबंदी तो ईमानवाला ही करता है।"[2]

वुज़ू की हिकमतें

वुज़ू की हिक़मतों और उसके वैज्ञानिक फ़ाइदों के बारे में क़ुरआन और सुन्नत में वैज्ञानिक चमत्कार के शोधकर्ता अब्दुद्दायम कहील लिखते हैं "वुज़ू के मेडिकल लाभ के बारे में वैज्ञानिक खोजों ने क्या रहस्योद्घाटन किए हैं।

(1) **कुल्ली :** इन्सान के मुँह के हर हिस्से में, ज़ुबान पर, दाँतों पर स्लाइवा के रूप में जो कीटाणु होते हैं कुल्ली करने से साफ़ हो जाते हैं।

कुल्ली करने के लिए मुँह के अन्दर पानी प्रवेश करने से मसूड़ों की बीमारियों, इन्फ़ेक्शन और दाँतों की सड़न से सुरक्षा होती है। मुँह और चेहरे के पुट्ठों को मज़बूती प्राप्त होती है और सांस की नली के इन्फ़ेक्शन से रक्षा होती है।

(2) **नाक में पानी डालना :** नाक धोना और पानी डालना नाक में पाए जानेवाले कीटाणु को ख़त्म करता है। इसलिए जो नियमित वुज़ू करता है उसकी नाक हर तरह के कीटाणुओं से मुक्त रहती है। इससे नाक विभिन्न

1. मुस्लिम : 245 2. इब्ने-माजा, अलबानी ने सही कहा

बीमारियों से और श्वसन तंत्र में कीटाणुओं के प्रवेश से बची रहती है।

(3) **चेहरा धोना :** चेहरा धोने से चेहरे की खाल में ताज़गी और रौनक़ आती है और चेहरा कीटाणुओं और धूल आदि से मुक्त हो जाता है।

चेहरा की बेहतरीन धुलाई आँखों को कीटाणुओं और धूल आदि से छुटकारा दिलाती है और हर तरह के इन्फ़ेक्शन से बचाती है। चेहरे और हाथों का धोना खाल पर पसीने के प्रभाव को दूर करता है और त्वचा के सुराख़ों को खोलता है ताकि त्वचा अच्छी तरह साफ़ हवा ले सके। इसके अलावा हाथों और चेहरे की त्वचा पर जमा होने वाली चिकनाई दूर हो जाती है, जिसके शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव होते हैं।

(4) **पैरों को धोना :** दोनों पांवों को रगड़ कर धोना उस जगह की त्वचा को पांवों के फंगस और कई दूसरी बीमारियों से बचाता है।

बेशक चेहरे, दोनों हाथों और पैरों का धोना और रगड़ना त्वचा के नीचे पाई जाने वाली नसों में ख़ून के बहाव को बेहतर करता है, जिसका मनोदशा पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और मन की शांति में वृद्धि होती है।

त्वचा के ऊपरी हिस्से पर चिकनाई के रिसाव की एक स्थायी प्रक्रिया जारी रहती है। यह चिकनाई हवा में मौजूद बैक्टीरिया को चिपका लेती है, जिससे बैक्टीरिया तेज़ी से फैलने लगते हैं। नियमित रूप से वुज़ू करना एक प्रभावशाली मेडिकल तरीक़ा है जो इन कीटाणुओं को नष्ट करके इन्सान को सुरक्षा देता है। शरीर के दोनों ओर में हाथ और पांव वे अंग हैं जहाँ ख़ून का प्रवाह कम होता है और इसकी वजह यह है कि हाथ-पैर आदि ख़ून की सप्लाई के केंद्र, यानी दिल से दूर हैं। अध्ययन ने यह साबित कर दिया है कि हाथ-पैर को धोना और अच्छी तरह रगड़ना ख़ून के प्रवाह को बढ़ाता है और शरीर की रोग निरोधक शक्ति और फुर्ती में इज़ाफ़ा करता है।

इस तरह एक नई खोज से पता चलता है कि वुज़ू के दौरान इन्सान का पानी इस्तेमाल करना बेचैनी और तनाव को दूर करता है।[1]

---

1. कहील अब्दुद्दायम www.kaheel7.com/ar

(2) स्नान

मानव शरीर की सफ़ाई की एक सूरत स्नान है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ईमानवालों को इसकी शिक्षा दी है। स्नान की दो क़िस्में हैं–वाजिब (अनिवार्य) और मुस्तहब (पसन्दीदा)। वाजिब स्नान उसे कहते हैं जिसके बिना नमाज़ सही नहीं होती और मुस्तहब स्नान उसे कहते हैं जिसके बिना नमाज़ तो ठीक हो जाती है, लेकिन उससे पाकी और सफ़ाई में इज़ाफ़ा होता है।

वाजिब स्नान : वाजिब स्नान की भी कई क़िस्में हैं, जैसे जनाबत स्नान, हैज़ स्नान, नफ़ास स्नान और मय्यत स्नान, आदि

(1) **जनाबत स्नान :** यौन सम्बन्ध के दौरान पति-पत्नी की मणि निकलने के बाद स्नान वाजिब हो जाता है। क़ुरआन में है :

"यदि नापाक हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ।"[1]

(2) **हैज़ स्नान :** जब हैज़ का पीरियड पूरा हो जाए, तो औरत पर स्नान वाजिब है, ताकि वह ख़राब ख़ून के निकलने के बाद पाकी व सफ़ाई प्राप्त कर ले। क़ुरआन में है :

"और वे तुमसे मासिक-धर्म के विषय में पूछते हैं। कहो, "वह एक तकलीफ़ और गन्दगी की चीज़ है। अतः मासिक-धर्म के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो और उनके पास न जाओ, जब तक कि वे पाक-साफ़ न हो जाएँ।"[2]

(3) **नफ़ास स्नान :** बच्चे को जन्म देने के बाद कुछ अरसा आने वाले ख़ून को नफ़ास कहते हैं, जिसका पीरियड चालीस दिन तक हो सकता है। इस दौरान ख़ून बराबर निकलता है। जब बंद हो जाता है तो स्नान वाजिब होता है। उसके बाद ही औरत नमाज़ पढ़ सकती है।

(4) **मय्यत स्नान :** मुर्दे को स्नान देना ज़रूरी है।

(2) **मुस्तहब स्नान :** मुस्तहब काम करना बेहतर है, न करने में गुनाह नहीं है। मुस्तहब की कई क़िस्में हैं। जिनमें से कुछ ये हैं :

---

1. अल-मायदा : 6   2. अल-बक़रा : 222

(1) **जुमा स्नान :** जुमा की नमाज़ की तैयारी के लिए स्नान करना मुस्तहब है।

(2) **एहराम स्नान :** हज या उमरा शुरू करने से पहले स्नान करना मुस्तहब है।

(3) **ईदैन स्नान :** दोनों ईदों (ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा) की नमाज़ से पहले स्नान करना मुस्तहब है।

(3) बर्तनों को ढाँकना

चौदह सौ साल पहले जब कीटाणु और वाइरस की जानकारी भी नहीं हुई थी, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बर्तनों को ढाँकने का आदेश दे रहे हैं, ताकि खाने-पीने की चीज़ें धूल आदि और कीट-पतंगों से सुरक्षित रहें। कीटाणु के प्रदूषण और महामारियों के फैलने से रक्षा हो। स्पष्ट रहे कि इस समय मेडिकल साइंस के सावधानी के मौलिक उपायों में इनकी गिनती होती है।

अबू-हमीद साअदी ने रिवायत की है कि मैं तकसीअ के मक़ाम से एक प्याला दूध खुला हुआ लेकर नबी (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुआ। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा इसे ढक कर क्यों न लाए। एक लकड़ी ही इस पर रख लेते।

अबू-हमीद कहते हैं कि यह आदेश दिया गया है कि रात में मश्क बांध दी जाए। दरवाज़े बंद कर दिए जाएँ।[1] और दूसरी हदीस में है कि बर्तनों को ढक दो, मश्क बांध दो।[2] यह एक उमूमी मार्गदर्शन है कि हर वह बर्तन जिसमें खाने की चीज़ रखी जाए ढक दिया जाए ताकि बीमारियों के फैलने से रक्षा हो सके।

(4) छींक आने पर मुँह ढकना

बहुत-सी बीमारियाँ छींक से निकलने वाली बूँदों के ज़रिये फैलती हैं, इसलिए आपने छींक के ज़रिये बीमारियाँ फैलाने से सख़्ती से मना किया है और छींक के दौरान चेहरा ढाँकने का आदेश दिया है। हदीस में आया है कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) छींकते तो हाथ या रूमाल से चेहरे को ढाँप लेते और इसके ज़रिये से आवाज़ नीची कर देते।[3]

---

1. मुस्लिम : 2010   2. बुख़ारी : 3314   3. तिर्मिज़ी : 2745

(5) कोरंटाइन

संक्रामक रोग फैलने के समय कुछ अहम मेडिकल और सुरक्षा उपाय :

(1) संक्रामक रोग के इलाक़े में जाने से परहेज़।

(2) संक्रामक रोग के इलाक़े से निकलने से परहेज़।

(3) जो लोग बीमारी से सुरक्षित हैं उनसे न मिलना।

(4) आने वालों से न मिलना।

ये हिदायात अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की शिक्षाओं में चौदह सौ साल पहले से मौजूद हैं। हदीस में आया है कि जब तुम सुनो कि किसी इलाक़े में ताऊन आया है, तो वहाँ न जाओ और जिस इलाक़े में तुम हो वहाँ आ जाए तो वहाँ से न निकलो।[1]

संक्रामक रोग के शिकार इलाक़े से निकलने से बड़ी सख़्ती से मना किया और निकलने वाले को दुश्मन के साथ युद्ध से फ़रार होने वाले भगोड़े की तरह क़रार दिया है। कहा 'ताऊन एक गिलटी है, ऊँट की गिलटी की तरह है ठहरने वाला शहीद की तरह है और भागने वाला पीठ फेर कर युद्ध से भागने वाले की तरह है।[2]

अमेरिका के न्यूयार्क मैगज़ीन ने 17 मार्च 2020 को कोरोना के बारे में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें उन हदीसें का उल्लेख किया गया है जो कोरंटाइन और संक्रामक बीमारियों से बचाव के बारे में आई हैं। उसके लेखक क्रेग कोंसिडेन हैं, जो राईस यूनीवर्सिटी के समाजशास्त्र विभाग के शोधकर्ता और प्रोफ़ेसर हैं । यह रिपोर्ट मैगज़ीन की वेबसाइट पर प्रकाशित की गई है जिसका शीर्षक था, "क्या केवल दुआ और नमाज़ की शक्ति संक्रामक बीमारी को रोक सकती है? यहाँ तक कि मुहम्मद (सल्ल०) की राय भी विभिन्न थी। डॉक्टर राइस ने कहा कि रोगनिरोधक शक्तियों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर नथूनी मौसी और संजय गुप्ता जैसे मेडिकल रिपोर्टर्ज़ का कहना है कि बेहतर निजी पाकी व सफ़ाई और क़ोरंतीना कोविड 19 पर क़ाबू पाने के बेहतरीन तरीक़े हैं।

लेखक आगे लिखते हैं क्या आप जानते हैं कि संक्रामक रोग के दौरान

---

1. बुख़ारी : 5728 2. मुस्नद अहमद : 3948

कोरंटाइन और व्यक्तिगत सफ़ाई का सुझाव किसने पेश किया? वह व्यक्तित्व चौदह सौ साल पहले दुनिया में आने वाले इस्लाम के नबी मुहम्मद (सल्ल०) हैं, जिस समय घातक व संक्रामक बीमारियों के बारे में मामूली जानकारी रखने वाला भी कोई नहीं था, उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कोविड-19 जैसी संक्रामक बीमारियों के मुक़ाबले और बचाव के सुझाव दिए। कोंसिडेन ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की वह हदीस नक़्ल की जिसमें आपने कहा है कि जब सुनो कि किसी इलाक़े में ताऊन आया है तो वहाँ न जाओ और जहाँ तुम हो वहाँ ताऊन आ जाए तो वहाँ से न निकलो।

इसी तरह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बताया कि संक्रामक बीमारियों के शिकार लोगों को, स्वस्थ लोगों से दूर रखे जाएँ।[1]

(6) प्राकृतिक नियम

प्राकृतिक नियमों से आशय शरीर की सफ़ाई-सुथराई के सिलसिले में नबी (सल्ल०) की वे शिक्षाएँ हैं जो पाँच बातों पर आधारित हैं। आप (सल्ल०) ने कहा पाँच चीज़ें इन्सान की फ़ितरत में से है। ख़तना करना, नाभी के नीचे के बाल मूंडना, बग़ल के बाल साफ़ करना, नाख़ुन काटना और मूँछें काटना।[2]

दूसरी रिवायत में है दस चीज़ें मानव फ़ितरत का हिस्सा हैं। मूँछें काटना, दाढ़ी रखना, दातुन करना, नाक में पानी डालना, उंगलियों के जोड़ों को धोना, बग़ल के बाल उखाड़ना, नाभी के नीचे के बाल मूंडना और पानी से इस्तिंजा (मल-मूत्र के बाद धोना) करना। रावी कहते हैं दसवीं चीज़ भूल गया, लेकिन हो न हो वह 'कुल्ली करना' है।[3]

यहाँ हम स्वास्थ्य से जुड़े उन साधनों को स्पष्ट करेंगे जो ऊपर दर्ज नबी (सल्ल०) की शिक्षाओं में पाए जाते हैं।

(1) मूछें काटना : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मूंछों के बारे में कहा, मूँछें काटो, और कहा मूँछें ख़ूब कतरो, और कहा मूछें इस तरह काटो कि खाल नज़र आए।

---

1. Graig Considine, News Week : 17/03/2020

2. बुख़ारी : 5887, मुस्लिम : 257 3. मुस्लिम : 261

इस आदेश का मतलब यह है कि मूँछें इतनी काटी जाएँ कि ऊपरी होंठ से न बढ़ें, मगर बिलकुल मूंडी न जाएँ, बल्कि इतनी तो हों कि देखकर लगे कि मूँछें मौजूद हैं।

मूंछों के काटने में स्वास्थ्य का जो महत्वपूर्ण लाभ है उसकी खोज वैज्ञानिक अध्ययन ने की है कि मुँह खुलने की जगह लंबी मूंछों से घिरी रहती है, जिसके बालों से कीटाणुओं की बड़ी संख्या चिपकी रहती है। फिर कीटाणु की यह दुनिया खाने-पीने के साथ मुँह में जाती रहती है और मूंछों के ताने-बाने में डेरा डाले रहती है जो ज़िंदा कीटाणुओं की वृद्धि के लिए अनुकूल माहौल होता है, जिससे बहुत-सी बीमारियाँ पैदा होती हैं।[1]

(2) दाँतों की सफ़ाई : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दातुन करने का आदेश दिया, जिसकी शक्ल यह होती है कि पीलू के वृक्ष की लकड़ी से दाँत साफ़ किए जाते हैं। दातुन पीलू (Persica Salvadoria) के वृक्ष की जड़ों या टहनियों से तैयार की जाती है। डॉक्टर मुहम्मद नज़ार कहते हैं :

> "दसियों आधुनिक अध्ययन के नतीजे मानव स्वास्थ्य के लिए दातुन के बड़े फ़ायदे साबित करते हैं। दाँतों और मसूड़ों को साफ़ करने में इसकी बड़ी भूमिका है। दातुन ऐसी चीज़ है जो ब्रश और पेस्ट दोनों का काम एक साथ करती है और इसके बारीक रेशे दाँतों की सफ़ाई के लिए बहुत उचित होते हैं। दातुन के अन्दर भारी मात्रा में ऐसे मवाद होते हैं, आधुनिक अध्ययन में जिनके लाभ बयान किए गए हैं, दातुन को टूथपेस्ट में भी शामिल किया गया है।[2]
>
> डॉक्टर हस्सान शम्सी लिखते हैं :
>
> "दातुन का इस्तेमाल करना, ख़ासतौर से हर नमाज़ के समय दाँतों को सड़ने से यक़ीनी तौर पर बचाता है। हर वक़्त उसकी वजह से सफ़ाई रहती है और दाँतों और मसूड़ों में तेज़ी से बढ़ने वाले कीटाणु का समाप्ति होता है।"[3]

---

1. Clinical Bacteriology, page : 80
2. नज़ार मुहम्मद, अरवानिअ अत्तिब अल-इस्लामी, पेज : 81
3. सौमव नसहवा, पेज : 68

(3) ख़तना : मर्द के लिंग की टोपी को ढाँपने वाली खाल को काट देने के कर्म को ख़तना कहते हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इसका आदेश दिया है। मेडिकल साइंस ने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ख़तना के विभिन्न फ़ायदों की खोज की है। ख़तना न होने की सूरत में लिंग की टोपी पर खाल रहती है। जिसमें गंदगी जमा होती रहती है और बैक्टीरिया और फंगस की पैदाइश होती रहती है, जो यौन सम्बन्धी बीमारियों की वजह बन जाती हैं। ख़तना लिंग को कैंसर से बचाने में मुख्य भूमिका निभाता है। मायो क्लीनिक की गाइडलाइन में मर्दों के ख़तना के चेप्टर के तहत ख़तने के अहम लाभ का उल्लेख है, जिनमें से कुछ हैं :

(1) निजी सफ़ाई में आसानी होती है। ख़तना होने की वजह से लिंग को धोना आसान होता है।

(2) पेशाब की नाली में इन्फ़ेक्शन के ख़तरे कम हो जाते हैं, जबकि जीवन के आरंभिक साय में पेशाब की नाली का इन्फ़ेक्शन बाद में गुर्दे की समस्या का कारण बन सकता है।

(3) यौन के माध्यम से फैलने वाले इन्फ़ेक्शन का ख़तरा कम हो जाता है।

(4) लिंग और उसके सिरे और टोपी की जलन और दूसरे रोगों से सुरक्षा हो जाती है।

(5) लिंग के कैंसर की संभावना भी कम हो जाती है।[1]

(4) नाख़ुन काटना : वैज्ञानिक अध्ययन ने यह साबित कर दिया है कि नाख़ुनों का न काटन और बढ़ाना नाख़ुनों के नीचे मैल और कीटाणु के जमा होने का ज़रिया बनता है, जिसके नतीजे में बदबू और इन्फ़ेक्शन पैदा होती है। फिर नाख़ुनों के नीचे जमा हुए कीटाणु पनपने लगते हैं और उनके लिए मुनासिब जगह होने की वजह से यह कीटाणु बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं और खाने के दौरान पूरे शरीर में फैल जाते हैं। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने नाख़ुन बढ़ाने से मना किया है। चूँकि यह गंदगी, ज़हर फैलाने और बीमारी का ज़रिया बनती है।

---

1. Mayoclinic.org/ar/tests-procedures/circumcision/about/pac

(5) नाभी के नीचे की सफ़ाई : नाभी के नीचे के बाल मूंडना, मर्द और औरत के लिंग के ऊपर उगने वाले बाल पेशाब और पाख़ाना के रास्तों से निकलने वाली निजासतों से गंदे हो जाते हैं और उस जगह पसीना भी बहुत होता है और गीलापन भी बहुत होता है।

– – – – –

रसूल (सल्ल०) और आज़ादी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का पैग़ाम और जो दीन अल्लाह की ओर से आप (सल्ल०) लेकर आए, उसकी बुनियाद आज़ादियों पर क़ायम है, इसलिए कि आज़ादी कामयाब शासन की बुनियाद है। ग़ुलामों को आज़ाद करने का आदेश अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दिया है और इसकी प्रेरणा दी है।

आज़ादी यह है कि इन्सान को अपने इरादे से जिस मैदान में और जिस शक्ल में चाहे उसको करने की अनुमति हो। क़ुरआन की शब्दावली में आज़ाद और ग़ुलाम की तुलना की गई है। अल्लाह का आदेश है :

> "ऐ ईमान लानेवालो! मारे जाने वालों के विषय में क़िसास (हत्यादंड) तुमपर अनिवार्य किया गया, स्वतंत्र-स्वतंत्र बराबर हैं और ग़ुलाम-ग़ुलाम बराबर हैं और औरत-औरत बराबर हैं। फिर यदि किसी को उसके भाई की ओर से कुछ छूट मिल जाए तो सामान्य रीति का पालन करना चाहिए; और भले तरीक़े से उसे अदा करना चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से एक छूट और दयालुता है। फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करे तो उसके लिए दुखद यातना है।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बाद दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एक सुनहरा कथन है :

> "तुमने कब से लोगों को ग़ुलाम बना लिया, जबकि उनकी माओं ने उन्हें आज़ाद पैदा किया है।"

बन्दगी केवल अल्लाह की है। किसी भी मख़लूक़ की बंदगी और ग़ुलामी से निकलना अस्ल आज़ादी है। इसी आज़ादी का पैग़ाम सारे आलम को

---

1. अल-बक़रह :178

रहमते-आलम ने दिया और अपने मानने वालों के दिलों में इसी को पक्का किया। यही है कलिमा ला-इलाह इल-लल्लाह का मतलब, जिसे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अल्लाह के आदेश लेकर आए थे। इस्लाम में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिन आज़ादियों की ख़ुशख़बरी दी है, उनमें से कुछ ये हैं :

(1) अक़ीदे की आज़ादी

क़ुरआन की इस आयत से अक़ीदे की आज़ादी के सिलसिले में मार्गदर्शन मिलती है :

"धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने, जानने वाला है।"[1]

इस आज़ादी का मक़सद यह है कि किसी यहूदी, ईसाई या किसी धर्म के मानने वाले को इसका धर्म छोड़ने और इस्लाम लाने पर मजबूर नहीं किया जाएगा। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मदीना आए तो आपने वहाँ आबाद यहूदियों और ईसाइयों को अपना मज़हब छोड़ने पर मजबूर नहीं किया, बल्कि उनको उनके अक़ीदे पर रहने दिया। इसी तरह उनकी इबादतगाहों को ध्वस्त नहीं किया। नबी अकरम (सल्ल०) सिपहसालारों को भी इसकी ताकीद करते थे। नबी (सल्ल०) के सच्चे ख़लीफ़ा भी इसी तरीक़े पर रहे। इस्लाम क़ुबूल करने के लिए किसी को मजबूर नहीं किया जाता।

(2) राजनीतिक और वैचारिक आज़ादी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मदीना की सोसाइटी में अपने विरोधियों यानी मुशरिकों और यहूदियों को राजनीतिक और वैचारिक आज़ादी की ज़मानत दी और इस्लाम के ख़िलाफ़ राय रखने पर भी किसी से सवाल-जवाब नहीं किया। यहाँ तक कि विरोधियों ने अल्लाह को फ़क़ीर और मुहताज तक

1. अल-बक़रा : 256

कहा। क़ुरआन में है :

"अल्लाह उन लोगों की बात सुन चुका है जिनका कहना है कि, "अल्लाह तो निर्धन है और हम धनवान हैं।"[1]

किसी ने मुसलमानों की दरिद्रता दूर करने में असमर्थ और कंजूस होने का अल्लाह पर इल्ज़ाम लगाया, जिसका उल्लेख क़ुरआन में है :

"यहूदी कहते हैं अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं।"[2]

कुछ दुश्मनों ने क़ुरैश के मज़हब और बुतपरस्ती को मुसलमानों और इस्लाम से बेहतर कहा। क़ुरआन ने इसका नक़्शा इस तरह खींचा है :

"क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? वे अवास्तविक चीज़ों और ताग़ूत (बढ़े हुए सरकश) को मानते हैं। और अधर्मियों के विषय में कहते हैं, "ये ईमान वालों से बढ़कर मार्ग पर हैं।"[3]

अल्लाह ने क़ुरआन में साफ़ अन्दाज़ में बताया है कि किताब वालों ने इस राजनीतिक और वैचारिक आज़ादी का इस्तेमाल धार्मिक बिगाड़ खड़ा करने और मदीना के दो बड़े क़बीलों, औस व ख़ज़रज को एकजुट होकर नबी (सल्ल०) के मुक़ाबले पर आमादा करने के लिए किया और आप (सल्ल०) के ख़िलाफ़ युद्ध की आग लगाई। क़ुरआन ने बताया :

"वे जब भी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। वे धरती में बिगाड़ फैलाने के लिए प्रयास कर रहे हैं, हालाँकि अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।"[4]

इसके अलावा भी नबी (सल्ल०) के ख़िलाफ़ राजनीतिक और वैचारिक मतभेद के नमूने मौजूद हैं जिनका उल्लेख क़ुरआने-करीम ने भी किया है। इसके बावजूद मुहम्मद (सल्ल०) ने विरोधियों की गतिविधियों पर रोक नहीं लगाई और उनकी कार्रवाइयों, बातों और ज़हरीले जुमलों को राजनीतिक व वैचारिक आज़ादी और सह-अस्तित्व में गिनते हुए अभिव्यक्ति की आज़ादी के ख़ाने में

---

1. आले-इमरान : 181
2. अल-मायदा : 64
3. अन-निसा : 51
3. अल-मायदा : 64

रखा। अल्लाह ने क़ुरआन में और उसके रसूल (सल्ल०) ने केवल इस बात पर बस किया कि विरोधियों के झूठ और उनके ग़लत दावों की पोल खोल दी और उनके छल और कपट का विरोध शांतिप्रिय साधन से किया और दलील और तर्क की ज़बान से उनकी बातों को काटा।

राजनीतिक और वैचारिक आज़ादी केवल अह्ले-किताब को प्राप्त नहीं थी, बल्कि मदीना मुनव्वरा के मूल निवासियों, यानी क़बीला औस व ख़ज़रज को भी प्राप्त थी। जिनकी बड़ी संख्या शिर्क में लिप्त थी और उनमें से कुछ लोगों ने मुनाफ़िक़ों का रूप ले लिया था। उन लोगों ने ख़ुद को मुसलमान ज़ाहिर किया और सीने में कुफ़्र छुपाए रखा। दूसरे सभी धार्मिक गिरोहों के मुक़ाबले में मुनाफ़िक़ों का यह तबक़ा मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा ख़तरा था। उनको भी मुहम्मद (सल्ल०) ने मौक़ा दिया और राजनीतिक मतभेद की आज़ादी दी।

इस राजनीतिक मतभेद की महत्वपूर्ण मिसाल मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई की भूमिका में मिलती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का एक ऐसी सभा में जाना हुआ, जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबई भी था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सभा में आए लोगों को सलाम किया, इस्लाम की दावत दी और क़ुरआने-करीम पढ़कर सुनाया। यह सब देखकर और सुनकर वह बोल पड़ा, सुनिए जनाब! आप जिसकी दावत देते हैं और जो कहते हैं अगर वह सच भी है तो आपका तरीक़ा अच्छा नहीं है। आप हमारी सभा में आकर हमको कष्ट न दें, अपनी जगह पर लौट जाइए, वहाँ आपके पास जो जाए उसे सुनाइए।

यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने ज़ोरदार आवाज़ लगाई, क्यों नहीं? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आप हमारी मजलिसों में तशरीफ़ लाइए, हम दिल और जान से पसन्द करते हैं। फिर तो मुसलमान, मुशरिक और यहूदी एक-दूसरे को बुरा-भला कहने लगे और क़रीब था कि लड़ पड़ते। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उन्हें शांति बनाए रखने की प्रेरणा देते रहे तो लोग चुप हुए। उसके बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपनी सवारी पर सवार हुए[1] और वहाँ से चले गए, लेकिन जिन लोगों ने आपका अपमान किया, झुठलाया और मज़ाक़ उड़ाया था, उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई का आदेश जारी नहीं किया, जबकि

1. बुख़ारी : 4566

आप (सल्ल०) मदीना के शासक थे। उसकी वजह यह थी कि आप इस हद तक वैचारिक आज़ादी पर यक़ीन रखते थे कि जब तक मतभेद वैचारिक व राजनीतिक सीमाओं में रहें और प्रशासन के ख़िलाफ़ बग़ावत या युद्ध की हद तक न पहुँचें, जब नौबत बग़ावत तक पहुँच जाए और उसे कुचलना ज़रूरी हो जाए तो फिर कार्रवाई ज़रूरी है और हथियार उठाने वालों के ख़िलाफ़ कार्रवाई अनिवार्य है, जैसा कि मुहम्मद (सल्ल०) ने कुछ समय बाद इस ओर क़दम उठाया।

मुनाफ़िक़ों और मुशरिकों की ओर से इस तरह का व्यवहार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ बार-बार किया जाता रहा, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किसी के ख़िलाफ़ कार्रवाई नहीं की, बल्कि उन्हें आपत्ति और मतभेद की खुली आज़ादी दी जब तक वे लोग सशस्त्र हिंसा पर न उतर आए।

राजनीतिक भागीदारी की आज़ादी

इस्लाम राष्ट्रीय व्यवस्था में तानाशाही का पक्षधर नहीं है, बल्कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हिदायतों में जो अहम बात हमें मिलती है वह यह है कि राजनीतिक मामलों में हर पक्ष की भागीदारी हो। आप राष्ट्रीय मुद्दों पर कोई आदेश या राय निजी तौर पर पेश न करते, बल्कि फ़ैसला करने से पहले अपने साथियों से मश्वरा करते, जैसा कि इस बारे में क़ुरआने-करीम का आदेश है :

“और उनका मामला उनके पारस्परिक परामर्श से चलता है।”[1]

इतना ही नहीं, बल्कि शूरा नाम की एक पूरी सूरह क़ुरआन में मौजूद है, जो यह बताती है कि इस्लाम में शूरा के उसूल को बुनियादी अहमियत प्राप्त है, और प्रशासन के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के इसी बुनियादी उसूल पर अमल करते थे, क्योंकि आपको निजी तौर पर फ़ैसला लेने से यह कहकर रोका गया :

“और दीन के मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो।”[2]

यानी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिस व्यवस्था पर भरोसा किया था

1. अश्शूरा : 38
2. आले-इमरान : 109

वह प्रबुद्ध व्यक्तियों पर आधारित एक समूह को बनाने से अस्तित्व में आता है, जिसमें समाज के चयनित लोग शामिल होते हैं। बुद्धि और विवेक, ज्ञान और अनुभव, अमानत और दियानत, बाख़बरी और महारत जैसे गुणों वाले होते हैं। युद्ध, राजनीतिक और सामाजिक मुश्किलों और अहम राष्ट्रीय मामलों के लिए कर्म का मार्ग तय करने के लिए जिसके बारे में क़ुरआन का कोई आदेश न होता तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) शूरा (सलाहकार समिति) से मश्वरा करते थे।

विभिन्न जंगों या सामाजिक मुश्किलों को हल करने के लिए आप (सल्ल०) ने कई बार सामूहिक मामलों में मश्वरा किया जिसकी कुछ झलकियाँ ये हैं :

(1) **ग़ज़वा-ए-बद्र :** मदीना मुनव्वरा आने के बाद मक्का मुकर्रमा के क़ुरैश के काफ़िरों से सबसे पहला युद्ध, 'ग़ज़वा-ए बद्र' होने जा रहा थी। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को पता चला कि क़ुरैश युद्ध के लिए निकल पड़े हैं, उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सहाबा से मश्वरा किया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सबसे क़रीबी सय्यदना अबू-बक्र ने राय पेश की। हज़रत उम्र और हज़रत मिक़दाद (रज़ि०) ने भी बात रखी। ये तीनों लोग मक्का के निवासी थे और मुहाजिर होकर आप (सल्ल०) के साथ आए थे, लेकिन आप (सल्ल०) मदीना के जो लोग थे, उनकी राय सुनना चाह रहे थे। इसलिए बार-बार कहते थे, ऐ लोगो मश्वरा दो। मदीना के लोगों को एहसास हो गया कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उन लोगों की राय जानना चाहते हैं, इसलिए मदीना वालों के सरदार हज़रत साद बिन मआज़ (रज़ि०) ने बात-चीत में हिस्सा लिया और मश्वरा दिया और आप (सल्ल०) को इत्मीनान दिलाया कि आप हमें जहाँ ले जाना चाहें हम उसके लिए तैयार हैं।

(2) **ग़ज़वा-ए-उहद :** अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को जैसे ही यह सूचना मिली कि क़ुरैश बद्र के युद्ध में हार का बदला लेने के लिए दुबारा युद्ध के लिए आ रहे हैं, आप (सल्ल०) ने सभी सहाबा से मश्वरा लिया। लोग दो हिस्से में बंट गए। एक समूह की राय यह थी कि मदीने से बाहर निकल कर उनसे मुक़ाबला किया जाए और यह राय उन लोगों की थी जो बद्र में

शरीक न हो सके थे, इसलिए इस युद्ध में शरीक होने और बाहर जा कर लड़ने पर ज़ोर दे रहे थे। दूसरे समूह का कहना था कि मदीना में रहकर बचाव और मुक़ाबला किया जाए। ये वे लोग थे जो बद्र में शरीक हो चुके थे और कुछ मुनाफ़िक़ों की राय भी यही थी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का रुझान भी इसी राय की ओर था। लेकिन जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने देखा कि अधिकतर की राय मदीना से बाहर निकल कर मुक़ाबला करने की है, तो आप (सल्ल०) ने उसी राय को अपनाया।

(3) **बद्र के क़ैदी :** जंगे-बद्र में क़ुरैश के सत्तर योद्धा क़ैदी बनाए गए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने दो क़रीबी साथियों, अबूबक्र और उमर (रज़ि०) से इस बारे में मश्वरा किया। उमर (रज़ि०) की राय क़ैदियों को मार डालने की थी और अबूबक्र (रज़ि०) की राय फ़िदया लेकर छोड़ने की हुई। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अबूबक्र की राय अपनाई और फ़िदया लेकर क़ैदियों को छोड़ दिया।

(4) **इफ़्क की घटना :** इफ़्क की घटना की तफ़सील यह है कि मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने लोगों में यह उड़ा दिया कि उसने ईमान वालों की माँ सय्यदा आइशा (रज़ि०) को एक व्यक्ति के साथ अकेले में देखा है। यह लांछन लगाकर वह क्या करना चाहता था, यह साफ़ था। ये अफ़वाह लोगों में फैल गई। इस बारे में सूरह नूर उतरी। अल्लाह ने कहा:

> "जो लोग तोहमत घड़ लाए हैं वे तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है। तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिस व्यक्ति ने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा अपने सिर लिया उसके लिए बड़ी यातना है।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर ये घड़ियाँ बड़ी सख़्त गुज़र रही थीं, इसलिए आप (सल्ल०) ने लोगों को मस्जिद में जमा करके ख़िताब किया और

1. अन-नूर : 11

आपकी पवित्र पत्नी के बारे में जो बात कही जा रही थी, उसके बारे में मश्वरा माँगा। आप (सल्ल०) ने कहा, "मुझे उन लोगों के बारे में मश्वरा दें जिन्होंने मेरी पत्नी पर तोहमत लगाई है। अल्लाह की क़सम, मैंने अपने घरवालों में कोई बुराई नहीं देखी। इन लोगों ने एक ऐसी हस्ती पर तोहमत लगाई है जिसके बारे में कभी मैंने कोई बुराई नहीं जाना। वह मेरी मौजूदगी के समय के अलावा कभी मेरे घर में प्रवेश नहीं होता। मैं कभी सफ़र के दौरान घर से ग़ैर-हाज़िर रहा तो वह भी मेरे साथ ही रहा।"[1]

मस्जिद के अन्दर ही औस और ख़ज़रज के बीच मतभेद हो गया। हर एक दूसरे पर आरोप लगाने लगा और हत्या की धमकी देने लगा। जब आप (सल्ल०) ने देखा कि दोनों समूह के बीच झगड़ा ज़्यादा हो रहा है, तो आप (सल्ल०) ने बीच-बचाव किया। फिर सबको ख़ामोश किया और चले आए।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जीवन में कठिन सामाजिक समस्या आती तो आप (सल्ल०) सभी मुसलमानों से आम मश्वरा करते। कुछ मश्वरे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) केवल विशेषज्ञों से करते थे, आम लोगों से नहीं। या अगर किसी मामले में तुरंत कार्रवाई की ज़रूरत होती तो विशेष मश्वरा करते थे। मिसाल के तौर पर :

(1) बदर के क़ैदियों के बारे में आप (सल्ल०) ने अबूबक्र और उम्र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से मश्वरा किया।

(2) औस के सरदार साद बिन मआज़ और ख़ज़रज के सरदार साद बिन उबादा (रज़ि०) से मदीना की ख़जूरों के बारे में मश्वरा किया।

(3) फ़ौज के सरदारों से उस समय मश्वरा किया जब मक्का विजय के लिए रवाना होते समय कुछ लोगों के बारे में ख़ियानत की शिकायत मिली। इस सिलसिले में किसी ने मुल्ज़िम की हत्या का मश्वरा दिया, तो किसी ने समझाने-बुझाने और इस्लाम के लिए उनकी पिछली सेवाओं को देखते हुए उन्हें माफ़ करने का मश्वरा दिया। जैसा कि हज़रत हातिब बिन अबू बलता के मामले में हुआ, जिन्होंने फ़ौजी राज़ मक्का भेज दिया था,

1. बुख़ारी : 4757

लेकिन मक्का पैग़ाम पहुँचने से पहले अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सूचना मिल गई। सबकी राय सुनने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की राय आई कि उनकी पिछली सेवाओं को नज़र में रखते हुए उन्हें माफ़ कर दिया जाए और आगे ऐसी ग़लती से बचने की हिदायत कर दी जाए।

(4) केवल एक व्यक्ति से मश्वरा लेना और वह आपकी पवित्र पत्नी उम्मे सलमा (रज़ि०) हैं। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मक्का के लोगों से हुदैबिया की संधि का इरादा किया और क़ुर्बानी का आदेश दिया, तो अधिकतर सहाबा ने इस आदेश का पालन नहीं किया। आप (सल्ल०) दुखी होकर उम्मे सलमा (रज़ि०) के पास गए और उनसे मश्वरा किया तो उन्होंने मश्वरा दिया कि आप (सल्ल०) ख़ुद सहाबा के सामने क़ुर्बानी का जानवर ज़ब्ह करें और बाल मुंडवाएं। जब वे देखेंगे तो आप (सल्ल०) का अनुसरण करेंगे। आप (सल्ल०) ने उनके मश्वरे का पालन किया, तो सभी आप (सल्ल०) के अनुसरण में अपना जानवर ज़ब्ह करने लगे।

पति के चयन की आज़ादी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने औरत को आज़ादी दी है कि जिससे शादी करना चाहती है, इसका चुनाव कर ले और जिससे नहीं चाहती उसके चुनाव पर उसे मजबूर न किया जाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कि विधवा या तलाक़शुदा का निकाह उस समय तक न किया जाए जब तक उससे पूछ न लिया जाए। और कुँवारी लड़की का निकाह उस समय तक न किया जाए जब तक उससे अनुमति न ले ली जाए। पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०), उसकी अनुमति की क्या शक्ल होगी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : वह ख़ामोश रहे।[1]

जिसकी शादी एक बार हो चुकी हो या जो कुँवारी हो यानी जिसकी शादी न हुई हो, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हर एक की शादी उसकी अनुमति के बिना करने से मना किया है। इसी तरह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पति की

1. बुख़ारी : 5136

ओर से बदसुलूकी या दीन विरोधी हरकत की बुनियाद पर औरतों को तलाक़ की माँग करने की आज़ादी दी है।

रिहाइश की आज़ादी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सबको किसी घर के मालिक बनने और उसमें रिहाइश अपनाने की आज़ादी दी है। कोई काम करने, पेशा अपनाने की आज़ादी दी है और जो काम पसन्द न आए उसके करने पर किसी इदारा या व्यक्ति के दबाव डालने या मजबूर करने की अनुमति नहीं दी है।

आज़ादी की सीमा

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सबके लिए आज़ादी रखी है। अलबत्ता यह ज़रूरी है कि किसी के कर्म से दूसरे को नुक़सान न पहुँचे और वह कर्म शरई शिक्षाओं के विरुद्ध न हो।

– – – – –

रसूल (सल्ल०) और उनके सेवक

यहाँ एक अहम बात की ओर ध्यान दिलाना ज़रूरी है, और वह यह कि कुछ लोगों को यह शीर्षक पढ़कर ग़लतफ़हमी हो सकती है और वे यह सवाल कर सकते हैं कि ऐसी महान हस्ती, ऐसा बड़ा रूहानी व्यक्तित्व, कि अल्लाह से जिनके लगाव की चर्चा हो, जिनका जीवन राजाओं और दुनियादारों के जीवन से बिलकुल अलग है, फिर उनके सेवक कैसे होंगे? इस बारे में सच्चाई यह है कि अधिकतर लोग, विशेषकर, इस दौर में, जीवन की रौनक़ों और लज़्ज़तों के लिए नौकर-चाकर रखते हैं और सेवकों की भीड़ से जीवन स्तर तय होता है और उसे भोग-विलास की प्रतीक समझा जाता है। जहाँ तक कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का मामला है, तो वह इस ज़माने के नौकर-चाकर के मक़सद से बिलकुल अलग है। आप (सल्ल०) का अपने लिए सेवक रखना, आज के ज़माने में सेवक रखने से कई आधार पर अलग है :

(1) सेवक रखने का अहम मक़सद यह था कि आप प्रशासनिक कामों के लिए समय निकाल सकें। लोगों के काम पूरे कर सकें। लोगों की ज़रूरतें की पूर्ति कर सकें और ज़्यादा से ज़्यादा इबादत के लिए समय ख़ाली कर सकें। एक मक़सद यह भी था कि उनको दीन की शिक्षा दे सकें जो बाद में आपके झंडे को ऊंचा करें।

(2) आपके सारे सेवकगण स्वैच्छिक थे, वेतनभोगी न थे।

(3) आप (सल्ल०) के सेवकों के काम आजकल के सेवकों जैसे नहीं थे कि घरों के अन्दर घरेलू काम-काज करते हों और घर की सारी ज़रूरतें पूरी करते हों, बल्कि उनके ज़िम्मे घर के बाहर के काम होते और घर के अन्दर के सारे काम ख़ुद आप (सल्ल०) अंजाम देते। जैसा कि ईमान वालों की माँ सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा एक सवाल के जवाब

में कहती हैं : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) घर के अन्दर काम किया करते थे। आप (सल्ल०) एक इन्सान थे, कपड़े में पैवंद लगा लिया करते थे, बकरी दूहते और अपने दूसरे काम करते ।[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सेवकगण

(1) **अनस बिन मालिक अंसारी (रज़ि०) :** जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मदीना मुनव्वरा आए तो अनस रज़ियल्लाहु अन्हा की माँ उनको लेकर आईं और अपने जिगर के टुकड़े को आपकी सेवा के लिए पेश किया। अनस कहते हैं : मुझे मेरी अम्मी उम्मे अनस अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास लेकर आईं। मेरे शरीर पर आधी ओढ़नी का तहबंद और दूसरी आधी की चादर थी। अम्मी ने कहा, अल्लाह के रसूल (सल्ल०), यह अनस है, मेरा बेटा, इसे मैं आपकी सेवा के लिए लेकर हाज़िर हुई हूँ। इसके लिए अल्लाह से दुआ कीजिए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने दुआ की ऐ अल्लाह इसके माल और औलाद में इज़ाफ़ा कर दे।[2]

(2) **अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) :** उनके ज़िम्मे तकिया, मिस्वाक, जूते की व्यवस्था करना और वुज़ू कराना था। उनकी गिनती बड़े सहाबा में होती है।

(3) **उक़बा बिन आमिर (रज़ि०) :** उनके पास आप (सल्ल०) का ख़च्चर होता और वे सफ़र में सवारी की व्यवस्था करते।

(4) **असला बिन शरीक (रज़ि०) :** यह सफ़र के दौरान आप (सल्ल०) के साथ रहते थे।

(5) **बिलाल बिन रिबाह (रज़ि०) :** मुअज़्ज़िन थे।

हुज़र (सल्ल०) की सबसे ज़्यादा सेवा हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) ने की है।

---

1. बुख़ारी, अदबुल मुफ़रद : 420
2. मुस्लिम : 2481

सेवकों के साथ व्यवहार

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सेवकों के साथ बेहतरीन व्यवहार रखते थे। उनके साथ आदर, मानवता, मुहब्बत और भाईचारा का प्रदर्शन करते थे।

(1) मार पीट नहीं : सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कभी किसी सेवक या महिला की पिटाई नहीं की।[1]

(2) नाराज़गी नहीं : आपके सेवक अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने दस साल अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा की। कभी आप (सल्ल०) ने हूँ तक नहीं कहा, न कभी मुझ से किसी चीज़ के बारे में जिसे मैंने नहीं किया, यह कहा कि क्यों नहीं किया? या मैंने कुछ किया तो आप (सल्ल०) ने यह नहीं पूछा कि क्यों किया।[2]

(3) भाई और सेवक में समानता : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का आदेश है, "तुम्हारे अधीनस्त तुम्हारे भाई हैं, जिसका भाई उसका अधीनस्त हो तो जो खाए वही उसे खिलाए, जो पहने वह उसे पहनाए और उसकी शक्ति से ज़्यादा काम न ले, अगर ले तो उनके साथ ख़ुद भी लग जाए।[3]

(4) सेवकों के साथ नरमी : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हर बात और हर काम में नर्मी बरतने की ताकीद की। आप (सल्ल०) ने आदेश दिया कि सेवक को ओ मेरे ग़ुलाम! ओ मेरी दासी! कहकर न पुकारे, बल्कि बेटा या भाई कहे। हज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि मौत के समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की आम वसीयत यह थी नमाज़ और तुम्हारे अधीनस्त।[4]

(5) माफ़ करने की हिदायत : जिस दौर में सेवकों की मामूली-मामूली ग़लती पर सख़्त पकड़ होती, तनख़्वाह काटने और अत्याचार करने की बहुतायत थी, कई बार तो हत्या तक बात आ जाती थी, उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सेवकों की ग़लतियों को ज़्यादा से ज़्यादा माफ़ करने की प्रेरणा दी। एक सज्जन आप (सल्ल०) की सेवा में आए। सवाल किया कि

---

1. अबू-दाऊद : 4786 2. अदबुल मुफ़रद : 211 3. अबू-दाऊद:4786, अलबानी ने सही कहा
4. इब्ने-माजा : 2200, अलबानी ने सही कहा

ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हम सेवकों को कितना माफ़ करें? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) चुप रहे। उन्होंने दुबारा पूछा आप (सल्ल०) फिर चुप रहे। जब तीसरी बार सवाल किया तो कहा प्रतिदिन सत्तर बार।[5]

सेवकों के साथ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का व्यवहार किस तरह होता उसके कुछ उदाहरण पेश किए गए। सेवकगण भाई की हैसियत रखते चाहे वे ग़ैर-मुस्लिम ही क्यों न हों।

– – – – –

1. अबू-दाऊद : 5164, अलबानी ने सही कहा

रसूल (सल्ल०) और हिंसा

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हिंसा के हर रूप के विरोधी थे। हिंसा मुसलमानों पर की जाए या ग़ैर-मुस्लिमों पर, आप (सल्ल०) उसके ख़िलाफ़ थे। इसलिए कि आप (सल्ल०) का पैग़ाम न्याय, शांति, सुरक्षा और समानता को विकास देना था और पूरी मानवता में मानव मूल्यों की रूह फूंकनी थी। अल्लाह की मशीयत यही हुई कि उसने आपकी रिसालत के सबसे महत्वपूर्ण मक़सद का निर्धारण किया तो कहा :

> "हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है।"[1]

- आप (सल्ल०) रहमत बनकर आए ताकि गढ़े में गिरती मानवता को निकालें।
- रहमत बनकर आए ताकि दरिंदगी में तब्दील हो जाने वाली नौ बशर को मानव नैतिक की दौलत वापस दिला दें।
- रहमत बनकर आए ताकि जंगल राज में बदलने वाली इस दुनिया को न्याय दिलाएँ।
- रहमत बनकर आए ताकि शोषितों को अधिकार दिलाएँ।
- रहमत बनकर आए ताकि लोगों को अत्याचारियों से छुटकारा दिलाएँ।
- रहमत बनकर आए ताकि पूरी मानवता पर शांति और सुरक्षा की चादर तान दें।

इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने न कभी अपनी ओर से हिंसा की शुरुआत नहीं की, न कभी इस रास्ते को अपनाया, न लोगों को इस पर

1. अल-अंबिया :107

उकसाया, न कभी हिंसा करने वालों का प्रोत्साहन किया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के ज़माने में जितने युद्ध हुए वे सब बचाव में हुए, क्योंकि दुश्मन आप (सल्ल०) से लड़ने के लिए आए थे।

नुबूवत के ज़माने के युद्ध और उनके कारण

आधुनिक युग में बड़ी ताक़तों की जंगों का मक़सद राष्ट्र का फैलाव और वर्चस्व, दौलत लूटना और बदला लेना होता है। इसके विपरीत अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सारे युद्ध अपने बचाव में थे। और उन क़ुरआनी निर्देशों के अनुसार थे जो मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल पर उतरीं। अल्लाह ने आप (सल्ल०) के अनुयायियों को जंगों में इसकी पाबंदी की हिदायत की।

क़ुरआन-मजीद के बयान किए नैतिक नियमों में से कुछ ये हैं :

(1) अपना बचाव : अल्लाह ने कहा :

"अनुमति दी गई उन लोगों को जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उनपर ज़ुल्म किया गया - और निश्चय ही अल्लाह उनकी सहायता की पूरी सामर्थ्य रखता है। ये वे लोग हैं जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए, केवल इसलिए कि वे कहते हैं कि "हमारा रब अल्लाह है।"[1]

इस आयत में मुसीबत के मारे लुटे-पिटे और ज़मीन से बेदख़ल कर दिए गए लोगों को अपने बचाव की अनुमति दी गई है। ये सब वे हालात हैं जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथियों के सामने आए थे। उन लोगों ने मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक अत्याचार, प्रतारण और जायदादों पर क़ब्ज़ा कर लिए जाने पर सब्र किया। फिर यह आयत नाज़िल हुई जिसने आप (सल्ल०) को अपने बचाव के लिए युद्ध लड़ने की अनुमति दी। रक्षात्मक युद्ध की अनुमति दुश्मनों के साथ व्यवहार के सम्बन्ध में बड़ी नैतिक बुनियाद है। दूसरी आयत से इसकी पुष्टि होती है कि युद्ध की शुरुआत अपनी ओर से न की जाए , हाँ दुश्मनों की ओर से हिंसा और ज़्यादती हो तो रक्षात्मक युद्ध की अनुमति है। अल्लाह ने कहा :

"और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ें, किन्तु

1. अल-हज : 39-40

ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता।"[1]

यह आयत रब का मंशा बयान करने में बिल्कुल साफ़ है कि युद्ध की शुरुआत उसी समय होगी जब दुश्मनों की ओर से पहल हो। यह आयत मुसलमानों को इस बात से रोकती है कि वे हमला करने में पहल करें।

(2) न्याय, समानता और विकास : अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने सभी अनुयायियों को साफ़-साफ़ बता दिया कि युद्ध का मक़सद निजी रंजिश का बदला, जायदाद और दौलत की प्राप्ति, अत्याचार और अराजकता फैलाना हरगिज़ नहीं है। जैसा कि आज के दौर की जंगों में यही सब होता है और इतिहास गवाह है कि दुनिया पर क़ब्ज़े के समय मंगोलों ने क्या किया और जिन मुल्कों पर हिटलर ने क़ब्ज़ा किया उनमें उसने क्या किया और फ़्रांसीसियों और अंग्रेज़ों ने जिन देशों को ग़ुलाम बनाया वहाँ क्या किया। इन सभी हमलावरों ने अत्याचार ढाया, हत्या और दरिंदगी फैलाई, हिंसा और लूट-मार की और अत्याचार फैलाया। इसके विपरीत नबी-ए-रहमत ने इसके उच्च उद्देश्यों की ओर ध्यान दिलाया, जो ये हैं :

(1) न्याय को आम करना।

(2) शांति और सम्मान के माहौल को आम करना।

(3) अत्याचार की समाप्ति और एक-दूसरे के अधिकारों की अदायगी।

अल्लाह ने मुसलमानों के ग़लबा के समय जीत के उद्देश्य की रूह को इस आदेश में बयान किया है :

"ये वे लोग हैं कि यदि धरती में हम उन्हें सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ का आयोजन करेंगे और ज़कात देंगे और भलाई का आदेश करेंगे और बुराई से रोकेंगे। और सब मामलों का अन्तिम परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है।"[2]

---

1. अल-बक़रा : 190

2. अल-हज : 41

इस आयत से चार उद्देश्यों की व्याख्या होती है :

(1) रूहानियत की निर्मान

(2) आर्थिक विकास

(3) न्याय का स्थापना

(4) बिगाड़ के ख़िलाफ़ युद्ध

युद्ध और युद्ध के साधन

जो युद्ध अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने लड़े , उन पर ग़ौर करें तो मालूम होता है कि आप (सल्ल०) की ओर से उनमें से किसी भी युद्ध में पहल नहीं की गई।

(1) जंगे-बद्र : यह इस्लाम की पहली लड़ाई है जो मुसलमानों और क़ुरैश के मुशरिकों के बीच हुई। क़ुरैश ताक़तवर फ़ौज लेकर युद्ध के लिए निकले। बावजूद इसके कि क़ुरैश अपने व्यापारिक क़ाफ़िले को बचाने के लिए निकले थे, जिसको मुसलमानों की ओर से नुक़्सान पहुँचने की आशंका थी। लेकिन जब कारवाँ का सरदार अबू-सुफ़ियान ने क़ाफ़िला के सुरक्षित बच निकलने की सूचना दे दी तो फिर भी लोगों ने आगे बढ़कर नबी (सल्ल०) से युद्ध करने पर ज़ोर दिया और मदीना मुनव्वरा के बद्र नामी स्थान पर पहुँच गए। फिर नबी (सल्ल०) भी शहर से उनसे लड़ने के लिए निकल पड़े और मक्का से आने वालों का मुक़ाबला किया।

(2) उहुद की लड़ाई : बद्र के बाद उहूद दूसरा युद्ध है। क़ुरैश के काफ़िर जमा हुए और बद्र में बुरी तरह हार का बदला लेने के लिए सेना लेकर मदीना में उहूद की पहाड़ियों तक पहुँच गए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भी निकले और उनसे मुक़ाबला किया।

(3) ख़ंदक़ (खाई) का युद्ध : क़ुरैश के साथ अरब के सारे क़बीले अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और उनके साथियों को मदीना मुनव्वरा में घेरने के लिए जमा हुए और मदीना का घेराव कर लिया। बचाव के लिए अल्लाह के नबी (सल्ल०) भी निकले। अल्लाह ने तेज़ हवाएँ चला दीं। हवाओं ने दुश्मनों

के ख़ेमे उखाड़ दिए। घोड़े बिदक गए, दुश्मनों के ख़ाब चकनाचूर हो गए और वे उल्टे पांव लौट गए।

(4) मौता का युद्ध : हिजरत के आठवें साल अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस ज़माने के विभिन्न हुकमरानों के साथ क़ैसर (सीज़र) और किसरा को पैग़ामात भेजने का आरंभ किया और इस्लाम की दावत दी। तो सीरिया के बसरा के अमीर के नाम भी एक ख़त भेजा, जो क़ैसर का प्रतिनिधि था। आप (सल्ल०) ने हज़रत हारिस बिन उमैर अज़दी (रज़ि०) के हाथ पत्र भेजा था। जब वे सीरिया के बलक़ा इलाक़े में पहुँचे तो शुरहबील बिन उम्र ग़स्सानी, जो क़ैसर का प्रतिनिधि था, ने उनको गिरफ़्तार कर लिया और उनकी हत्या कर दी। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को यह ख़बर मिली तो सेना की तैयारी का आदेश दे दिया ताकि रूम से युद्ध करें और हारिस बिन उमैर (रज़ि०) का बदला लें, क्योंकि विश्व क़ानूनों के अनुसार सफ़ीर और नुमाइंदे की हत्या नहीं की जाती।

(5) तबूक का युद्ध : तबूक युद्ध की असल वजह यह हुई कि जासूसों के ज़रिये अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को सूचना मिली कि रूम और सीरिया की फ़ौजों को क़ैसर हिराक़ुल के नेतृत्व में मुसलमानों से युद्ध के लिए तैयार कर रहा है, ताकि इस्लाम का सफ़ाया कर दे। इस तरह आप (सल्ल०) ने उनसे मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया और मुसलमानों को तैयार किया ताकि नए अस्तित्व में आने वाले शासन के स्थायित्व की रक्षा हो सके।

हब्शा से युद्ध क्यों नहीं?

यह सच्चाई कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कोई भी युद्ध अपनी ओर से पहल करते हुए नहीं लड़ी, बल्कि अपने बचाव के लिए लड़ी। इसका प्रमाण इस बात से भी मिलता है कि आप (सल्ल०) ने हब्शा से युद्ध नहीं किया, जब कि वह आप (सल्ल०) से क़रीब था और शिर्क पर भी स्थापित था। आप (सल्ल०) यह भी जानते थे कि इस देश की सैन्य शक्ति रोम और फ़ारस जैसी नहीं थी, उसके बावजूद आप (सल्ल०) ने हब्शा से युद्ध नहीं किया। उसकी वजह यह थी कि हब्शा ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के ख़िलाफ़ मोर्चेबंदी नहीं की थी, बल्कि इसके विपरीत जो सहाबा हब्शा हिजरत करके गए उनका

स्वागत किया, उनके साथ सद्व्यवहार किया और मुहब्बत जताई। उनकी बेहतरीन मेज़बानी और मेहरबानी की थी और जब क़ुरैश ने एक प्रतिनिधिमंडल के ज़रिये मुहाजिर सहाबा को हब्शा से निकालने का पैग़ाम लेकर भेजा था तो नजाशी राजा ने क़ुरैश की दरख़ास्त को ठुकरा दिया था।

मुस्लिम की सच्चाई शांति और सुरक्षा है

एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान को 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह' कहना मुहब्बत का पैग़ाम है। और यह अपने अन्दर दूसरे के लिए बहुत ही ऊँचे जज़्बात सिमोए हुए है। सुरक्षा और शांति की ऊँचाइयाँ लिए हुए है। इन शब्दों को अदा करने वाला मिलने वाले के लिए रहमत और बरकत की दुआ करता है, चाहे उसे जानता भी न हो। इसकी वजह यह है कि इस्लाम की बुनियाद दूसरों के लिए मुहब्बत और शांति व सुरक्षा पर स्थापित है।

हिंसा का निषेध

मुसलमान के जीवन में हिंसा से निषेध की ताकीद और उसकी विभिन्न सूरतें मौजूद हैं। जिनमें से कुछ ये हैं :

(1) मुस्लिम और मोमिन की सच्चाई : जब तक मुस्लिम और मोमिन की ज़ुबान और हाथ से न केवल मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम बल्कि सभी इन्सान हर तरह सुरक्षित नहीं हो जाते और इसकी ओर से उनकी जान और माल सुरक्षित नहीं हो जाते, उस समय तक उस मुस्लिम व मोमिन का न इस्लाम पूरा होता है, न ईमान पक्का होता है।[1]

(2) सबसे बुरे लोग : तीन तरह के लोग अल्लाह की निगाह में सबसे बुरे लोग हैं। उनमें से एक वह है जो किसी इन्सान की हत्या करे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा अल्लाह की निगाह में तीन लोग सबसे बुरे और नापसन्दीदा हैं। हरम के अन्दर रहते हुए अधर्म अपनाने वाला, इस्लाम में जाहिलियत की राह तलाश करने वाला और किसी व्यक्ति के ख़ून की अकारण माँग करने वाला, कि उस का ख़ून बहाए।[2]

1. निसाई : 5010, अलबानी ने सही कहा
2. बुख़ारी : 6882

(3) हथियार दिखाना : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस हद तक सख़्ती के साथ हिंसा का निषेध किया है कि किसी हथियार या धारदार चीज़ से मज़ाक़ में किसी को इशारा करना भी निषिद्ध ठहरा दिया कि कहीं बिना इरादे के नुक़्सान पहुँच जाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "कोई किसी भाई की ओर हथियार से इशारा न करे, क्योंकि उसे पता नहीं कि शैतान उसके हाथ से निकाल दे और वह जहन्नम के गढ़े में जा गिरे।"[1]

दूसरी हदीस में कहा गया है, "जिसने अपने भाई की ओर हथियार से इशारा किया, फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते हैं, चाहे हथियार दिखाने वाला सगा भाई ही क्यों न हो।"[2]

(4) बाज़ार और इबादत-ख़ाने में हथियार ले जाना : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इबादतख़ाने (मस्जिदों) बाज़ार और भीड़-भाड़ की जगह पर हथियार साथ ले जाने से रोका है कि कहीं लोग उसकी ज़द में न आ जाएँ और बड़ा नुक़्सान हो जाए।

शरीयत की इन साफ़ शिक्षाओं की रौशनी में इन लोगों के बारे में क्या राय स्थापित की जाएगी जो मस्जिदों और बाज़ारों में धमाकाख़ेज़ मवाद पलांट करते हैं या ख़ुदकुश बमबार हमले करते हैं और लोगों को मौत के हवाले कर देते हैं।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहते हैं, "जब किसी का गुज़र हमारी मस्जिद या बाज़ार से हो और उसके हाथ में तीर हो तो फल पर हाथ रख ले, या कहा फल को पकड़ ले, ताकि कहीं किसी इन्सान को नुक़्सान न पहुँच जाए।

(5) डराने-धमकाने की निषेध : डराना धमकाना, जो हो सकता है मज़ाक़ में ही हो, इससे भी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रोका है और हिंसा को मज़ाक़ के रूप में भी नापसन्द किया है। हज़रत अबदुर्रहमान बिन अबू लैला रिवायत करते हैं कि नबी के एक सहाबी ने हमसे बयान किया कि वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ जा रहे थे कि एक सज्जन सो गए। दूसरे सज्जन रस्सी लेकर गए और सोने वाले को बांध दिया जिससे सोने वाला घबरा गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "किसी मुसलमान के लिए दूसरे मुसलमान को भयभीत करना ठीक नहीं है।[3]

---

1. बुख़ारी : 7072 2. मुस्लिम : 2616 3. मुंज़री : 2805, अलबानी ने सही कहा

रसूल (सल्ल०) और भलाई के कामों में ख़र्च

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) न फ़क़ीर और मुहताज थे और न ग़नी और मालदार, बल्कि आप फ़क़ीराना जीवन गुज़ारते थे, क्योंकि आपके हाथ में कुछ नहीं बचता था। जंगों से जो माले-ग़नीमत आता उस का पाँचवाँ हिस्सा आप (सल्ल०) के लिए ख़ास होता। लेकिन आप (सल्ल०) उनमें से नहीं लेते थे कि पड़ोसी भूखा हो और आप (सल्ल०) आराम से रहें। माल जैसे ही आता आप (सल्ल०) पहली फ़ुर्सत में उसे ख़ुदा की राह में ख़र्च कर देते। इसका नतीजा यह था कि आप (सल्ल०) कई दिन व रात फ़ाक़ा (भूख) से गुज़ारते। भूखे सो जाते और इससे बेपरवाह ख़र्च करते रहते। ऐसा नहीं होता था कि आप (सल्ल०) से कोई कुछ माँगे और आप (सल्ल०) उसे कुछ न दें। आइए हम आपके जीवन के अन्दर झांक कर आपकी उदारता का निरीक्षण करें।

सबसे बढ़कर उदार

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के चचेरे भाई हैं। वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बारे में कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भलाई के कामों में सबसे ज़्यादा उदार थे और रमज़ान के महीने में तो उदारता देखने के क़ाबिल होती।[1]

किसी माँगने वाले को न लौटाते

आप (सल्ल०) की उदारता का यह हाल था कि आप (सल्ल०) से कोई सांसारिक चीज़ माँगता तो कभी उसे वापस न लौटाते। जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से जब भी कोई चीज़ माँगी गई तो आप (सल्ल०) ने कभी 'नहीं' नहीं कहा।"[2]

1. बुख़ारी : 4997 2. बुख़ारी :1277

उदारता की प्राकाष्ठा

आप (सल्ल०) के दर पर कोई माँगनेवाला बनकर आए तो आप (सल्ल०) उसे दिए बिना वापस नहीं करते थे। चाहे जो चीज़ आप (सल्ल०) से माँगी गई हो, चाहे वह आप (सल्ल०) की पसन्दीदा ही चीज़ क्यों न हो। हदीस में एक बड़ी अहम घटना आई है। एक महिला अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में सुन्दर बुनी हुई हाशियादार चादर लेकर आईं। महिला ने बताया यह तहबंद है, जिसे मैंने ख़ुद बुना है। मैं चाहती हूँ कि आप (सल्ल०) इसे पहनें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस तोहफ़े को ख़ुशी के साथ स्वीकार किया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसे तहबंद बनाकर पहन लिया और बाहर आए, तो एक सहाबी ने उस तहबंद की बड़ी तारीफ़ की और कहने लगे बहुत उम्दा है, मुझे दे दीजिए। इस पर हाज़िरीन ने कहा यह तुमने अच्छा नहीं किया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को यह चादर ख़ुद पसन्द थी और तुम यह जानते हो कि आप (सल्ल०) कभी सवाल को ठुकराते नहीं। माँगने वाले ने जवाब दिया ख़ुदा की क़सम मैंने यह चादर पहनने के लिए नहीं माँगी है, बल्कि अपने कफ़न के लिए माँगी है। हज़रत सहल (रज़ि०) कहते हैं कि वाक़ई वह चादर उनके कफ़न में काम आई।[1]

देखिए कितनी सुन्दर और पसन्दीदा चादर थी और थोड़ी देर ही पहनी थी कि किसी को पसन्द आ गई और उसने माँग ली। बस फिर क्या था, आप (सल्ल०) ने दे दी। यह उदारता और दरियादिली है, जिसकी कोई मिसाल नहीं है।

दो पहाड़ों की बकरियाँ

युद्ध से वापसी के बाद माले-ग़नीमत (दुश्मनों का माल, जो जीतने वाले का होता है) में से आप (सल्ल०) का हिस्सा निकाला जाता था, लेकिन वह सारा का सारा माल ख़र्च किए बिना आप (सल्ल०) न सोते। आप (सल्ल०) के ख़ास सेवक हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं, आप (सल्ल०) से किसी चीज़ का सवाल किया गया तो वह आपने ज़रूर दिया।

1. बुख़ारी : 210

एक बार आप (सल्ल०) के पास एक सज्जन आए तो आप (सल्ल०) ने दो पहाड़ियों के बीच मौजूद सारी बकरियाँ उसे दे दीं, वह वापस अपनी क़ौम के पास गए और कहा, "मेरे लोगो इस्लाम क़ुबूल कर लो, क्योंकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उस व्यक्ति की तरह देते हैं जिसे ग़रीबी और भूख की आशंका नहीं होती।[1]

भलाई के कामों में ख़र्च के फ़ायदे

उभरते हुए समाज के अन्दर आप (सल्ल०) भलाई के कामों में ख़र्च की जड़ें स्थापित कर देना चाहते थे, ताकि यह चीज़ समाज को आर्थिक संकट से सुरक्षा देने में मदद कर सके और मालदारों और ग़रीबों का अंतर कम हो और दोनों वर्गों के बीच संतुलन स्थापित हो। इसके लिए जो अहम कार्रवाइयाँ की गईं वे ये हैं :

(1) लगातार मिलने वाला लाभ : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ज़रूरतमन्दों पर ख़र्च करने के लिए तीन ऐसे काम बताए, जिनका सवाब इन्सान को मरने के बाद भी मिलता रहेगा। कहा जब इन्सान मर जाता है तो उसका कर्म रुक जाता है : सिवाए तीन कर्मों के। एक जारी रहनेवाला सदक़ा, दूसरा उपयोगी ज्ञान, तीसरा नेक औलाद, जो दुआ करे।[2]

(2) बेहतरीन सदक़ा : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सदक़ा का एक ऐसा अर्थ बयान किया, जिसे अधिकतर लोग नहीं जानते हैं, वह यह कि अल्लाह के यहाँ बेहतरीन सदक़ा वह है जो पत्नी और औलाद के लिए हो। सबसे उत्तम सदक़ा वही है जो अपने आप और घरवालों के अधिकारों की अदायगी के बाद निकाला जाए ताकि ऐसा न हो कि सदक़ा करने वाला सदक़ा निकालने के बाद किसी दूसरे पर ख़ुद भी बोझ बन जाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "बेहतरीन ख़ैरात वह है जिसके देने के बाद आदमी मालदार रहे, फिर सदक़ा पहले उन्हें दो जो तुम्हारे पास परवरिश पा रहे हों।[3]

(3) ख़ैर के दरवाज़े : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ख़ैर का दरवाज़ा अपनाने की प्रेरणा दी है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत मआज़ बिन

1. मुस्लिम : 2312 2. मुस्लिम : 1631 3. बुख़ारी : 1426

जबल (रज़ि०) से कहा, क्या मैं तुम्हें ख़ैर के दरवाज़े बताऊँ? मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, या अल्लाह के रसूल (सल्ल०)। आप (सल्ल०) ने कहा, "रोज़ा ढाल है, और सदक़ा उसी तरह गुनाहों को मिटाता है, जिस तरह आग को पानी बुझाता है।[1]

(4) सदक़ा का वृहद अर्थ : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सदक़ा का वृहद अर्थ बयान किया ताकि लोग यह न समझते रहें कि सदक़ा केवल ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों को देने का नाम है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सदक़ा के वृहद अर्थ को बयान किया, जिसमें पत्नी, औलाद, सेवक और ख़ुद इन्सान सब शामिल हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कहते हैं, "तुमने जो पत्नी को खिलाया वह तुम्हारे लिए सदक़ा है। जो औलाद को खिलाया वह तुम्हारे लिए सदक़ा है, जो सेवक को खिलाया वह सदक़ा है और जो ख़ुद खाया वह भी सदक़ा है।"[2]

– – – – –

1. सही अल-तरग़ीब : 868, अलबानी ने सही कहा
2. अहमद : 5535, अलबानी ने सही कहा

रसूल (सल्ल०) और एहसास की समझ

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आगमन हुआ और आप (सल्ल०) की रिसालत का अहम मक़सद नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता क़रार पाया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का आदेश है। "मैं तो नैतिक मूल्यों की पूर्ति के लिए भेजा गया हूँ ।[1] यानी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ऐसे समाज में आए थे जिसमें नैतिक मूल्यों की कुछ निशानी बाक़ी थी । कुछ नैतिकता ठीक तो कुछ बिगड़ी शक्ल में थी। आप (सल्ल०) ने उनकी पूर्ति की और उनका सुधार किया।

यह सच्चाई है कि नैतिक मूल्यों के उज्ज्वल सिद्धांतों में दूसरों के एहसास का ध्यान रखना बहुत अहम है। एहसास का आहत होना, जज़्बात का चकनाचूर होना, ठीक नहीं। संवेदनशीलता का ख़याल रखना ज़रूरी है, क्योंकि मानवता के साथ रहमत, मुहब्बत और स्नेह के दायरे में रहकर सुधार करना मक़सद है। सामने वाले को आहत करना या कष्ट पहुँचाना वांछित नहीं है। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की महत्वपूर्ण ख़ूबी यह थी कि आप (सल्ल०) लोगों के जज़्बात व एहसासात की पूरी रिआयत करते थे।

लोगों को क्या हुआ

शुरू के दिनों में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने साथियों में ग़लत बातें देखते, लेकिन उनके सुधार के लिए सीधे पकड़ की सूरत न अपनाते । जब आप (सल्ल०) किसी को ग़लती पर देखते तो ख़ुतबा या वाज़ में यूँ करते लोगों को क्या हुआ ? ईमान वालों की माँ सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के कानों में किसी की कोई शिकायत

1. अदबुल मुफ़रद : 2017

पहुँचती तो आप यह न कहते कि फ़ुलाँ को क्या हुआ, उसने ऐसा क्यों किया, बल्कि कहते लोगों को क्या हुआ, ऐसा वैसा करते हैं।[1] अब जिसमें वह कमी होती वह समझ जाता और अपना सुधार कर लेता और अपमान से बच जाता।

अपराध के बारे में न पूछते

धुर विरोधी क़ुरैश के काफ़िरों के साथ आपसी बात-चीत के समय जज़्बात की रिआयत के बारे में क़ुरआने-करीम ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की नैतिकता और अदब व लिहाज़ की बुलंदी को नक़्ल किया है। क़ुरआन कहता है :

> कहो, "जो अपराध हमने किए, उसकी पूछ तुमसे न होगी और न उसकी पूछ हम से होगी जो तुम कर रहे हो।"[2]

यह नहीं कहा कि हमारे कर्म के बारे में आपसे नहीं पूछा जाए (क़ियामत के दिन) और न हम से तुम्हारे कर्म के बारे में सवाल होगा। जज़्बात को ठेस न पहुँचाने की यह बड़ी लुभावनी अदा है।

मरने वालों की बुराई न करो

किसी मरने वाले में बुराइयाँ और ख़राबियाँ हो सकती हैं। लोगों के जज़्बात आहत न हों, इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मरने वाले के रिश्तेदारों और दोस्तों के सामने उसकी बुराइयाँ बयान करने से मना किया। हदीस में है, "मुर्दों को गालियाँ न दो कि इससे उनको तकलीफ़ पहुँचेगी ।[3] मरने वाले ने जितना भी गुनाह किया हो और फ़ित्ना व फ़साद बरपा किया हो, फिर भी इसके ऐब बयान न किए जाएँ।

इबादत में जज़्बात की रिआयत

सारे लोग ताक़त, बर्दाश्त और उम्र में समान नहीं होते। इसलिए जो इमाम नमाज़ियों की इमामत करे वह नमाज़ियों के जज़्बात की ज़रूर रिआयत करे। नमाज़ लंबी न पढ़ाए कि इसके पीछे बड़े-बूढ़े, ज़रूरतमन्द और बीमार नमाज़ी हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने सहाबा को इसकी प्रेरणा देते थे । उस्मान

---

1. अबू दाऊद : 4788, अलबानी ने सही कहा
2. सबा : 25
3. तिर्मिज़ी :1982 अलबानी ने सही कहा

बिन अबुल आस (रज़ि०) से अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "अपनी क़ौम की इमामत करो और जो किसी क़ौम की इमामत करे तो चाहिए कि वह नमाज़ हल्की पढ़ाए। इसलिए कि नमाज़ियों में बूढ़े, बीमार, कमज़ोर और ज़रूरतमन्द हर तरह के लोग होते हैं। हाँ, जब कोई अकेले नमाज़ पढ़े तो जिस तरह चाहे पढ़े।[1]

सबसे बुरे दुश्मन की नमाज़

अब्दुल्लाह बिन उबई रसूल अकरम (सल्ल०) का सबसे बुरा दुश्मन था। मुनाफ़िक़ों का सरदार था। उसने प्यारे रसूल (सल्ल०) को बहुत कष्ट पहुँचाए। उसने नबी (सल्ल०) को गालियाँ दीं। मदीना मुनव्वरा से निकाल देने की धमकी दी। उहद के युद्ध में एक तिहाई फ़ौज लेकर मैदान से लौट गया। आप (सल्ल०) की पवित्र पत्नी हज़रत आइशा (रज़ि०) पर नामुनासिब तोहमत लगाई। इसके बावजूद जब वह मरा तो उसके मोमिन बेटे हज़रत अब्दुल्लाह के जज़्बात की अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रिआयत की। जब अब्दुल्लाह बिन उबई मर गया, तो उसके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में आए और दरख़ास्त की कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपनी कमीज़ दे दीजिए कि अपने बाप को उसका कफ़न पहना दें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने क़मीज़ दे दी, फिर उन्होंने कहा कि नमाज़े-जनाज़ा पढ़ा दें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उसकी नमाज़ जनाज़ा के लिए खड़े हो गए। फिर क्या था, हज़रत उमर (रज़ि०) बढ़े और आपका दामन पकड़ लिया। कहने लगे : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आप नमाज़ के लिए तैयार हैं, जबकि अल्लाह ने आप (सल्ल०) को इससे रोका है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जवाब दिया मुझे अल्लाह ने इख़्तियार दिया है।

> "तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। यदि तुम उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा की प्रार्थना करोगे, तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।"[2]

---

1. मुस्लिम : 468 2. अत-तौबा : 80

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने नमाज़े-जनाज़ा पढ़ा दी। अल्लाह-तआला ने यह आयत नाज़िल की :

"और उनमें से जिस किसी व्यक्ति की मृत्यु हो उसकी जनाज़े की नमाज़ कभी न पढ़ना और न कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना। उन्होंने तो अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और मरे इस दशा में कि अवज्ञाकारी थे।"[1]

माँगने वाले को न लौटाते

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) माँगने वालों के जज़्बात का ख़याल करते। चाहे आप (सल्ल०) महसूस करते कि माँगने वाला ज़रूरतमन्द नहीं है। फिर भी उसके एहसास का ख़याल रखते और ऐसा जवाब देते कि उसका दिल न टूटे। सदक़े का बंटवारा हो रहा था कि इतने में दो लोग अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए, वह सदक़ा के हक़दार नहीं लग रहे थे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनको प्यारा-सा जवाब दिया और सख़्त जवाब से तकलीफ़ न पहुँचाई।

हज़रत अबैदुल्लाह बिन अदी रिवायत करते हैं कि हमें दो आदमियों ने बताया कि वह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में आख़िरी हज के मौक़े पर हाज़िर हुए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सदक़े का बंटवारा कर रहे थे तो उन दोनों ने भी सदक़े की दरख़ास्त की। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने निगाह उठाई और झुका ली। आप (सल्ल०) ने हमें स्वस्थ पाया और कहा, अगर आप चाहें तो मैं दूँ, लेकिन याद रहे सदक़ा मालदार और स्वस्थ लोगों के लिए नहीं होता।[2]

उहद पहाड़ से भारी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ गुज़री हुई अपनी एक घटना बयान करते हैं, जिससे अंदाज़ा होता है कि आप जज़्बात का कितना ख़याल रखते थे। वे कहते हैं कि मैं पीलू के वृक्ष से आप (सल्ल०) के लिए दातुन तोड़ रहा था और हवा उन्हें औंधा किए दे रही

1. अत-तौबा : 84

2. अबू-दाऊद : 1633, अलबानी ने सही कहा

थी, उनकी पिंडली दुबली पतली थी। लोग उनकी पतली पिंडली देखकर हंस पड़े। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा क्यों हंस रहे हो? जवाब मिला उनकी पतली पिंडलियों को देखकर। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, ख़ुदा की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। इन दोनों पिंडलियों का वज़न मीज़ान में उहुद पहाड़ से ज़्यादा होगा।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कुछ सहाबा को हज़रत इब्ने मसऊद की पतली पिंडलियों पर हंसते देखा तो उनकी दिलजोई की और उनके एहसास को ख़ुशियों से भर दिया। उनके जज़्बात का इतना ख़याल रखा और इतनी अज़ीम तारीफ़ की।

सुफ़्फ़ा वाले

मदीना मुनव्वरा में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सहाबा में से कुछ ग़रीबी और भूख का शिकार थे। बेचारे गुज़र-बसर के लिए कुछ न पाते थे। उनके लिए मस्जिदे-नबवी का एक कोना ख़ास था। वहीं वे आराम करते, दिन और रात के लिए वहीं इनका ठिकाना था। रसूल अकरम (सल्ल०) उनके साथ अक्सर बैठते-उठते और उनके साथ किसी समय का खाना भी खा लेते। यह सब उनकी दिलदारी और उनके जज़्बात का ख़याल रखने के लिए करते।

आज तो रहमत का दिन है

जब रसूले रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का विजय के लिए चले और सेना को विभिन्न टुकड़ियों में बाँट दिया। हर टुकड़ी का सरदार पुराने सहाबा में से किसी को नियुक्त किया गया था। उधर क़ुरैश के सरदारों ने मदीना से सेना के आने की ख़बर सुनी तो हालात के जायज़ा के लिए दौड़-धूप करने लगे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को उन सरदारों के बारे में ख़बर दी गई। उनमें मक्का का एक बड़ा लीडर अबू सुफ़ियान भी था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को यह अच्छा लगा कि क़ुरैश के इन सरदारों के सामने अपनी फ़ौज की शक्ति का प्रदर्शन करें। फिर यह फ़ौजी टुकड़ियाँ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और क़ुरैश के सरदारों के सामने से गुज़रने लगीं। एक टुकड़ी गई दूसरी आई। एक-एक कर के सिलसिला जारी रहा। इतने में मदीना के अंसार की टुकड़ी आई। इन

अंसारियों ने अल्लाह के रसूल को हिजरत के समय अपना सब कुछ पेश किया था। उनका नेतृत्व ख़ज़रज के सरदार हज़रत साद बिन उबादा कर रहे थे। जब वह अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़रे तो आवाज़ लगाई अबू सुफ़ियान आज का दिन क़त्ले-आम का दिन है, आज काबा में लड़ना भी हलाल कर दिया गया है।

जब नबी (सल्ल०) अबू सुफ़ियान के क़रीब से गुज़रे तो उन्होंने कहा आपको नहीं मालूम! असअद बिन उबादा क्या कहकर गए हैं। आप (सल्ल०) ने मालूम किया कि उन्होंने क्या कहा है। अबू सुफ़ियान ने बताया कि फ़ुलाँ और फ़ुलाँ बात कहकर गए हैं। आप (सल्ल०) ने कहा कि साद ने ग़लत कहा है, बल्कि आज का दिन वह है जिसमें अल्लाह काबा की अज़मत और ज़्यादा करेगा। आज काबा को ग़िलाफ़ पहनाया जाएगा।[1] फिर साद को पैग़ाम भेजकर बुलवाया और झंडा उनसे ले लिया और उनके बेटे क़ैस को दे दिया।[2]

यहाँ रसूल (सल्ल०) की हिक्मत और समझदारी रोशन होकर सामने आती है कि क़रीब था कि युद्ध छिड़ जाता, या फ़ित्ना फैल जाता। लेकिन इसका हल हिक्मत नबवी ने नैतिक आचरण से निकाल दिया और हिक्मत की बारिश ने गर्म माहौल को उस समय सर्द कर दिया जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने क़ुरैश के सरदारों के जज़्बात की रिआयत की और उनके भय को ख़त्म किया। हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) की बात को ग़लत क़रार दिया और जता दिया कि आज रक्तपात का दिन नहीं है, बल्कि रहमत और मेहरबानी का दिन है। आज काबा में रक्तपात ठीक नहीं होगा बल्कि काबा की महानता में वृद्धि होगी, और उसे ग़िलाफ़ पहनाया जाएगा। आपने इसी पर बस नहीं किया, बल्कि नेतृत्व में बदलाव कर दिया। हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) से झंडा लेकर उनके बेटे हज़रत क़ैस को झंडा दे दिया। यहाँ भी हिक्मत नबवी काम कर रही है और यह सबक़ मिल रहा है कि जज़्बात की रिआयत का क्या तरीक़ा है। जब नेतृत्व का बदलाव किया तो उनके बेटे ही को सरदार बनाया ताकि दिल जोई भी हो और उनके लिए पद छोड़ना आसान भी हो और दिल में मैल भी न आए।

---

1. बुख़ारी : 4280
2. इब्ने हजर अस्क़लानी, फ़त्हुल-बारी, 13/8,9

रसूल (सल्ल०) और संतुलन

अल्लाह ने अपने रसूल (सल्ल०) के जीवन में हमारे लिए निर्देशन साफ़ कर दिए हैं, जिनमें इबादात, मामलात, सम्बन्ध और ख़र्च बल्कि जीवन के हर विभाग में संतुलन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अल्लाह ने कहा :

> "और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुसलमानों के पहले कारवां की तर्बियत संतुलन के सिद्धांतों पर की और हर मामले में अतिवाद और हिंसा से रोका, क्योंकि मुस्लिम उम्मत का बुनियादी गुण संतुलन है।

चाल ठीक करना

संतुलन को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) लोगों में आम करते और इसी की दावत देते इसी लिए अपने घराने के सिलसिले में इसे पहली तर्जीह में शामिल किया, ताकि घराने की तर्बियत संतुलन के अनुसार हो सके। जैसे आप (सल्ल०) घर के अन्दर आए तो क्या देखते हैं कि दो खंभों के बीच एक रस्सी लटक रही है। आप (सल्ल०) ने पूछा यह रस्सी कैसी है? बताया गया यह ज़ैनब की रस्सी है, जब नमाज़ पढ़ते-पढ़ते थक जाती हैं तो इससे लटक जाती हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा नहीं नहीं इसे खोल दो, जब तक चुस्ती रहे नमाज़ पढ़े, थक जाए तो बैठ जाए।[2]

काम के तरीक़े को संतुलित बनाने की यह बड़ी साफ़ मिसाल है जो संतुलन के मार्ग से भटक जानेवाले व्यक्ति के लिए उपयोगी है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मस्जिद से आए तो देखा कि आपकी बेटी ज़ैनब दो सतूनों के

---

1. अल-बक़रा : 143 2. बुख़ारी : 1150

बीच एक रस्सी बाँधे हुए हैं ताकि रात में इबादत के लिए जागते समय अगर ऊंघ आ जाए तो रस्सी को पकड़ लें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रस्सी खोलने का आदेश दिया और संतुलन की प्रेरणा दी कि जब तक चुस्ती-फुर्ति रहे इबादत करे अपनी शक्ति से ज़्यादा वज़न न रखे।

खाने और बोलने का रोज़ा

असंतुलन की एक सूरत वह है जिसका उल्लेख अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ख़ुतबा के दौरान किया। आप ख़ुतबा दे रहे थे कि देखा कि एक सज्जन खड़े हैं। उनके बारे में आपने पूछा, तो बताया गया कि यह अबू इसराईल हैं। उन्होंने खड़े रहने, न बैठने, साया में न रहने, बात न करने और रोज़ा रखने की नज़र मानी है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का आदेश हुआ, उन्हें आदेश दो कि साया में रहें, बैठें और रोज़ा पूरा करें ।[1] अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिसालत इबादत के ज़रिये अपने-आप को अज़ाब देने के लिए नहीं हुई है बल्कि इस तरह के असंतुलन से आपने सख़्ती से मना किया है।

अल्लाह नहीं उकताता मगर तुम ही उकता जाओगे

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने सहाबा की यह तर्बियत करते कि वे फ़र्ज़ अदा करें और फ़राइज़ की पूर्ति के लिए अपनी क्षमता भर नफ़्लों का आयोजन करें। और ताक़त से ज़्यादा अपने ऊपर बोझ न डालें कि उकता जाएँ और उकता कर फ़राइज़ भी छोड़ दें।

ईमान वालों की माँ सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं कि नबी अकरम (सल्ल०) आए और उनके पास एक महिला थीं। आप (सल्ल०) ने पूछा कौन साहिबा हैं? उन्होंने बताया यह उक्त महिला हैं और उनकी लंबी नमाज़ों का उल्लेख करने लगीं आपने कहा बस-बस तुम्हारे ज़िम्मे तुम्हारी क्षमता भर ही है, ख़ुदा की क़सम अल्लाह नहीं उकताता यहाँ तक कि तुम उकता जाओ और अल्लाह को वही दीनदारी पसन्द है जिस दीन-दारी की पाबंदी की जा सके।[2]

---

1. बुख़ारी : 6704 2. बुख़ारी : 43

इबादत की मात्रा कम ही क्यों न हो लेकिन नियमित पालन हो तो अल्लाह को बेहद पसन्द है। क्षणिक जोश में ज़्यादा से ज़्यादा इबादत फिर सब कुछ ख़त्म करना अल्लाह को बिल्कुल पसन्द नहीं है।

कमज़ोर और ज़रूरतमन्द की रिआयत

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सहाबा को इमामत के आदाब सिखाते और बताते कि इमामत करते समय लंबी नमाज़ न पढ़ाओ जिसको बीमार और ज़रूरतमन्द सहन न कर सकें और न इतनी संक्षिप्त नमाज़ हो कि नमाज़ियों को जल्दबाज़ी की वजह से फ़ायदा ही न पहुँचे, बल्कि संतुलन का ख़याल रखे।

हज़रत अनस (रज़ि०) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की नमाज़ और उसमें संतुलन का नक़्शा खींचते हुए बताते हैं कि मैंने जैसी हल्की-फुल्की लेकिन पूरी नमाज़ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पीछे पढ़ी ऐसी किसी इमाम के पीछे नहीं पढ़ी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अगर बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो इस आशंका से कि उसकी माँ को कष्ट न हो, नमाज़ हल्की कर देते।[1]

इस सिलसिले में आप (सल्ल०) ने हज़रत मआज़ बिन जबल (रज़ि०) की पकड़ की है। वे अपने क़बीले की इमामत किया करते थे, और लंबी नमाज़ पढ़ाते। एक नमाज़ी नमाज़ तोड़ कर तन्हा नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पूरी करने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और हज़रत मआज़ (रज़ि०) की शिकायत की कि वह बहुत लंबी नमाज़ पढ़ाते हैं। जब हज़रत मआज़ (रज़ि०) आपकी सेवा में आए तो नबी (सल्ल०) ने कहा, क्या तुम आज़माइशें पैदा करते हो? ऐ मआज़ तुम्हारी लंबी नमाज़ की वजह से लोग नमाज़ से दूर भाग रहे हैं। फिर आपने मौज़ूनियत और संतुलन और लोगों के हालात का ख़याल रखने की शिक्षा दी।

तीन लोग

कुछ लोगों का ख़याल है कि इबादात और मामूलात में सख़्ती अल्लाह को पसन्द है और दीन उसकी दावत देता है, फिर वे अपने आप को प्रतारण का

---

1. बुख़ारी : 708, मुस्लिम : 465

निशाना बनाते हैं और दूसरों पर भी सख़्ती करते हैं। ऐसे लोग दीन के बताए हुए संतुलित रास्ते से बहुत दूर हैं। हज़रत अनस (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि तीन लोगों पर आधारित एक जमाअत अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के घर पर हाज़िर हुई। मक़सद नबी अकरम (सल्ल०) की इबादत के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। जब घर वालों ने बताया तो ऐसा लगा कि पूछने वालों ने आप (सल्ल०) की इबादत की मात्रा को कम ख़याल किया और कहने लगे, हमारी आप (सल्ल०) के मुक़ाबले में क्या गिनती! आप (सल्ल०) की तो अगली-पिछली भूल-चूक भी माफ़ कर दी गई है। उनमें से एक ने कहा अब मैं तो पूरी रात हमेशा नमाज़ में गुज़ारूँगा, दूसरे ने कहा मैं हमेशा रोज़ा रखूँगा। तीसरे ने कहा मैं औरतों से दूर रहूँगा। शादी बिलकुल न करूँगा। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) आए और आप (सल्ल०) को उन लोगों की बातों का ज्ञान हुआ, तो उन लोगों से पूछा कि आप लोगों ने ऐसी-ऐसी बातें कही हैं? ख़ुदा की क़सम मैं अल्लाह से तुमसे ज़्यादा डरता हूँ और तुमसे ज़्यादा परहेज़गार हूँ। इसके बावजूद मैं रोज़ा भी रखता हूँ और नहीं भी रखता हूँ। नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ और औरतों से मैंने निकाह भी किया है, जो मेरे तरीक़े से दूरी बनाए वह हम में से नहीं।[1]

हर पीढ़ी और हर समाज में इतिहास मानवता के कुछ नमूने दोहराता है। वह संतुलन के मार्ग से भटक जाते हैं और ख़ुद को सीधी राह पर जबकि दूसरों को ग़लती पर समझते हैं। जब संतुलन की राह से दूरी की मात्रा नापने की कसौटी न हो तो अतिशयोक्ति और असंतुलन बढ़ते-बढ़ते उस स्थान तक पहुँच जाता है जहाँ से संतुलन तक वापसी कठिन हो जाती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हस्ती संतुलन और अति में फ़र्क़ की कसौटी थी। चुनाँचे जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने असंतुलन के शिकार लोगों से मुलाक़ात की तो सबसे पहली बात यह की कि मैं अल्लाह से तुमसे ज़्यादा डरने वाला हूँ, ताकि किसी को यह गुमान न हो कि वह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से भी ज़्यादा परहेज़गार है और अल्लाह से ज़्यादा क़रीब है। फिर उनका सुधार किया और सीधी राह दिखाई और संतुलन का स्तर बताया।

– – – – –

1. बुख़ारी : 5063

रसूल (सल्ल०) और सकारात्मक मूल्यों का विकास

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हर व्यक्ति और ख़ासतौर से अपने साथियों के अन्दर छिपी क्षमताओं को तलाश कर लेने में बड़ी महारत रखते थे, ताकि उसका मार्गदर्शन करें और वह योग्यता जीवन की कामयाबी का ज़रिया बने, इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मुहिम का एक हिस्सा ऊर्जाओं और क्षमताओं की खोज और नए समाज की निर्माण के प्रस्तावित मक़सद में उनका इस्तेमाल करना था।

जिस व्यक्ति में बहादुरी और घुड़सवारी की कला देखी तो उसे फ़ौज की कमान की हिदायत देते हैं। इन सज्जन की आवाज़ सुन्दर है तो उनके हवाले अज़ान देने का काम देते हैं और यह जो सज्जन हैं उनका स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है तो उनको विभिन्न भाषाएँ सीखने का आदेश होता है। उनकी लेखनी बहुत अच्छी है और लिखने-पढ़ने से परिचित हैं तो उनका चुनाव वह्य लिखने के लिए होता है और दुनिया के शासकों के नाम ख़त लिखने का दायित्व उनके हवाले कर दिया जाता है। जिसके अन्दर शिक्षण की कला होती है उनके हवाले शिक्षा होती है और देखिए एक सज्जन बेचैनी और घबराहट के शिकार हैं तो उनमें उम्मीद और सकारात्मक मूल्य पैदा किए जा रहे हैं। उक्त सज्जन को देखा कि अपनी ग़लतियों के बोझ तले दबे जा रहे हैं, तो उनके लिए रहमत और मग़फ़िरत के दरवाज़े खोल देते हैं। इसी तरह वे ख़ूबियों और गुणों की खोज में व्यस्त हैं। इस तरह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सहाबा किराम में सकारात्मक मूल्यों के विकास और प्रेरणा के लिए प्रयासरत हैं।

नामों का बदलाव

मुहम्मद (सल्ल०) आधुनिक बने समाज में सकारात्मक मूल्यों की जड़ें

मज़बूत करने के बहुत ही ख़ाहिशमन्द थे और ऐसे लोगों को एक कामयाब उम्मत बनाना चाहते थे। इसी लिए आप जहाँ कहीं कमज़ोरी देखते उसे दूर करने की पहल करते और जहाँ नकारात्मक पहलू का गुज़र होता उसे सकारात्मक पहलू में बदल देते। इस सिलसिले में नकारात्मक पहलू के नामों को अच्छे भले नामों में बदल देना है, क्योंकि आप इन्सान के व्यक्तित्व निर्माण में नामों की भूमिका से परिचित थे। यह ऐसी सच्चाई है जिसका सामना हर दिन पूरी उम्र करना होता है। इस सिलसिले में सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा कहती हैं, "(अल्लाह के रसूल सल्ल०) बुरे नाम बदल कर अच्छे नाम रख दिया करते थे।"[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने आसिया (गुनहगार) का नाम बदल दिया और कहा कि आप जमीला (सुन्दर) हैं।[2]

हम मिसाल के तौर पर दो नामों का वर्णन करते हैं जिनका बदलाव किया गया। 'हर्ब' का अर्थ हिंसा है। इसलिए उसे 'सलाम' से बदल दिया जो सकारात्मक पहलू रखता है। इसी तरह 'मुज़तजेअ' की सच्चाई नींद, सुस्ती और कमहिम्मती है, उसको बदल कर 'मुंबइस' कर दिया जो सजग, हिम्मत और मज़बूती का द्योतक है। दूसरे नामों के बारे में भी आपने यही तरीक़ा अपनाया।

ग़ुस्सा नहीं ग़ुस्सा नहीं

ग़ुस्सा वह बुरी आदत है जो इन्सान की सकारात्मक शक्ति का जनाज़ा निकाल देती है और अनगिनत मानव ख़ूबियों से ख़ाली कर देती है। इसलिए जो इस नकारात्मक आदत का शिकार होता अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उसके इस चलन को ठीक करने की लगातार कोशिश करते। अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं एक सज्जन ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से नसीहत करने की दरख़ास्त की। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "ग़ुस्सा न करो" और बार-बार कहा ग़ुस्सा न करो।[3]

यह कितनी बड़ी नसीहत है, क्योंकि ग़ुस्सा बहुत से अपराधों का कारक होता है। जैसे हत्या, युद्ध, सम्बन्ध विच्छेद, अत्याचार, तलाक़ और दूसरे नकारात्मक पहलू आदि।

---

1. तिर्मिज़ी : 207, अलबानी ने सही कहा 2. मुस्लिम : 2139 3. बुख़ारी : 6116

मानव क्षमताओं का विकास

कामयाब सरदार लोगों की क्षमताओं को उच्च उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हस्ती इस बारे में भी उच्च मिसाल थी। वे अपने साथियों में ऊर्जा और क्षमताओं की तलाश में रहते और जैसे ही खोज होती उसकी योग्यता का उचित अन्दाज़ में इस्तेमाल करते , जिसकी कुछ मिसालें ये हैं।

(1) **हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) :** उहद की लड़ाई में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के ख़िलाफ़ लड़े थे, फिर इस्लाम लाए और इस्लामी फ़ौज का नेतृत्व किया। मौता की लढ़ाई में रोम के ख़िलाफ़ लड़े। मक्का, इराक़, सीरिया और रोम के ख़िलाफ़ लड़े। 21 हिज्री में उनकी मौत हुई।[1] अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) में युद्ध कौशल और सामरिक मामलों में नेतृत्व की योग्यता नज़र आई। उसी योग्यता की वजह से क़ुरैश ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) के मुसलमान होने से पहले जंगों में उन पर भरपूर भरोसा किया था। जब वह इस्लाम लाए तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस मैदान में उनका इस्तेमाल किया। वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के ज़माने में अधिकतर मोर्चों के कमांडर रहे और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में भी उनकी सेवाएँ प्राप्त रहीं।

(2) **हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) :** अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) के अन्दर स्मरण शक्ति की खोज की तो उनको हिब्रू भाषा पढ़ने में लगाया ताकि हिब्रू भाषा बोलने वालों से संपर्क हो सके। इसलिए कि हिब्रू भाषी भी मदीना मुनव्वरा के समाज का एक हिस्सा थे। ज़ैद बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुझे यहूदियों

1. अल-अदब अल-मुफ़रिद : 366

से वार्ता का तरीक़ा सीखने के लिए आदेश दिया और कहा कि मैं पत्र लेखन में यहूदियों पर भरोसा नहीं करता। ज़ैद कहते हैं कि हिब्रू भाषा सीख लेने के बाद जब यहूदियों के नाम ख़त लिखना होता तो मैं ही लिखता और जब उनके पत्र आते तो में ही पढ़ता।[1]

(3) **अच्छी आवाज़ :** अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत बिलाल बिन रिबाह (रज़ि०) के अन्दर अच्छी आवाज़ का एहसास किया तो उनको अज़ान की सेवा हवाले कर दी और अज़ान की जो घटना बयान की जाती है, उस में यह बात साफ़ तौर पर आई है। अज़ान की केंद्रीय भूमिका तो अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि०) के ख़ाब के चारों ओर घूमती है। ख़ाब तो अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि०) ने देखा लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अज़ान पढ़ने का योग्य बिलाल को बनाया। जैसा कि अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि०) की ज़बानी मालूम है। "जब सुबह हुई और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िरी हुई तो ख़ाब की बात हमने सुनाई। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा बेशक यह ख़ाब सच्चा है। बिलाल के साथ खड़े हो जाओ, वह बुलंद और प्यारी आवाज़ वाले हैं। अज़ान के शब्दों उनको बताते रहो और वे अज़ान कहते रहें। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि०) कहते हैं कि जब उमर बिन अल-ख़त्ताब (रज़ि०) ने बिलाल की अज़ान सुनी तो वे लिबास संभालते हुए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए और कहने लगे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क़सम उस हस्ती की जिसने आपको हक़ पर भेजा। मैंने भी यही ख़ाब में देखा जिसकी निदा लगी। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा अल्लाह का शुक्र है। बात और मज़बूत हो गई।[2]

मिसालें और भी हैं

यह केवल तीन नमूने हैं, लेकिन रसूल (सल्ल०) के जीवन में ऐसे नमूने बहुत हैं कि आप (सल्ल०) ने अनगिनत लोगों की छिपी क्षमताओं को परखा और फिर उनसे काम लिया और सही जगह के लिए उन्हें चुना।

---

1. तिर्मिज़ी : 2715, अलबानी ने सही कहा
2. तिर्मिज़ी : 2829, अलबानी ने सही कहा

इसे लगा दो

ये इस बात की बड़ी सुन्दर और शानदार मिसाल है कि रसूले-अकरम (सल्ल०) इस नए समाज में इन्सानों की क्षमताओं के विकास की कोशिश करते थे। आप (सल्ल०) का मक़सद एक ऐसे आदर्श समाज का निर्माण था जो हर मैदान में पर्फेक्ट हो, ख़ासतौर से उसका ज्ञान व अनुसंधान का विभाग सबसे महत्वपूर्ण हो, कथन के मुक़ाबले में कर्म को वरीयता प्राप्त हो और समय का आदर हो चाहे जीवन की आख़िरी घड़ी आन पहुँची हो। दुनिया ख़त्म हो रही हो, बल्कि क़ियामत क़रीब आ गई हो। एक हदीस में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने अनुयायियों से सम्बोधित हैं, अगर क़ियामत बरपा हो और तुम्हारे हाथ में पौधा हो, और उसे लगा सको तो लगा दो।[1] नबी (सल्ल०) इस हदीस में जिस पौधे का उल्लेख कर रहे हैं, वह खजूर का पौदा है। यह ऐसा पौदा है जिसे फलदार होने के लिए पाँच साल या उससे भी ज़्यादा का समय दरकार होता है। तुम देखो कि क़ियामत आ चुकी हो, तो इस हालत में रसूल (सल्ल०) उस पौधे को लगाने का आदेश दे रहे हैं। इससे हालात पर रोने के बजाय कर्म और सकारात्मक रवैये की अहमियत मालूम होती है।

अल्लाह हमारे साथ

हिजरत के मौक़ा पर जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) मक्का से मदीना हिजरत के इरादे से चले तो क़ुरैश के काफ़िरों ने आप (सल्ल०) को हर जगह तलाश करना शुरू किया और ऐलान किया गया कि जो ज़िंदा या मुर्दा हालत में लाएगा उसे बड़ा इनाम मिलेगा। उधर पहाड़ियों और गुफाओं से गुज़रते हुए सौर नाम की गुफा तक पहुँचे और उसके अन्दर छिपे। उस सख़्त हालात में काफ़िरों ने तलवारें निकाल लीं, ताकि सर अलग कर दें या गिरफ़्तार करें और इनाम पा सकें। अबूबक्र (रज़ि०) गुफा में से काफ़िरों के क़दम देख रहे थे। वे डर से काँप रहे थे, कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को कोई हानि न पहुँच जाए। वे कहने लगे जैसा कि बुख़ारी में है, मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ गुफा में था कि मुझे मुशरिकों के आसार दिखाई दिए तो

1. अल-अदब अल-मुफ़रिद : 371, अलबानी ने सही कहा

मैंने कहा अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अगर उनमें से किसी ने क़दम उठाया तो हमें देख लेगा। कहा ऐसे दो के बारे में जिनका तीसरा अल्लाह हो क्या ख़याल है।[1] सकारात्मक सोच और चेतना से आपका दिल इतना भरा हुआ था कि जो आपके आस-पास होता उस पर भी अक्स पड़ता। इस तरह वातावरण शांत हो जाता और नकारात्मक एहसासात को सकारात्मक में बदल देते। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) की बात-चीत का प्राप्त यह था कि आप क्यों भयभीत हैं? जबकि सबसे बड़ी शक्ति हमारे साथ है।

"बेशक अल्लाह तआला हमारे साथ है।"[2]

बस कंधा बचा

ईमानवालों की माँ सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अनहा की रिवायत है। वे कहती हैं, "लोगों ने बकरी ज़ब्ह की। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पूछा बकरी का गोश्त कितना बचा? मैंने बताया केवल एक कंधा बचा है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कंधे के सिवा सब बच गया।[3]

ईमानवालों की माँ हज़रत आइशा (रज़ि०) घटने की सच्चाई बयान कर रही हैं कि बकरी ज़ब्ह हुई। गोश्त मुहताजों और ज़रूरतमन्दों में बाँट दिया गया। नबी (सल्ल०) के घराने के लिए केवल एक कंधा बचा, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सच्चाई ही बदल दी। वह यह कि ज़रूरतमन्दों और मुहताजों को जो दिया गया वही अल्लाह के यहाँ बाक़ी रहेगा। जिसका प्रभाव देने वाला अपने दिल और दिमाग़ में महसूस करता है और अल्लाह के यहाँ इनाम की उम्मीद रखता है। रहा वह कंधा जो रह गया उसे घर वाले खा लेंगे ख़त्म हो जाएगा और जो ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च किया गया उसका प्रभाव न अल्लाह के यहाँ मिटेगा और न लोगों में ख़त्म होगा। देने वाले की तबीयत ख़ुशी का एहसास करेगी। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "कंधे के सिवा सब बच गया।"

– – – – –

1. बुख़ारी : 463 2. अत-तौबा : 40
3. तिर्मिज़ी : 2470, अलबानी ने सही कहा

रसूल (सल्ल०) और वैज्ञानिक अनुसंधान

ऐसे बहुत से वैज्ञानिक आविष्कार हैं जिनकी खोज आधुनिक विज्ञान ने की है, और जिनके बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने चौदह सौ साल पहले ही ख़बर दे दी थी। जबकि पाँचवीं सदी ईसवी में उन आविष्कार के बारे में किसी तरह की कोई जानकारी नहीं थीं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) नियमित रूप से पढ़े हुए न थे। इससे पता चलता है कि उन्होंने उस दौर में ऐसी जानकारी दी तो उनके पास यह ज्ञान आसमान से ही आया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिन वैज्ञानिक आविष्कार और खोजों के बारे में बताया उनमें से कुछ ये हैं :

(1) मानव शरीर के जोड़

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मानव शरीर के जोड़ों की संख्या के बारे में विशुद्ध वैज्ञानिक बात-चीत की और यह बात सातवीं सदी ईसवी की है, हालाँकि यह वैज्ञानिक अनुसंधान पिछली कुछ सदियों में सामने आई हैं। इसका उल्लेख कई हदीसें में आया है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "बनी आदम में से हर इन्सान को तीन सौ साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है तो जिसने तकबीर कही, अल्लाह की हम्द कही, अल्लाह की वहदानियत का इक़रार किया, अल्लाह की तस्बीह कही, अल्लाह से मग़फ़िरत माँगी, लोगों के रास्ते से कोई पत्थर हटा दिया, लोगों के रास्ते से कांटा या हड्डी हटाई, नेकी का आदेश दिया या बुराई से रोका इस तीन सौ साठ जोड़ों की संख्या के बराबर तो वह उस दिन इस तरह चलेगा कि अपने आपको दोज़ख़ की आग से दूर कर चुका होगा।

---

1. मुस्लिम : 1007

इस हदीस के विषय के बारे में इन विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं :

(1) डॉक्टर शरीफ़ अहमद जलाल

(2) डॉक्टर अहमद अब्दुल मुनइम अल-इयात

(3) डॉक्टर मुस्तफ़ा मुहम्मद अब्दुल मुनइम

(4) डॉक्टर ख़लील इबराहीम मुलाख़ातिर

ये चारों विशेषज्ञ जोड़ (मुफ़स्सिल) की शाब्दिक व बौद्धिक परिभाषा पर सहमत हैं कि दो हड्डियों या एक हड्डी और एक कड़ी या दो कड़ियों के मिलने की जगह मानव शरीर में जहाँ हो उसे मुफ़स्सिल (जोड़) कहते हैं, जबकि इन दोनों के बीच फ़सल (अलग) करने वाली कोई चीज़ न हो।

इन विशेषज्ञों के कहने के अनुसार यह परिभाषा शब्दकोष अनुकूल है, अलबत्ता मुफ़स्सिल का शब्द वैज्ञानिक ज़ाब्ते में दर्ज होता है, जिसमें वे जोड़ भी शामिल होते हैं, जिनमें ग़ज़रूफ़ (नरम हड्डियाँ) भी होती हैं। इसी तरह आधुनिक काल की मेडीकल साइंस के हवालों से भी नहीं टकराता है। अलबत्ता शब्दकोष के तहत मुफ़स्सिल की जो व्याख्या की जाती है वह दो चीज़ों के बीच अलग करने वाली चीज़ का अस्तित्व है।[1] डॉक्टर हामिद अहमद हामिद ने अपनी किताब "मानव शरीर में ईमान का सफ़र" में इस संख्या की व्याख्या इस तरह की है :

(1) रीढ़ की हड्डी, इसमें147 जोड़ होते हैं

- 25 रीढ़ के मटके के जोड़

-72 मुहरे और पसलियों के बीच जोड़

- 50 मुहरों के किनारे की ओर

(2) सीने में 24 जोड़

-2 सर, सीना और पसली के पिंजरी के बीच जोड़

-18 सर, सीना और पिंजरी के बीच जोड़

---

1. Quran-m.com

- 2 हँसली और कंधे के जोड़

- 2 कंधे और सीने के जोड़

(3) ऊपर की दिशा में 86 जोड़

- दोनों कंधे की हड्डियों के बीच

- 6 कोहनी की हड्डियों के बीच जोड़

- 8 कलाई की हड्डीयों के बीच जोड़

- 70 दोनों हाथों की हड्डियों के बीच जोड़

(4) निचली दिशा में 92 जोड़

- 2 रानों के बीच जोड़

- 6 घुटनों की हड्डियों के बीच जोड़

- 6 बाज़ुओं की हड्डियों के बीच जोड़

- 74 पांवों की हड्डियों के बीच

- 4 घुटने की हड्डियों की बीच

(5) श्रोणी के 11 जोड़

- 4 दम गज़ा के मनकों के जोड़

- 6 दाएं की हड्डियों के बीच जोड़

- नाभी के नीचे में जोड़

कुल : 147+24+86+92+11=360 जोड़

ऑस्ट्रेलियाई मेडिकल संस्था के ख़बरनामा में उल्लेख किया गया है कि शरीर में 360 जोड़ हैं।[1]

(2) जीन का निर्माण

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जीन के निर्माण के बारे में एक हदीस में इशारा किया है, "तुम में से हर एक व्यक्ति का मूल चालीस दिन तक उसकी

1. www.ahlalheeth.com

माँ के पेट में नुतफ़े के रूप में इकट्ठा किया जाता है, फिर वह उतनी ही अवधि (चालीस दिन) के लिए अलक़ा जोंक की तरह गर्भाशय की दीवार से चिपका हुआ रहता है। फिर इतनी अवधि के लिए मज़ग़ा के रूप में रहता है, फिर अल्लाह-तआला फ़रिश्ते को भेजता है, और उसे चार बातों का आदेश दिया जाता है और उससे कहा जाता है कि उसका कर्म, उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, और यह कि वह ख़ुशनसीब होगा या बदनसीब लिख लिया जाए। उसके बाद उसके अन्दर रूह फूंक दी जाती है।[1]

और यह क़ुरआन के बयान के अनुसार है जो कई आयतों में है। जैसे :

"हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया। फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई बूँद बनाकर रखा। फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया; फिर हमने उस लोथड़े को बोटी का रूप दिया; फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाईं फिर हमने उन हड्डियों पर माँस चढ़ाया; फिर हमने उसे एक दूसरा ही सर्जन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकत वाला है अल्लाह, सबसे उत्तम स्रष्टा![2]

क़ुरआनी आयतों और हदीसों में जीन निर्माण के तीन चरणों की व्याख्या की गई है :

नुतफ़ा, अलक़ा और मज़ग़ा। यानी शुक्राणु, ख़ून का टुकड़ा और लोथड़ा।

जीन के निर्माण के चरणों को क़ुरआन व हदीस ने बहुत ही यक़ीनी और वैज्ञानिक अंदाज़ में सदियों पहले पेश कर दिया है, जब कि उन जानकारियों की प्राप्ति का कोई साधन नहीं था। न साइंस थी, न टेक्नोलोजी और न सूक्ष्मदर्शी जैसी कोई मशीन थी। डॉक्टर कीथ मोर (Keith Moore) जो दुनिया के जानेमाने इम्ब्रियोलोजिस्ट में से एक हैं। जीन इम्ब्रियोलोजी पर यूनीवर्सिटी स्तर की किताब के परिचय में, जिसे दुनिया के कई मेडिकल कॉलेजों ने मंज़ूर किया है, वे कहते हैं कि क़ुरआन ही वह अकेली किताब है जिसने हमारे ज़माने से पहले ही बहुत ही सही ढंग से जीन के विकास की व्याख्या की है।

---

1. बुख़ारी : 3208
2. अल-मोमिनून :12-14

1986 ई. में क़ुरआन व हदीस का वैज्ञानिक चमत्कार के विषय पर क़ाहिरा में आयोजित पहली कान्फ्रेंस में डॉक्टर कीथ मोर ने अपने लेक्चर में कहा, "मैं जीन के विभिन्न चरणों की रचना के बारे में अल्लाह का करिश्मा नहीं समझता कि मुहम्मद (सल्ल०) या कोई और जीन के विभिन्न चरणों के बारे में जानता रहा होगा, क्योंकि इन चरणों की खोज बीसवी सदी के आख़िर से पहले हुई ही नहीं थी। मैं बड़े ज़ोरदार अंदाज़ में कहता हूँ कि मैंने क़ुरआने-करीम में जीन के विकास और गर्भ के अन्दर होने वाले बदलावों के बारे जो कुछ पढ़ा है वह मेरी उन जानकारियों के बिलकुल अनुरूप है जो मैं दुनिया के जाने-माने इम्ब्रियोलोजिस्ट की हैसियत से जानता हूँ।[1]

क़ुरआन व हदीस में जीन के कुल सात चरण बयान किए गए हैं। उसे विशेषज्ञ इम्ब्रियोलोजिस्ट ने भी साबित किया है।

(1) मानव मूल (गुँधा हुआ गारा)

(2) शुक्राणु

(3) ख़ून का टुकड़ा

(4) लोथड़ा

(5) हड्डियाँ

(6) हड्डी पर गोश्त

(7) विकास[2]

इन चरणों की व्याख्या

(1) गुँधा हुआ गारा : सलाला उस मिट्टी का गारा जो ज़मीन के हर हिस्से से ली गई और उससे सबसे पहले मानव 'आदम' पैदा किए गए और 'तीन' वह मिट्टी जो पानी और मिट्टी के मिश्रण से बनी हो।

(2) नुतफ़ा : स्त्री-पुरुष की मणि जो सहवास के बाद मिल जाती है और स्त्री व पुरुष दोनों की मणि नुतफ़ा है।

1. www.islamstory.com
2. www.alukahnet/sharid/o/51169)

(3) अलक़ा : बस्ता ख़ून का टुकड़ा। यह जमा हुआ ख़ून है जो दो परत वाला होता है। ऊपरी परत और भीतरी परत। इसी से अल्लाह भ्रूण पैदा करता है।

(4) लोथड़ा (मुज़ग़ह) : गोश्त की बोटी, छोटा-सा टुकड़ा जो मुँह में चबाया जा सके। गर्भधारण के बाद तीसरे हफ़्ते में यह लोथड़ा तैयार होता है और यह हालत दो चरणों से गुज़रती है।

(अ) रचनाविहीन : यह चरण गर्भधारण के तीसरे हफ़्ते से चौथे हफ़्ते तक जारी रहता है और इसमें किसी अंग का रूप ज़ाहिर नहीं होता।

(ब) रचित : चार हफ़्तों के बाद गर्भ बहुत सूक्ष्म बदलावों के दौर से गुज़रता है, इसमें कोशिकाएँ बढ़ती हैं। एक हालत से दूसरी हालत बदलती है, ताकि इन्सान बन सके और यह चरण तीसरे महीने के अंत में लगभग ख़त्म हो जाता है।

(5) हड्डियों का आकार : अल्लाह ने कहा, "फिर बोटी को हड्डियाँ बनाईं। इस चरण में भ्रूण एक विशेष रूप अपना लेता है और लोथड़े की सूरत ख़त्म होकर एक नई शक्ल नमूदार हो जाती है। नरम हड्डी (ग़ज़रूफ़) का ढाँचा तैयार हो जाता है और सातवें हफ़्ते के आरंभ में नरम हड्डी (ग़ज़रूफ़) के ढाँचे में हड्डी के प्रथम आकार ज़ाहिर होते हैं और सर का हिस्सा धड़ से निकल कर अपनी शक्ल बना लेता है। हाथ पांव ज़ाहिर होते हैं। अल्लामा इब्ने कसीर इस चरण के बारे में लिखते हैं, "शक्ल में ढल जाता है। सर, दो हाथ, दो पैर, हड्डियों, पट्ठों, रगों की सूरत बन जाती है।

(6) हड्डी पर गोश्त : अल्लाह ने कहा, "फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया।"[1] इस चरण में गर्भ में पलने वाले बच्चे की शक्ल बहुत स्पष्ट हो जाती है। इन सटीक और हैरतअंगेज़ जानकारी तक सदियों बाद इस ज्ञान के विशेषज्ञ की पहुँच हो पाई कि गर्भ के सातवें हफ़्ते के अंत में हड्डियाँ बनती हैं और आठवें हफ़्ते में पट्ठे चढ़ते हैं। फिर उसके बाद चरण आता

1. अल-मोमिनून : 14

है हड्डियों पर गोश्त चढ़ने का। ये वे सच्चाइयाँ हैं जिनका उल्लेख क़ुरआन करता है। पाक है वह हस्ती जिसने हर चीज़ को बेहतरीन सांचे पर बनाया।

इस तरह जीन की रचना का चरण पूरा हो जाता है जिसका नाम जीन की रचना का चरण है। अल्ट्रासाउंड के माध्यम से मेडिकल साइंस ने अब यह बात जान ली है कि एक वयस्क व्यक्ति के अन्दर मौजूद सभी आंतरिक और बाहरी रचनाएँ जीन के चरण में ही चौथे हफ़्ते से आठवें हफ़्ते के दौरान रूप ले लेती हैं। जैसा कि मेडिकल उपकरणों, एक्सरे, अल्ट्रासाउंड आदि के ज़रिये जीन के इन सभी अंगों को गर्भ के आरंभिक तीन माह के दौरान आसानी से देखा जा सकता है।

(7) **विकास (बढ़ोत्तरी) :** अल्लाह ने कहा, "फिर उसे एक दूसरा ही जीव बना खड़ा किया।"[1] यह चरण नौवें हफ़्ता में शुरू होता है, क्योंकि जीन बारहवें हफ़्ते तक धीमी गति से बढ़ता है। उसके बाद विकास की गति बढ़ जाती है और अंत तक यह चरण जारी रहता है। इस चरण की ख़ास विशेषताएं हैं, जिनमें कुछ बहुत ही अहम हैं। जीन की शारीरिक तंत्र, अंगों का विकास कि ये अंग अपने कामों को अंजाम देने के लिए तैयार हो सकें। इससे क़ुदरत का बहुत ही अहम करिश्मा ज़ाहिर होता है। इसी चरण में इसके अन्दर आत्मा पैदा होती है।

पाँचवीं सदी ईसवी में मुहम्मद (सल्ल०) माँ के गर्भ में बनने वाले बच्चे के हालात और विभिन्न चरणों की तफ़्सील बताते हैं जो इस बारे में क़ुरआनी जानकारी के अनुरूप हैं। इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की रिवायत नक़ल की है जिसमें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "तुम में से हर एक व्यक्ति की रचना का माद्दा चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में इकट्ठा किया जाता है, फिर वह इसी अवधि (चालीस दिन) के लिए अलक़ा रहता है (जोंक की तरह) गर्भ की दीवार से चिपका हुआ। फिर उतनी ही अवधि के लिए मज़ग़ा की शक्ल में रहता है। फिर अल्लाह

---

1. अल-मोमिनून : 14

फ़रिश्ता को भेजता है। और इस फ़रिश्ते को चार बातों का आदेश दिया जाता है कि उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, उसका कर्म और यह कि वह ख़ुशनसीब होगा या बदनसीब लिख लिया जाए। और उसके अन्दर आत्मा फूंक दी जाती है।[1]

अब इन तीन चरणों–नुतफ़ा, अलक़ा और मज़ग़ा की अवधि को जमा करें जैसा कि हदीस में बताया गया है, तो चार महीने बनते हैं। इसके बाद इस शरीर के अन्दर रूह डाली जाती है। यह हू-ब-हू वही जानकारी हैं जिन्हें आधुनिक मेडिकल साइंस ने मालूम किया है। मेडिकल साइंस की पहुँच सदियों बाद हुई।

लंदन के इम्पेरियल कॉलेज के एक अनुसंधान में, जिसे कैरोलीन बरोजिट ने लिखा है, वे कहती हैं कि जीन सामान्यतः दस हफ़्तों के अन्दर अपने सर और गर्दन को हरकत देना शुरू कर देता है और गर्भवति माएँ दो हफ़्तों (सोलहवें से अठारहवें हफ़्ते के बीच लात मारने जैसी हरकत महसूस करने लगती हैं। यह अनुसंधान वही जानकारी देता है जिसकी खोज नबी (सल्ल०) ने सदियों पहले की कि 120 दिन बाद रूह डाली जाती है।[2]

(3) बैठ कर पीना

इमाम मुस्लिम ने हदीस नक़ल की जिसमें बताया गया कि आपने इन्सान को खड़े होकर पीने से मना कहा। हज़रत क़तादा (रज़ि०) कहते हैं कि हमने पूछ लिया कि खाने का क्या आदेश है तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा यह और बुरा है।[3]

रिवायात में यह भी आया है कि कुछ सहाबा ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को खड़े होकर पीते देखा। कुछ उलमा ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के खड़े होकर पीने की वजह यह बताई कि ज़रूरत के समय खड़े होकर पीना जायज़ है, वरना आम हालात में असल तरीक़ा बैठकर खाने और पीने का है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जब बताया कि खड़े होकर खाना-पीना नहीं चाहिए तो उस समय किसी को इसकी समझ नहीं थी कि इसके पीछे क्या

1. बुख़ारी : 3208, मुस्लिम : 2643
2. by Caroline Brogan02 February 2018 / Imperial.ac.uk/news/ 184591/ First study
3. मुस्लिम : 2024

राज़ है और क्या हिक्मत है। लेकिन जब यह दौर आया और इसमें इस मामला की हिक्मत और वैज्ञानिक राज़ खुला जिसे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने चौदह सौ साल पहले बता दिया था। यह खुली दलील है कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह की वह्य उन पर आती है, जो अल्लाह आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ है।

विश्व विख्यात डाइटिशियन और न्यूट्रिशनिस्ट संध्या गुगनानी (Sandhya Gugnani) खड़े होकर पानी पीने के बहुत से दुष्प्रभाव बयान करती हैं।

वे कहती हैं कि खड़े होकर पानी पीने से शरीर की तरल व्यवस्था में बिगाड़ पैदा होता है और तरल पदार्थ की गति असंतुलन का शिकार होती है जो शरीर में विषैले पदार्थों की अधिकता और अपच का कारण बनते हैं। इसी तरह जोड़ों में तरल पदार्थ के इकट्ठा होने की वजह से जोड़ों में दर्द और जलन की समस्या पैदा हो जाती है। इसी तरह यह काम गुर्दे के ज़रिये पानी की सफ़ाई की प्रक्रिया को प्रभावित करता है जो गुर्दे, पेशाब की थैली (युरीन ब्लाडर) और पेशाब की नालियों के इन्फ़ेक्शन का कारण बनता है।[1]

Dietitian आयुश गुप्ता (Aayush Gupta) लिखते हैं. "खड़े होकर पानी पीने की आदत छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि इससे पाचन तंत्र अस्त-व्यस्त हो जाता है, क्योंकि जब आप खड़े होकर पानी पीते हैं तो पानी बड़ी तेज़-गति और शक्ति से खाने की नाली से गुज़रता है और सीधा आमाशय के निचले हिस्से में गिरता है जो बहुत ही हानिकारक है।

डॉक्टर रश्जी कहते हैं :

> "खड़े होकर पानी पीना जोड़ों में तरल पदार्थ के जमा होने का कारण बन सकता है जिससे जोड़ों में जलन की दिक्कतें हो सकती हैं और जोड़ों को गंभीर नुक़सान पहुँच सकता है।"

आयुश गुप्ता इस पर आगे कहते हैं कि शरीर को वांछित पोषक तत्व और विटामिन खड़े हो कर पानी पीते समय लिवर और पाचन तंत्र तक नहीं पहुँच

1. Why standing and drinking water is a bad habit / Sandhya Gugnani Shutterstock.com

पाते, क्योंकि पानी के गुज़रने की गति बेहद तेज़ हो जाती है जो फेफड़ों और दिल के लिए ख़तरनाक है, इसलिए कि इससे ऑक्सीजन की सतह असंतुलन का शिकार हो जाती है।[1]

Longjam Dineshwori कहते हैं कि पानी पीते समय हमेशा बैठ जाया करें। जब आप पानी खड़े होकर पिएँगे तो पानी आपके पेट में साफ़ हुए बिना तेज़ी से चला जाएगा। इस तरह पानी में पाए जानेवाले कुछ कण ब्लाडर में रुक जाएँगे जो गुर्दे को नुक़्सान पहुँचा सकते हैं। इसके अलावा जब आप खड़े होकर पानी पीते हैं तो पानी शरीर के अन्दर तेज़ गति से गुज़रता है, जिसकी वजह से आपका दिल और फेफड़े ख़राब हो सकते हैं।[2]

(4) बैठ कर खाना

ये हदीस इमाम मुस्लिम ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इन्सान को खड़े होकर पीने से मना किया है। हज़रत क़तादा (रज़ि०) कहते हैं कि हमने पूछा और खाना ? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा वह और बुरा है।[3]

डॉक्टर अब्दुर्राज़िक़ गिलानी कहते हैं :

> बैठ कर खाना-पीना ज़्यादा ठीक है। सुरक्षित है, ख़ुशगवार और बेहतर है। इसमें सारे अंग शांत रहते हैं। पेट आराम में होता है, इसलिए पानी आमाशय के मुँह से आमाशय की दीवारों पर आहिस्ता-आहिस्ता धीमी गति से पहुँचता है। और अगर खड़े होकर पीते हैं तो पानी आमाशय के मुँह से सीधे तह तक पहुँचता है और तेज़ी से गुज़रता है। अगर यही नियम बन जाए तो आमाशय ढीला पड़ जाता है और गिरावट का शिकार हो जाता है, जिसकी वजह से इन्सान अपच के रोग का शिकार हो जाता है।

डॉक्टर इबराहीम रावी कहते हैं :

> जब इन्सान खड़ा होता है तो इसमें तनाव होता है और संतुलन का तंत्र तंत्रिकाओं के केंद्रीय स्थानों में बहुत ही तीव्र रूप से सक्रिय हो

1. www.health shotscom 2. www.theheathsite.com 3. मुस्लिम : 2024

जाता है, ताकि बदन के सभी पुट्ठों पर कंट्रोल प्राप्त कर के शरीर को संतुलित और सीधा खड़ा रख सके। यह एक नाज़ुक और पेचीदा काम है जिसमें तंत्रिका तंत्र और माँसपेशियाँ एक ही समय में काम करते हैं जिसकी वजह से इन्सान अंगों को स्थिर करने में नाकाम रहता है, जो खाने पीने के समय की सबसे अहम शर्तों में से है।

डॉक्टर रावी बड़ी ताकीद के साथ कहते हैं कि खड़े होकर खाना-पीना आमाशय के अन्दरूनी हिस्से पर तेज़ तंत्रिका प्रभाव डालता है। यह तंत्रिका प्रभाव उन अहम थंत्रिकाओं के ज़रिये पूरे होते हैं जो आमाशय के अन्दरूनी हिस्से में फैले हुए होते हैं और जब ये तंत्रिका प्रभाव सख़्ती के साथ अचानक पड़ते हैं तो यह ख़तरनाक परिणाम का कारण बन सकते हैं जिनकी वजह से दिल पर घातक धचका लगता है जिससे वह रुक जाता है। और बेहोशी या अचानक मौत का कारण बन सकता है।

(5) आबे-ज़मज़म

आबे-ज़मज़म की उपयोगिता और रोगों के लिए इसमें उपचार होने के बारे में कई हदीसें हैं। इसमें से यह भी है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा ज़मीन का सबसे बेहतरीन पानी आबे-ज़मज़म है। इसमें पौष्टिक तत्व भी हैं और रोगों का उपचार भी है।[1]

दूसरी हदीस में है : आबे-ज़मज़म में पौष्टिक तत्व भी हैं और हर बीमारी का उपचार भी है।[2]

हदीस में आबे-ज़मज़म के तीन गुण बयान हुए हैं :

(1) ज़मीन का सबसे बेहतरीन पानी है।

(2) बीमारी का उपचार : इसमें लोगों के लिए रोगों का उपचार है।

(3) पौष्टिक तत्व हैं : यानी इसे पीने से खाना खाने की ज़रूरत पूरी होती है, प्यासे की प्यास बुझाता है और ऊर्जा देता है।

---

1. तबरानी, अलबानी ने सही कहा
2. तबरानी : 3572, अल-जामे-अस्सग़ीर : 3322

(1) ज़मीन का सबसे बेहतरीन पानी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के कथन पर मुसलमान शक कर ही नहीं सकते, इसलिए कि मुसलमानों का अक़ीदा है कि रसूल (सल्ल०) वही बोलते हैं, जो अल्लाह की ओर से उन्हें बोलने को कहा जाता है। इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिन नई खोजों और वैज्ञानिक आविष्कारों के बारे में इशारे दिए हैं, वे मुसलमानों के ईमान में और इज़ाफ़ा करते हैं और मुहम्मद (सल्ल०) की नुबूवत पर नए प्रमाणों का इज़ाफ़ा करते हैं।

इस विषय पर सऊदी मीडिया में बड़े पैमाने पर बहस और मुबाहिसा का सिलसिला जारी रहा जिसकी रूदाद अख़बार 'अल-रियाज़' 20/7/2011 और अख़बार 'अल-मदीना' 10/5/2011 में प्रकाशित हुई।

हरमैन शरीफ़ैन के ज़िम्मेदार शैख़ सालिह अल-हसीन को ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी कि वे आबे-ज़मज़म के वैज्ञानिक गुण, उसके अवयव और इससे जुड़ी चीज़ों के बारे में छानबीन करें। इस बारे में विशेषज्ञ की एक कमेटी बनाई गई जो वैज्ञानिक तरीक़े और पानी के गुणों से बख़ूबी परिचित थे। एक साल तक अध्ययन होते रहे और नमूनों के बार-बार टेस्ट किए गए, उसके बाद वैज्ञानिक और लैब तहक़ीक़ के नतीजे आए :

(1) आबे-ज़मज़म में किसी तरह का कोई कैमिकल या बैक्टीरियल प्रदूषण नहीं है।

(2) जिन तीन स्रोतों से आबे-ज़मज़म निकलता है उनमें से हर एक के अलग अलग नमूने लिए गए और तीनों के मिश्रित नमूने भी लिए गए। जांच के बाद पता चला कि आबे-ज़मज़म के ख़ास गुणों में दुनिया का कोई पानी उस जैसा नहीं है और न उस जैसा पानी बनाया जा है।[1]

डॉक्टर ज़ग़लूल नज्जार क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कार कमेटी के अध्यक्ष (मिस्र) लिखते हैं कि आप ज़मज़म के अन्दर पाए जानेवाले स्वास्थ्यवर्धक अवयव उसे दूसरे पानियों से बिलकुल जुदा कर देते हैं। यह पानी अनगिनत

1. makkahnewspaper.com/article 1558435 Zamzam Wateran an achirve mentand Mirache

गुणों से माला-माल हैं और इसकी विशेषताएं ऐसी हैं जो दूसरे पानियों में नहीं पाई जातीं।[1]

(2) रोगों में उपचार : डॉक्टर Dr. knut pfeiffer लिखते हैं आबे-ज़मज़म एक तरल और शीलत जीवनदायी पदार्थ है। मेरी राय में यह केवल पानी नहीं है बल्कि दवा भी है और अध्ययन से पता चला है कि आबे-ज़मज़म कोशिका व्यवस्था को बेहतर बनाता है जो अच्छे स्वास्थ्य का माध्यम बनता है। इस तरह आबे-ज़मज़म में फ्लोराइड पाया जाता है जो कीटाणुनाशक होता है।[2]

आबे-ज़मज़म में स्वास्थ्य के लिए अनगिनत फ़ायदे हैं जिनमें से कुछ ये हैं :

(1) आबे-ज़मज़म ख़ून के प्लेटलेट्स को बढ़ाने में मदद करता है, शरीर की रोग निरोधक क्षमता को बढ़ाता है, ख़ून की सफ़ेद कोशिकाओं और सुर्ख़ कोशिकाओं को बढ़ाता है और शरीर से विषैले पदार्थों को निकालता है।

(2) आबे-ज़मज़म भूख के प्रभावों को कम करता है।

(3) आधुनिक अध्ययन की रोशनी में यह सच्चाई सामने आई है कि आबे-ज़मज़म का इस्तेमाल आँखों के सौंदर्य में इज़ाफ़ा करता है, दृष्टि को मज़बूत करता है और आँखों के बहुत सी समस्याओं का इलाज करने में सहयोगी होता है।

(4) आबे-ज़मज़म अपने स्वभाव में अलकालाईन है। इसका यह गुण इसे पेट की जलन के इलाज के लिए उपयोगी बनाता है।

(5) अध्ययन के अनुसार यह दाँतों को झड़ कर टूटने से रोकने में बहुत प्रभावशाली है। दाँतों को सड़ने से रोकने लिए परत को मज़बूत करता है।

(6) म्यूनख़ के सबसे बड़े मेडिकल केंद्र के अध्यक्ष Dr. knut pfeiffer ने आबे-ज़मज़म पर कई अध्ययन किए ताकि इस पानी के मेडिकल सत्य

---

1. mubasheracjuzeera.net/news/20217/15
2. Muslimimk.o.com

को उजागर कर सकें। इन अध्ययनों के नतीजे में जो बड़ी सच्चाई सामने आई वह यह कि इस पानी में मानव शरीर की कोशिकाओं की ऊर्जा बढ़ाने की योग्यता है। इसी तरह यह पानी मानव शरीर की कोशिकाओं के तंत्र को मज़बूत करता है।

(7) अध्ययन से यह भी साबित हुआ कि चूँकि इसमें कैल्शियम की बड़ी मात्रा होती है, इसलिए इस पानी के सकारात्मक प्रभाव मानव शरीर पर पड़ते हैं, ख़ासतौर से हड्डियों के लिए उपयोगी है। क्योंकि हड्डियों का विकास ही विटामिन को रोकता है और बेहतर विकास में मदद देता है।

(8) ब्राज़ील के बायोलोजीकल जर्नल में प्रकाशित होने वाले एक वैज्ञानिक अध्ययन में चूहों के एक ग्रुप पर ज़ख़्म भरने के लिए आबे-ज़मज़म के प्रभाव में दिखाया गया कि इसमें ज़ख़्म भरने का गुण भी है।

(9) पाकिस्तानी ज़ूलोजीकल सोसाइटी ने एक वैज्ञानिक अनुभव प्रकाशित किया है जिसमें कैंसर के मरीज़ों के लिए इस्तेमाल होने वाली दवा (Doxorubincin) के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने में आबे-ज़मज़म के बड़े सकारात्मक नतीजे ज़ाहिर हुए और कीमोथेरापी के नकारात्मक प्रभाव भी इससे दूर होते हैं।

यह मेडिकल अध्ययन कहता है : हमने इन अध्ययन पर भरोसा करते हुए जिनमें कहा गया है कि आबे-ज़मज़म विभिन्न बीमारियों के इलाज में उपयोगी है, इरादा किया कि नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए आबे-ज़मज़म को आज़माया जाए। हमने चूहों पर अनुभव करना शुरू किया। चूहों के दो ग्रुप बनाए। एक ग्रुप की कीमोथेरापी के साथ एक महीना आबे-ज़मज़म भी पीने की व्यवस्था की गई। अध्ययन के अंत पर हमने चूहों को जाँचना शुरू किया और लैब टेलिस्कोप से चूहों के दिलों का मुआईना किया तो पता चला कि जिन चूहों ने कीमोथेरापी के दौरान आबे-ज़मज़म पिया था उन पर कीमोथेरापी के नकारात्मक प्रभाव नहीं आए और आबे-ज़मज़म ने एक सुरक्षा कवच का काम किया, इसलिए कि आबे-ज़मज़म में जस्ता भी शामिल होता है।[1]

1. Mohammad Almujtala, (Zinc Inal kaline Waters Zamzam) Pakistan J-Zool, PP. 1-11-2022

(3) पौष्टिक तत्व

अध्ययन के अनुसार आबे-ज़मज़म में फ्लोराइड, मैग्नीशियम, कैल्शियम, क्लोराइड, सल्फेट और नाइट्रेट की ज़्यादा मात्रा होती है, यह दूसरे पानी के मुक़ाबले में अलकली से भरपूर होता है, क्योंकि Alkaline तत्वों का अनुपात ज़मज़म के पानी में ज़्यादा होता इसलिए आबे-ज़मज़म का हाजियों में उत्साह पैदा करने में बड़ी भूमिका है।

वैज्ञानिक खोज के अनुसार इन्सान केवल आबे-ज़मज़म पी कर ज़िंदा रह सकता है, क्योंकि इस पानी में ऊपर वर्णित तत्व पाए जाते हैं जो दूसरे पानी में नहीं पाए जाते। इसलिए जीवन के अस्तित्व के लिए शरीर पर इसके बहुत अच्छे प्रभाव पड़ते हैं।

आबे-ज़मज़म का बाक़ायदा इस्तेमाल शरीर को भोजन उपलब्ध कराता है और इससे वज़न बढ़ता है।

(6) मोटापा

नबी (सल्ल०) का आदेश है :

"किसी इन्सान ने अपने पेट से बुरा बर्तन कभी नहीं भरा। आदम के बेटे के लिए कुछ निवाले काफ़ी हैं जो उसकी कमर सीधी रखें और अगर ज़्यादा खाना ज़रूरी हो तो एक तिहाई हिस्सा पेट खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई सांस लेने के लिए निर्धारित कर दे।"[1]

पिछले ज़माने में और ख़ासतौर से नबी (सल्ल०) के ज़माने और उससे पहले यानी सातवीं सदी ईसवी से पहले लोगों का ख़याल था कि अधिक खाना स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है, ऊर्जा को बढ़ाता है। लंबी उम्र का ज़रिया है, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इस ग़लतफ़हमी को दूर किया और बताया कि अधिक खाना और मोटापा कई सारे रोगों का कारण बनता है। किसी इन्सान ने अपने पेट से बुरा बर्तन नहीं भरा।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने चौदह सौ साल पहले मोटापे की बीमारी से

---

1. तिर्मिज़ी : 2283

ख़बरदार किया और बीसवीं सदी के अंत में अध्ययन से पता चला कि बहुत-सी बीमारियों का कारण मोटापा है। उनमें से कुछ ये हैं :

(1) **एनजाइना और दिल का दौरा :** एक ऐसी रिपोर्ट जिसको स्कॉलर्स की एक टीम ने तैयार किया है। उसका शीर्षक है, "मोटापा और दिल एवं ख़ून की नालियों की बीमारियाँ। इसमें यह नतीजा निकाला गया है कि दिल की 21 फ़ीसद बीमारियाँ मोटापे की वजह से होती हैं, जबकि दूसरी ओर यूरोपियन अध्ययन के अनुसार यह दर 2008 तक 35 फ़ीसद तक पहुँच गई।[1]

(2) **दिल का फ़ेल होना :** दिल के फ़ेल होने की घटनाओं की वजह 11 फ़ीसद मर्दों और 14 फ़ीसद औरतों में मोटापे को बताया गया है।[2]

(3) **हाई ब्लड प्रेशर :** वैज्ञानिक अध्ययन ने साफ़ किया है कि 80 फ़ीसद हाई ब्लड प्रेशर के रोग की वजह मोटापा है। आम वज़न वालों के मुक़ाबले में मोटापे के शिकार लोगों में हाई ब्लड प्रेशर का ख़तरा पाँच गुना ज़्यादा है।[3]

(4) **हाई कोलेस्ट्रोल की सतह :** मोटापे का सम्बन्ध कम घनत्व वाले लीपोप्रोटीन (LDL) यानी ख़राब कोलेस्ट्रोल की ज़्यादती और उच्च घनत्व वाले लीपोप्रोटीन यानी अच्छे कोलेस्ट्रोल की कमी से है।[4]

(5) **गहरी रग थ्रोम्बोस और पामोनरी एमबोलिज़्म :** एक आम व्यक्ति के मुक़ाबले में मोटापे के शिकार व्यक्ति को 2.3 गुना ज़्यादा मोटापा होता है।[5]

---

1. Thomas D Geles A Bray./Arteriosclerosis, Thrombosis, and Vascular Biology-2006-26:268-976/published 20/4/2006
2. Dr. David Haslam Pro Wphilip James/Obesity/ The Lancet / published: 1/10/2005
3. Dr. David Haslam Pro Wphilip James/Obesity/ The Lancet / published: 1/10/2005
4. Prof. Seams Donnelly / The Medical Complications of obesity /Oxford University press /QJM/ 1st publication online : 17/8/2006
5. Walter Ageno Cecilia Becattini / Cardiovas Cular Risk Factors and Venous thronboembolism / published: 17 Dec. 2007, Circulation 2008 117, 93, 102

(6) चर्म रोग : ज़्यादा मोटापे के नकारात्मक प्रभाव में चर्म रोग भी हैं। हद से ज़्यादा मोटे लोगों में पानी की कमी की वजह से त्वचा की ग्रहण क्षमता में कमी का आ जाती है, जिससे कई तरह के चर्म रोग होते हैं। इसी तरह इससे तलवे की जलन में ज़्यादती होती है।[1]

इसमें शक नहीं कि मोटापे के बहुत ही घातक नतीजे हैं और जिनका उल्लेख किया गया वे तो केवल कुछ ही हैं। अलबत्ता दूसरी ओर निगाह डालने से अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की अज़मत का इज़हार होता है कि इन्होंने दुनिया के सामने चौदह सौ साल पहले अधिक खाने से पैदा होने वाले मोटापे की गंभीरता को बता दिया और स्वास्थ्य सुरक्षा के स्तरीय उसूल बता दिए।

(7) कलौंजी (Black Seed Nigella Sativa) : चौदह सौ साल पहले नबी (सल्ल०) ने कलौंजी के गुण और लाभ का उल्लेख किया और अब मेडिकल साइंस ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की बातों की पुष्टि कर दी है, हालाँकि आपके दौर (सातवीं सदी ईसवी) में न टेलिस्कोप थी, न लेबोरेटरी कि कलौंजी के अवयव की समीक्षा हो सकती। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कलौंजी के बारे में कहा कि कलौंजी में मौत के सिवा हर बीमारी का उपचार है।[2]

बहुत साफ़ तौर से नबी (सल्ल०) ने बता दिया कि कलौंजी में हर बीमारी का उपचार है बस मौत आ गई तो अलग बात है।

Journal of Herbal medicine ने फ़रवरी 2021 कलौंजी के बारे में नए अध्ययन के शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें वानस्पतिक, रासायनिक और दवाओं की विशेषताओं का जायज़ा लिया गया है। इसमें सऊदी यूनीवर्सिटियों और भारतीय संस्थाओं के विशेषज्ञ सम्मिलित रूप से अनुसंधान के बाद संयुक्त रूप से कई नतीजों तक पहुँचे हैं :

---

1. The Impact of obesity on skin /24 Disease / JEADV/ Issuez / February 2010 Page195

2. बुख़ारी : 5688

(1) कुनैन की वजह से अहमियत है जिसे थामोकोइनोन (Thy Moqui-none) के नाम से भी जाना जाता है जिसका अहम तरीन अंश हवा में घुल जाने वाला तेल होता है। इसमें जिगर की रक्षा, जलन, कीटाणु, फंगस और कैंसर से मुक़ाबला करने की विशेषताओं का एक संयोजन है।

(2) कीटाणुनाशक है : इन्फ़ेक्शन और त्वचा की बीमारियों को ख़त्म करते है और रोग निरोधक क्षमता को बढ़ावा देता है। अध्ययन से पता चला है कि कलौंजी के तेल से निकाला गया थामोहाइड्रोकुनैन (Thymo-hy droquinone) बारीक कीटाणुओं से रक्षा की योग्यता रखता है और इससे निकाला जाने वाला डाइथायलइथर बैक्ट्रिया से मुक़ाबले की योग्यता रखता है।

अध्ययन में क्लौंजी और भी गुण और मेडीकल उपयोगिताओं का पता चला। इस विषय पर खोज करने वाले उनका अध्ययन कर सकते हैं।

(8) दाहिने करवट सोना

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) लोगों को दाहिने करवट सोने की प्रेरणा देते थे। हदीस में आया है कि जब कोई सोना चाहे तो दाएँ करवट सोए।[1]

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की इस हिदायत के वैज्ञानिक राज़ क्या हैं? और क्या आप इस बात से परिचित थे, जबकि सातवीं सदी ईसवी में मेडीकल साइंस तरक़्क़ी के दौर से नहीं गुज़री थी। मशहूर अंग्रेज़ लेखिका Bethan Girdler-Maslen ने अपने लेख, 'दाहिने करवट सोना बुद्धि की स्वास्थ्य के लिए बेहतर है', मैं कहा है, कि नई वैज्ञानिक रिसर्च ने खोज किया है कि दाहिने करवट सोने के कई स्वास्थ्यवर्धक फ़ायदे हैं। इससे दिमाग़ स्वस्थ रहता है, जैसा कि तंत्रिकातंत्र विशेषज्ञ डॉक्टर तारा ने स्वास्थ्यवर्धक नींद के विषय पर वैज्ञानिक बात-चीत में कहा कि दिमाग़ी स्वास्थ्य के लिए बेहतर तरीक़ा दाहिने करवट सोना है।

1. सही इब्ने-हिब्बान : 5534

अमेरिकी डॉक्टर माइकल पारीस नींद की बीमारियों के विशेषज्ञ और 'गुड नाइट', किताब के लेखक कहते हैं, अध्ययन बड़ी उम्र के चरण में ख़ासतौर से दाहिने करवट सोने को तर्जीह देने की ओर इशारा करती हैं। इस बात के इशारे मौजूद हैं कि बड़ी उम्र के लोगों का दाहिनी करवट सोने को तर्जीह देना नींद की हालत में दिल की कारकर्दगी को सुरक्षित रखता है।[1]

इस्लाम वेबसाइट पर दाहिने करवट सोने के बारे में वैज्ञानिक अध्ययनों को पढ़ा जा सकता है।

– – – – –

1. Your Sleep Position/Ph.D. Michael J. BreusMarch 30.2019

रसूल (सल्ल०) और अल्पसंख्यक

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना मुनव्वरा हिजरत की तो उस समय मदीना में तीन तरह के अल्पसंख्यक आबाद थे :

(1) बुतपरस्त मुशरिक : ये अरब क़बीले थे, मदीना में रहते थे जिनमें दो बड़े क़बीले औस और ख़ज़रज थे।

(2) यहूदी: ये कई क़बीलों पर आधारित थे। उनमें बनु नज़ीर, बनु क़ैनक़ाह और बनु क़ुरैज़ा ख़ासतौर से उल्लेखनीय हैं।

(3) ईसाई : उनके क़बीले का नाम मरयमी था।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अल्पसंख्यकों के साथ आपसी सम्बन्ध के नियम निर्धारित किए जिनमें से कुछ ये हैं :

(1) इस्लाम क़ुबूल करने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा

अल्लाह ने कहा : "दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है।"[1]

एक रस्म चली आ रही थी कि जिस औरत की औलाद ज़िंदा नहीं बचती वह नज़र मानती कि अगर यह बच्चा ज़िंदा बच गया तो इसे यहूदी बनाएगी। ऐसी औरतों को मक़ला कहा जाता था। यह रस्म इस्लाम और रसूल (सल्ल०) के मदीना आने से पहले से चली आ रही थी। जब इस्लाम आया और यहूदियों के कुछ क़बीलों को मदीना से निकाल दिया गया तो कुछ अंसार ने अपनी औलाद को उनके साथ जाने से रोकने की कोशिश की और चाहा कि उनको इस्लाम में प्रवेश कर लें। उस समय यह आयत उत्तरी : ला इकराह फ़िद्दीन।

"दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है।"[2]

इसका उल्लेख हदीस में भी आया है जिसे अबू-दाऊद ने हज़रत

1. अल-बक़रा : 256   2. अल-बक़रा : 256

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से नक़ल किया है कि जिस औरत के बच्चे ज़िंदा नहीं बचते थे तो वह मन्नत मान लेती कि अगर बच्चा बच गया तो इसको यहूदी मज़हब में प्रवेश कर देगी। जब बनू नज़ीर का शहर-निकाला हुआ तो उनमें अंसार की औलाद भी थी अंसार ने कहा हम अपनी औलाद नहीं छोड़ेंगे। इस समय यह आयत नाज़िल हुई थी।[1]

(2) न्याय और समानता

मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम के अधिकारों में फ़र्क़ नहीं रखा गया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत के उद्देश्य में अत्याचार की समाप्ति, हक़दार को उसका हक़ दिलाना और ज़ालिम के ख़िलाफ़ मज़लूम की मदद करना था। और यही वह न्याय है जो इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में शामिल है। मुहम्मद (सल्ल०) के बाद आने वाले सभी ख़लीफ़ा आपकी लाई हुई उसी व्यवस्था के पाबंद रहे। न्याय की प्राप्ति के लिए दावे करने वाले की ज़िम्मेदारी है कि वह दलील पेश करे, गवाही लाए और जिसके ऊपर दावा किया गया है वह इल्ज़ाम ख़त्म करने के लिए क़सम खाए। इस क़सम को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने क़ानूनी दफ़ा बना दिया। मुद्दई के ज़िम्मा गवाह और मुद्दआ अलैहि के ज़िम्मे क़सम है। इस सिलसिले की घटनाएँ बहुत हैं।

(अ) एक सहाबी का एक यहूदी से झगड़ा हुआ। दोनों अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में फ़ैसले के लिए हाज़िर हुए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास केवल एक यही रास्ता था कि दोनों के बीच न्याय को लागू करें और अपने मुसलमान सहाबी की रिआयत बिल्कुल न करें, बल्कि न्याय को सहाबियत और दोस्ती के ऊपर रखें। हज़रत अशअस बिन क़ैस से गवाह की माँग की गई तो वे गवाह पेश न कर सके। फिर आप (सल्ल०) ने यहूदी से क़सम की माँग की कि अशअस ने जो इल्ज़ाम लगाया वह ठीक नहीं है। यहूदी ने क़सम खाई। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यहूदी के पक्ष में फ़ैसला कर दिया। यक़ीनन इस फ़ैसले से हज़रत अशअस को वक़्ती तौर पर सदमा पहुँचा और नुक़्सान भी पहुँचा होगा, लेकिन अल्लाह के रसूल

1. अबू-दाऊद : 2682

(सल्ल०) के सामने इस क़ानून को लागू करने का तक़ाज़ा था कि अगर लोगों के दावे के अनुसार अधिकार दिए जाएँ तो वह दूसरों की जान और माल पर दावे करना शुरू कर देंगे। लेकिन मुद्दआ अलैहि के ज़िम्मे क़सम खाना है।[1] दूसरी रिवायात में है मुद्दई के ज़िम्मा गवाह पेश करना है, मुद्दआ अलैहि के ज़िम्मे क़सम है।[2]

(ब) यह दूसरा दृश्य है जो मदीना के यहूदियों के साथ सुलह के समय का है। जब ख़ैबर की लड़ाई में यहूदियों की हार हुई और उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुलह करना क़ुबूल की। इन हालात में यहूदी इलाक़े में एक अंसारी व्यक्ति की हत्या कर दी गई। मक़्तूल के वारिस आए और दावा किया कि यहूदी ही उसके क़ातिल हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने गवाह तलब किए। उनके पास गवाह न थे इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यहूदियों को सज़ा न दी और उन पर हर्जाना भी लाज़िम नहीं किया, बल्कि हर्जाना की अदायगी सरकारी फ़ंड से की। यहूदियों से केवल यह माँग की कि वे क़सम खाएँ कि उन्होंने हत्या नहीं की है।

हदीस में आया है कि सहल बिन अबू हशिमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उनकी क़ौम के कुछ लोग ख़ैबर गए और इधर-उधर फैल गए कि अचानक अपने एक साथी को क़त्ल किया हुआ पाया। जिन लोगों के इलाक़े में मक़्तूल पाया गया। उनसे कहा तुमने हमारे साथी की हत्या की है। इन्होंने जवाब दिया न हमने मारा और न मारने वाले को जानते हैं। ये लोग अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में आए और बताया कि हम ख़ैबर गए, वहाँ हमने अपने एक साथी को मक़्तूल पाया। आप (सल्ल०) ने कहा तुम में जो बड़ा है वह बात करे, और गवाह पेश करे। कहा गया गवाह नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा फिर दूसरा फ़रीक़ क़सम खाए। उन लोगों ने कहा यहूदियों की क़सम हम नहीं मानेंगे। इसके बावजूद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस ख़ून को बेकार होना पसन्द नहीं किया। फिर सदक़े के 100 ऊंट देकर मक़्तूल के ख़ून का जुर्माना अदा किया।[3]

---

1. इब्ने-माजा : 1893 अलबानी ने सही कहा
2. अलअम : 8/27 3. बुख़ारी : 602

(3) हक़ अदा करना

क़ुरआन की यह आयत अल्पसंख्यकों के अधिकारों की स्थापना का आरंभ था जो आप पर नाज़िल हुई :

> "अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।"[1]

इस आयत में ग़ैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों के साथ मुसलमान के लिए नैतिक और क़ानूनी तौर पर व्यवहार करने की बुनियादें स्थापित कर दी गईं, जिसके दो अहम स्तंभ हैं :

(अ) ग़ैर-मुस्लिमों के साथ अच्छा बर्ताव और सद्व्यवहार।

(ब) न्याय और इनसाफ़ करना। इसका तक़ाज़ा हर व्यक्ति के सम्बन्ध में है चाहे वह मुसलमानों से दुश्मनी ही क्यों न रखता हो।

ये ऐसे बुनियादी उसूल हैं जिनसे दुनिया इस्लाम से पहले परिचित नहीं थी।

इन्हीं अधिकारों में से जिनकी ज़मानत अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अल्पसंख्यकों के लिए ली, कुछ ये हैं:

(1) अक़ीदा का अधिकार : "لَآ إِكۡرَاهَ فِي ٱلدِّينِ" ला इकराह फ़िद्दीन की व्याख्या से मालूम हुआ कि किसी को मज़हब अपनाने पर मजबूर नहीं किया जाएगा। इसमें अक़ीदा की आज़ादी भी शामिल है। इसी तरह जीवन, सुरक्षा, और अस्तित्व की ज़िम्मेदारी भी है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा :

"जिसने ऐसे व्यक्ति की हत्या की जो संधि के तहत इस्लामी साम्राज्य में रह रहा है वह जन्नत की ख़ुशबू भी न पाएगा, हालाँकि वह ख़ुशबू चालीस साल की दूरी से महसूस होती है।"[2]

(2) माल की सुरक्षा का अधिकार : इस्लामी साम्राज्य में ग़ैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक के अधिकारों में उनके माल की सुरक्षा भी शामिल है। कोई नाहक़

---

1. अल-मुमतहिना : 8 1. बुख़ारी : 3166

उनके माल पर क़ब्ज़ा न करे, उसे हड़प न करे, चोरी न करे। इसी तरह किसी ज़ालिमाना तरीक़ा से हड़प न लिया जाए आदि।

(3) निगरानी और देख-रेख का अधिकार : अल्पसंख्यक वर्ग का कोई सदस्य मजबूर या बूढ़ा हो जाए तो उसकी निगरानी और देख-रेख इस्लामी साम्राज्य की ज़िम्मेदारी है और देश के हर नागरिक की निगरानी उसके ज़िम्मे है। इस्लामी साम्राज्य अल्पसंख्यक सहित हर नागरिक के आत्म-सम्मान की रक्षा करता है और हाथ फैलाने से बचाता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसे क़ानून की हैसियत दी है। कहा, "तुम में से हर व्यक्ति निगराँ है और उसके अधीनस्तों के बारे में उससे सवाल किया जाएगा।[1]

अल्पसंख्यकों के साथ नैतिकता की सुन्दर मिसाल वह है जिसे क़ैस बिन साद (रज़ि०) और हज़रत सहल बिन हनीफ़ (रज़ि०) ने बयान किया है। आप (सल्ल०) के पास से एक जनाज़ा गुज़रा, आप (सल्ल०) खड़े हो गए, किसी ने अर्ज़ किया, वह तो यहूदी का जनाज़ा है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "क्या वह इन्सान नहीं है?"[2]

– – – – –

1. बुख़ारी : 2409   2. मुस्लिम : 961

रसूल (सल्ल०) की वे भविष्यवाणियाँ जो पूरी हुईं

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिसालत की एक महत्वपूर्ण प्रतीक उन भविष्यवाणियों का पूरा होना है जो अल्लाह की ओर से अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने की थीं। कुछ भविष्यवाणियाँ, जो पूरी हुईं, उनका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

(1) रोमियों की जीत की भविष्यवाणी

उस समय की दो बड़ी ताक़तों, रोमियों और फ़ारसियों के बीच ठनी हुई थी, मक्का और मदीना में बसे अरबों और उन दो बड़ी ताक़तों के पड़ोस में आबाद अरबों का उस युद्ध से कुछ लेना देना न था। यह बात छठी-सातवीं सदी ईसवी की है। इसी दौरान फ़ारस को विजय प्राप्त हुई और रोमियों की फ़ारसियों के हाथों ज़बरदस्त पराजय हुई, जिसके नतीजे में रोम को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। उन्हें अनताकिया, दमिश्क़, आरमीनिया, क़ुद्स और मिस्र से बेदख़ल होना पड़ा।

ऐसे माहौल में क़ुरआने-करीम कि आयतें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर नाज़िल हुईं। ये आयतें सूरह रूम की शुरुआत में हैं :

> "रूमी निकटवर्ती क्षेत्र में पराभूत हो गए हैं। और वे अपने पराभव के पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षों में प्रभावी हो जाएँगे।"[1]

नबी रहमत मुहम्मद (सल्ल०) का रूम या फ़ारस से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध न था, बल्कि ये इलाक़े आप (सल्ल०) से हज़ारों किलोमीटर दूर स्थित थे। क़ुरआन की आयतों में रोम की पराजय का उल्लेख किया गया और यह बताया गया कि रोम की कुछ सालों में जीत होगी, अरबी भाषा में

---

1. अल-रूम : 2, 3

लफ़्ज़ 'बिज़इ' का मतलब तीन से नौ के बीच की संख्या होती है। फिर यह भविष्यवाणी अक्षरशः पूरी हुई।

अंग्रेज़ इतिहासकार अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की भविष्यवाणी के बारे में लिखते हैं, "जब यह भविष्यवाणी की गई तो उस समय इसके बारे में कोई जानकारी प्राप्त करने और अनुमान लगाने का माध्यम मौजूद नहीं था और भविष्यवाणी यह थी कि हरकूलस के शासन के आरंभिक बारह वर्षों के दौरान फ़ारस साम्राज्य की साफ़ तौर पर समाप्त हो जाएगा।

उस समय दुनिया यह समझ रही थी रोम मृत्यु शैया पर पहुँच चुका और जब यह आयतें उतरीं तो क़ुरैश सरदारों ने इन आयतों को अक़्ल के ख़िलाफ़ क़रार दिया, लेकिन अभी कुछ साल भी न गुज़रे थे कि हरकूलस ने रोमियों का नेतृत्व किया और फ़ारस पर जीत पा ली। रोम की जीत हुई और 6 से 8 साल के अन्दर मुहम्मद (सल्ल०) की भविष्यवाणी पूरी हुई।

(2) मंगोलों से लड़ना

मंगोलों का सितारा 1206 ई. में उस समय उदय हुआ, जब चंगेज़ ख़ाँ ने बहुत से मंगोल क़बीलों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसे उस साल शासक क़रार दिया गया। उसने 1207 में चीन से दुनिया की जीत का काम आरम्भ किया। फिर पहले इस्लामी साम्राज्य ख़्वारिज़्म से 1219 में आरंभ किया। इसके बाद मंगोलों ने अनातोलिया, इराक़ और क़फ़क़ाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया, बग़दाद को जलाया और बहुत से लोगों की हत्या कर दी, फ़साद मचाया, आग लगाई और दुनिया में आतंक फैला दिया।

पैग़म्बरे-इस्लाम मुहम्मद (सल्ल०) ने मंगोलों से लड़ाई की भविष्यवाणी कर दी थी, जिसका उल्लेख कई हदीसें में आया है जिनमें उल्लेख किया गया है कि मुसलमान उससे लड़ेंगे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, "क़ियामत उस समय तक स्थापित न होगी जब तक तुम ऐसी क़ौम से युद्ध न करोगे जो बालों की जूतियाँ पहने होंगी और क़ियामत स्थापित न होगी जब तक तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे जिनके मुँह चौड़े-चौड़े होंगे, मानो हथौड़े से पिटी हुई ढालें हैं। (यानी बहुत चौड़े मुँह वाले होंगे)[1]

1. बुख़ारी : 2929

दूसरी हदीस में है कि क़ियामत स्थापित न होगी जब तक तुम तुर्कों से युद्ध न कर लो, जिनकी आँखें छोटी होंगी। चेहरे लाल होंगे, नाक छोटी और चिपटी होगी, चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह-ब-तह ढाल होती है। और क़ियामत स्थापित न होगी जब तक तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे जिनके जूते बाल के होंगे ।[1]

(3) रोम और ईरान पर विजय

जब मुशरिकों ने मदीना का हर ओर से घेराव कर लिया और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उनसे मुक़ाबले की तैयारी कर रहे थे। यह 5 हिज्री (मार्च 627 ईसवी) की बात है। ख़ंदक़ (खाई) खोदी जा रही थी। खुदाई के दौरान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक बड़े पत्थर को तोड़ते हुए तकबीर का नारा ऊँचा किया, अल्लाहु-अकबर सीरिया की चाभियाँ दे दी गईं। ख़ुदा की क़सम मैं अभी उसके लाल महलों को देख रहा हूँ। फिर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पत्थर पर दूसरी चोट लगाई और उसका एक तिहाई हिस्सा और तोड़ दिया। फिर अल्लाहु-अकबर की सदा लगाई और कहा, फ़ारस की चाभियाँ मिल गईं। ख़ुदा की क़सम मैं मदाइन का व्हाइट हाउस देख रहा हूँ। फिर जब तीसरी चोट लगाई तो कहा बिस्मिल्लाह। फिर पूरे पत्थर को उखाड़ फेंका और अल्लाहु-अकबर कहा, यमन की चाभियाँ मुझे दी गईं। ख़ुदा की क़सम मैं इसी जगह से इसी पल सनआ के दरवाज़े देख रहा हूँ।[2]

मुहम्मद (सल्ल०) ने जितनी भविष्यवाणियाँ कीं वे हू-ब-हू पूरी हुईं। जब आप (सल्ल०) ये बातें कह रहे थे, उस समय मुसलमानों की संख्या कुल तीन हज़ार थी और हर ओर से दुश्मनों के घेरे में थे। इस कड़ी घड़ी में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) बड़ी ताक़तों के पराजित होने की ख़ुशख़बरी सुना रहे थे।

(अ) रोम विजय : रोम की जीत 15-20 अगस्त 636 ईसवी में, यानी भविष्यवाणी के नौ साल और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मौत के चार साल बाद हुई। उस युद्ध की कमान क़ैसर (सीज़र) के भाई थ्योडर ट्रीटोरेस ने सँभाल रखी थी। मुसलमानों की फ़ौज 36 हज़ार थी और रोम की फ़ौज 12 लाख 40 हज़ार थी। मुसलमान यह युद्ध हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) की कमांड में लड़ रहे थे। युद्ध कई चरणों से गुज़रा। इस तरह मुसलमानों ने सीरिया के रोमन साम्राज्य को पराजित किया।

1. बुख़ारी : 2928 2. निसाई : 8858

(ब) फ़ारस विजय : रोम की जीत के तीन ही महीने बाद क़ादसिया का युद्ध शुरू हुआ। पहली विश्व शक्ति रोम की पराजय के बाद उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने दूसरी विश्व शक्ति फ़ारस के ख़िलाफ़ मोर्चा खोलना तय किया। 16-19 नवंबर 636 ईसवी से युद्ध का आरंभ होता है। मुस्लिम सेनाओं के कमांडर हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) थे, जबकि फ़ारस का कमांडर रुस्तम था। सासानी शहनशाह यज़दगर्द थर्ड और बैज़ेनटीनियन शहनशाह हिरक़्ल के एकजुट और एक-दूसरे के सहयोगी हो जाने के बावजूद मुसलमानों की जीत हुई और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की भविष्यवाणी पूरी हुई।

(स) यमन विजय : यमन देश युद्ध के माध्यम से नहीं जीता गया, बल्कि हिजरत के बाद यमन के लोग इस्लाम ले आए और पूरा यमन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के अधीन आ गया। यमन के राजाओं और शासकों के नाम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने पत्र भेजे, उन्हीं में एक पत्र अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किसरा की ओर से नियुक्त यमन के गवर्नर बाज़ान को भी लिखा। सबसे पहले उसी ने आपके ख़त का जवाब दिया और इस्लाम का पैग़ाम क़ुबूल किया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उसे शासक बाक़ी रखा और पूरे क्षेत्र में इस्लाम फैल गया। फिर 9 हिज्री (630 ईसवी) में नबी की मौत से पहले यमन के लोगों का आना शुरू हो गया जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के हाथों पर बैअत करते और इस्लाम लाकर आपकी इताअत क़ुबूल करते गए।

(4) ताऊन की महामारी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने संक्रामक बीमारी ताऊन की भविष्यवाणी की जो 18 हिज्री (640 ईसवी) अमवास शहर में पूरी हुई। यह शहर फ़लस्तीन में बैतुल-मक़दिस के नज़दीक है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज़रत औफ़ बिन मालिक (रज़ि०) से कहा, "क़ियामत की छः निशानियाँ गिन लो। उनमें से एक बीमारी जो बकरियों के ताऊन की तरह फैलेगी।[1]

महामारी फैली, लोगों की बड़ी संख्या 25 हज़ार के क़रीब मुसलमान मरे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस संक्रामक बीमारी को बकरियों की ताऊनी बीमारी कहा है, इसलिए कि ताऊन में शरीर के अन्दर फोड़ा निकलता है, मुँह,

---

1. बुख़ारी : 3176

नाक, आंत और त्वचा की निचली सतह से ख़ून निकलने लगता है। सख़्त बुख़ार आता है, बहुत कपकपी होती है, फिर मौत हो जाती है। ऐसी ही बीमारी बकरियों को होती है। नाक से ख़ून निकलने लगता है जिसे अंग्रेज़ी में Serapie कहते हैं। इस बीमारी की निशानियाँ ताऊन की निशानियों से मिलती हैं और इससे बकरियों का श्वसन तंत्र प्रभावित होता है।

(5) ज्वालामुखी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सऊदी अरब के शहर मदीना के क़रीब ज्वालामुखी की भविष्यवाणी की। आपने कहा कि क़ियामत उस समय तक न आएगी जब तक हिजाज़ की ज़मीन से एक आग न निकले जो बस्रा के ऊँटों की गर्दन रोशन कर दे।[1] सरज़मीन हिजाज़ मक्का व मदीना और आस-पास के क्षेत्र को कहते हैं। यह भविष्यवाणी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मौत के छः सदी बाद 654 हिज्री (1256-57) के बीच पूरी हुई। आपकी मौत 632 ईसवी में हुई थी। यह भविष्यवाणी इसी तरह पूरी हुई जिस तरह आपने कहा था। जाने-माने इस्लामी इतिहासकार इब्ने-कसीर लिखते हैं, "हिजाज़ की ज़मीन से आग निकली और उससे बसरा के ऊँटों की गर्दनों तक चमक उठीं। जैसा कि हदीस में कहा गया है। कहते हैं कि यह आग तीन महीने तक बराबर जलती रही। और महिलाएँ उसकी रोशनी में सूत कातती थीं।[2]

इतिहातकार शहाबुद्दीन अबू-शामा ने अपनी किताब अल-तज़किरा में लिखा है, मदीना के हुर्रा में आग के शोले बुलंद हुए। मदीने की उस आग को हम अपने घरों से देख रहे थे, मानो हमारे क़रीब ही लगी हुई है और शिफ़ा वादी की ओर पानी की तरह बह रही है। उस आग से ऊँचे महलों की बुलंदी जैसी लपटें निकल रही थीं।[3]

(6) समय में बरकत न होगी

इससे आप (सल्ल०) के बताने का मतलब यह था कि समय तेज़ी से गुज़रेगा। जो चीज़ वर्षों और महीनों में प्राप्त की जाती थी, वह कुछ घंटों और मिनटों में प्राप्त कर ली जाएगी। आपने कहा, "क़ियामत उस समय तक न आएगी जब तक कि समय सिमट न जाए। यहाँ तक कि साल महीने जैसा,

1. बुख़ारी : 7118
2. इब्ने-कसीर, अल-बदायह वल-नहायह, 13/199
3. अल-तज़किरा, पृष्ठ 527

महीना हफ़्ते जैसा, हफ़्ता दिन जैसा और दिन ऐसा हो जाएगा जैसे किसी चीज़ को आग लगी और जल्दी भड़क कर ख़त्म हो गई ।[1]

आप (सल्ल०) ने यह बात उस समय की थी जब ऊँटों की सवारी कुवैत से मक्का मुकर्रमा एक महीने में पहुँचती थी। और अब इस दौर में कार दो तीन दिनों में पहुँचाती है, जबकि जहाज़ दो घंटे में पहुँचा देता है।

पहले ज़माना में पत्र और पत्रिकाएँ एक देश से दूसरे देश एक हफ़्ता से एक महीने में पहुँचती थीं, और आज ऐसे साधन मौजूद हैं कि सेकेंडों और मिनटों में पहुँच जाते हैं। पहले किताब कई साल में तैयार होती थी और आज इलेक्ट्रॉनिक साधन और नेट की मदद से एक हफ़्ता या इससे भी कम में इन्सान तैयार कर सकता है और यह सारी चीज़ें हमारे सामने हैं।

(7) मंडियाँ इकट्ठी हो जाएँगी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की भविष्यवाणी है कि मंडियाँ इकट्ठी हो जाएँगी। इस हदीस को जिसने इस दौर में सुना होगा उसके दिल में भी इसका ख़याल न गुज़रा होगा जो इस दौर में हुआ कि मंडियाँ (दुनिया के सारे बाज़ार) इकट्ठा हो गए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा, “क़ियामत नहीं आएगी जब तक फ़ित्ने न उभर जाएँ, झूठ न फैल जाए और मंडियाँ इकट्ठी न हो जाएँ ।[2]

पहले ज़माने में मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों और सारे धर्मों मैं झूठ बोलना बुरा था। अरबों और सारे देशों में ग़लत था, लेकिन आज झूठ राजनीतिक और आर्थिक दुनिया का बुनियादी अस्त्र क़रार पाया और बहुत सारे राजनेता झूठ के बिना कामयाब ही नहीं हो सकते।

यहाँ ध्यान देने की बात अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की मंडियों के इकट्ठी होने की भविष्यवाणी है। पहले लोग सफ़र करते एक देश से दूसरे देश पहुँचते, फिर बाज़ार जाते और बड़े बाज़ार भी हर शहर में न होते, लेकिन आज सभी शहरों में बाज़ार हैं, बल्कि हर मुहल्ले में बड़ी दुकानें हैं और तो और रिहाइशी मकानों से लगे बाज़ार हो गए और अब जब इंटरनेट की क्रांति आई तो मंडियाँ क़रीब से और क़रीब हो गईं और सारी दुनिया की मंडियाँ आपके सामने आ गईं। आप सफ़र

1. सही अल-तिरमिज़ी : 2332, अलबानी ने सही कहा
2. अहमद अल-सिलसिलातुस्सहीहा : 2772, अलबानी ने सही कहा

किए बिना दुनिया के बाज़ारों में घूम फिर सकते हैं। घर में बैठ सेकेंडों में ख़रीदारी कर सकते हैं और सेकेंडों में रक़म की अदायगी कर सकते हैं।

(8) मोटापे की दर में इज़ाफ़ा

सातवीं सदी ईसवी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सदी है। उसमें लोग एक जगह से दूसरी जगह या तो पैदल जाते या जानवरों पर सवार होकर जाते। खाने सादा और नेचुरल होते । उस दौर में कैमिकल्स और खानों को देर तक सुरक्षित रखने वाले Preservatives नहीं होते थे। दिन-प्रतिदिन के जो काम होते थे वे स्वास्थ्यवर्धक होते थे। इसलिए इस दौर में मोटापा नहीं फैला था। मोटे लोग बहुत कम नज़र आते। रही बात हमारे दौर की तो खाने-पीने के क्षेत्र में टेक्नोलोजी की वजह से क्रांति आ गई और खाद्य पदार्थों को देर तक बचाने के उपाय हो गए । उसके साथ व्यापारिक दुनिया धोखा और छल से भर गई। यातायात के साधन (ट्रांसपोर्ट, गाड़ियाँ, जहाज़, ट्रेन, किश्तियाँ) ने लोगों का पैदल चलना कम कर दिया और सारी ज़रूरतें टेक्नोलॉजी के ज़रिये पूरी होने लगीं, जिसका नतीजा यह निकला कि मोटापा विश्व स्तर पर फैल गया। सातवीं सदी में इसकी भविष्यवाणी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने की, "बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है। उनका ज़माना जो लोग मेरे बाद होंगे, फिर ऐसे लोग आएँगे जो नज़र मानेंगे लेकिन पूरी न करेंगे, ख़ियानत करेंगे, उनके पास अमानत रखने से बचेंगे, वह गवाही देंगे लेकिन उनकी गवाही न ली जाएगी और उनमें मोटापा आम हो जाएगा।[1]

जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं इस दौर में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की भविष्यवाणी पूरी हो रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 3 मई 2022 को जो रिपोर्ट 2022 के मोटापे के बारे में पेश की है उसकी तफ़सील यह है। यूरोप में 59 फ़ीसद मर्द वज़न की ज़्यादती या मोटापे के शिकार हैं और 7-9 साल की उम्र का हर तीसरा बच्चा वज़न की ज़्यादती से परेशान है और 36 फ़ीसद जवान लड़के, तो 27 फ़ीसद जवान लड़कियाँ वज़न में इज़ाफ़ा का शिकवा कर रही हैं।

यूरोप के स्वास्थ्य विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार यूरोपीय देशों में मोटापे की दर महामारी का रूप ले चुकी है और इसमें दिन-ब-दिन इज़ाफ़ा हो रहा है। 1975 में यूरोपीय देशों में मोटापे की दर बड़ों में 40 फ़ीसद थी और 2016 में यह दर 138 फ़ीसद तक पहुँच गई है ।[2]

1. बुख़ारी : 6695 2. dw.com/ar

मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व
विद्वानों की नज़र में

दुनिया के बड़े विद्वानों ने हर दौर में मुहम्मद (सल्ल०) के महान व्यक्तित्व को स्वीकार किया है और आपकी ख़ूबियों और कमालों ने उन्हें हैरत में डाला है। उन सबको समेटना तो बड़ा कठिन है, यहाँ कुछ महत्वपूर्ण विद्वानों के विचार पेश किए जा रहे हैं।

(1) गांधी जी : गांधी जी, मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र पर बोलते हुए "यंग इंडिया" में कहते हैं : "मैं उस व्यक्ति के बारे में सबसे अच्छा जानना चाहता था जो लाखों मानवजाति के दिलों पर आज भी निर्विवाद प्रभाव रखता है...मैं इस बात से अधिक आश्वस्त हो गया कि यह वह तलवार नहीं थी जिसने लोगों की जीवन में उन दिनों इस्लाम के लिए जगह बनाई थी। यह कठोर सादगी, पैग़म्बर का पूर्ण त्याग, उनकी प्रतिज्ञाओं के प्रति निष्ठा, उनकी मित्रों और अनुयायियों के प्रति उनकी गहन भक्ति, उनकी निर्भयता, उनकी निडरता, ईश्वर और अपने स्वयं के लक्ष्य में उनका पूर्ण विश्वास था। ये तलवार नहीं थी जिससे वे आगे बढ़े और हर बाधा को पार किया। जब मैंने पैग़म्बर की जीवनी का दूसरा खंड खत्म किया, तो मुझे दुख हुआ कि मेरे पास उनके महान जीवन के बारे में पढ़ने के लिए और अधिक नहीं था।"

(2) रामा कृष्णा राव : "मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व के बारे में पूरी सच्चाई में उतरना सबसे कठिन है। इसकी एक झलक ही मैं पकड़ सकता हूँ। सुरम्य दृश्यों का क्या ही नाटकीय क्रम है! यहाँ मुहम्मद एक पैग़म्बर हैं, यहाँ मुहम्मद एक योद्धा हैं; व्यवसायी मुहम्मद, राजनेता मुहम्मद, वक्ता मुहम्मद, सुधारक मुहम्मद, अनाथों के लिए शरण मुहम्मद; ग़ुलामों के रक्षक मुहम्मद;

महिलाओं के मुक्तिदाता मुहम्मद; न्यायाधीश मुहम्मद, संत मुहम्मद। इन सभी शानदार भूमिकाओं में, मानवीय गतिविधियों के इन सभी विभागों में, वह एक नायक के समान हैं।"

आज चौदह शताब्दियों के अंतराल के बाद मुहम्मद का जीवन और शिक्षाएँ बिना किसी नुक़सान, परिवर्तन या प्रक्षेप के जीवित हैं। मानवजाति की अनेक बीमारियों के उपचार के लिए वही अनन्त आशा प्रदान करते हैं, जो उन्होंने उसके जीवित रहते हुए की थी। यह मुहम्मद के अनुयायियों का दावा नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण और निष्पक्ष इतिहास द्वारा मजबूर अपरिहार्य निष्कर्ष भी है। एक जागरूक इन्सान के रूप में आप कम-से-कम एक पल के लिए रुक सकते हैं और अपने आपसे पूछ सकते हैं : क्या ये कथन जो इतने असाधारण और क्रांतिकारी लग रहे हैं, वास्तव में सच हो सकते हैं? और मान लीजिए कि वे वास्तव में सच हैं और आप इस आदमी मुहम्मद को नहीं जानते थे या उनके बारे में नहीं सुनते थे, तो क्या यह समय नहीं है कि आप इस ज़बरदस्त चुनौती का जवाब दें और उन्हें जानने के लिए कुछ प्रयास करें? इसमें आपको कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा लेकिन यह आपके जीवन में एक बिल्कुल नए युग की शुरुआत साबित हो सकता है।

(3) ला मारटाइन : "यदि उद्देश्य की महानता, साधनों का कम होना, और आश्चर्यजनक परिणाम मानव प्रतिभा के तीन मानदंड हैं, तो आधुनिक इतिहास में किसी भी महान व्यक्ति की तुलना मुहम्मद (सल्ल०) के साथ करने की हिम्मत कौन कर सकता है? सबसे प्रसिद्ध पुरुषों ने ही हथियार, क़ानून और साम्राज्य बनाए। अगर उन्होंने किसी चीज की स्थापना की, तो वह भौतिक शक्तियों से अधिक कुछ नहीं था, जो अक्सर उनकी आंखों के सामने टूट जाती थीं। इस व्यक्ति ने न केवल सेनाओं, विधानों, साम्राज्यों, लोगों और राजवंशों को, बल्कि उस समय के एक तिहाई विश्व में लाखों लोगों को स्थानांतरित किया; और इससे भी अधिक, उन्होंने वेदियों, देवताओं, धर्मों, विचारों, विश्वासों और आत्माओं को स्थानांतरित किया...विजय में सहनशीलता, उनकी महत्वाकांक्षा पूरी तरह से एक विचार के लिए समर्पित थी और किसी भी तरह से एक साम्राज्य के लिए नहीं थी; उनकी अंतहीन प्रार्थनाएँ, ईश्वर के

साथ उनकी रहस्यवादी बातचीत, उनकी मृत्यु और मृत्यु के बाद उनकी जीत; ये सभी किसी धोखे की नहीं, बल्कि एक दृढ़ विश्वास की गवाही देते हैं जिसने उन्हें एक हठधर्मिता को बहाल करने की शक्ति दी। यह हठधर्मिता दो तरह की थी, सिर्फ एक ईश्वर और ईश्वर की अमूर्तता; पहला बताता है कि ईश्वर क्या है, बाद वाला बताता है कि ईश्वर क्या नहीं है; एक तलवार से झूठे देवताओं को उखाड़ फेंकता है और दूसरा शब्दों के साथ एक विचार शुरू करता है।"

"दार्शनिक, वक्ता, ईश्वर दूत, क़ानून निर्माता, योद्धा, विचारों के विजेता, तर्कसंगत सिद्धांतों के पुनर्स्थापक छवियों के बिना पंथ के; बीस स्थलीय साम्राज्यों और एक आध्यात्मिक साम्राज्य के संस्थापक, वे मुहम्मद हैं। जहाँ तक उन सभी मानकों का सम्बन्ध है जिनके द्वारा मानव महानता को मापा जा सकता है, हम भली-भाँति पूछ सकते हैं कि क्या उनसे बड़ा कोई मनुष्य है?"

(4) डब्ल्यू. मोंटगोमरी : डब्ल्यू. मोंटगोमरी, मुहम्मद अट् मक्का, ऑक्सफोर्ड 1953, पृष्ट 52 : "अपने विश्वासों के लिए उत्पीड़न से गुज़रने की उनकी तत्परता, उन लोगों का उच्च नैतिक चरित्र जो उन पर विश्वास करते थे और उन्हें नेता के रूप में देखते थे, और उनकी अंतिम उपलब्धि की महानता– सभी उनकी मौलिक अखंडता का तर्क देते हैं। मुहम्मद (सल्ल०) को धोखेबाज मानना, समस्याएँ हल करने से ज़्यादा बढ़ाता है। इसके अलावा, पश्चिम में इतिहास के किसी भी महान व्यक्ति की इतनी कम सराहना नहीं की जाती है जितनी मुहम्मद (सल्ल०) की, की जाती है।

(5) ऐडवर्ड मोंटी : मुहम्मद (सल्ल०) शुद्ध नीयत, सद्व्यवहार, फ़ैसले में इंसाफ पसन्दी और चिंतन में ईमानदारी के लिए मशहूर हुए। प्राप्त यह कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने ज़माने के अरबों में सबसे ज़्यादा पाकीज़ा, धार्मिक और बहुत ही रहमदिल थे और व्यवस्था की सुरक्षा में बहुत सख़्त थे। इन गुणों ने उन्हें ऐसा जीवन दिया कि इससे पहले कभी किसी ने ख़्वाब में भी न देखा था और वक़्ती व धार्मिक साम्राज्य स्थापित किया जो आज तक जारी है।[1]

(6) बर्नाडशा : बेशक दुनिया को ऐसे व्यक्ति की शदीद ज़रूरत है जो

1. ऐडवर्ड मोंटी फ्रांस के ओरिएंटलिस्ट हैं, लूकाडॉ में पैदा हुए 1817-1894

मुहम्मद (सल्ल०) का चिंतन रखता हो। यह वह नबी हैं जिन्होंने अपने दीन को हमेशा सम्मान और आदर के स्थान पर आसीन रखा। यह दीन सभी सभ्यताओं और कल्चरल की समझ के अनुसार, सबसे मज़बूत और जीवित और जीवंत रहने वाला दीन है। मैंने अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को देखा है जो कि इस दीन में समझ-बूझकर प्रवेश हुए हैं। यह दीन यूरोप में बड़ी जगह बना लेगा। मध्यकाल के धार्मिक व्यक्तित्वों ने अज्ञानता और द्वेष के नतीजे में मुहम्मद (सल्ल०) के दीन की ऐसी छवि पेश की कि मुहम्मद (सल्ल०) को ईसाइयत का दुश्मन समझ लिया गया। लेकिन मैंने उस व्यक्तित्व (मुहम्मद सल्ल०) के बारे में जानकारी प्राप्त की तो मैंने उन्हें सबसे अलग और सबसे महान पाया और इस नतीजे तक पहुँचा कि वे ईसाइयत के दुश्मन न थे, बल्कि उनको मानवता का मुक्तिदाता क़रार दिया जाना ज़रूरी है। और मेरी राय में वर्तमान कठिनाइयों और मुसीबतों से नजात मिलने की एकमात्र सूरत यह है कि मुहम्मद (सल्ल०) इस दुनिया के रहनुमा बनें।

(7) सर विलियम म्योर : मुसलमानों के नबी मुहम्मद (सल्ल०) का नाम बचपन ही से उनके शहर के लोगों ने सर्वसम्मति से अमीन रखा कि यह उनके उच्च नैतिक गुणों और सद्व्यवहार का करिश्मा था। मामला जो भी हो मुहम्मद (सल्ल०) का क़द इतना बुलंद है कि उनकी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं किया जा सकता। जो उनसे अपरिचित है वही उनको नहीं जानता, अन्यथा जिसने उनके इतिहास को गहरी नज़र से पढ़ा वह भली-भाँति अवगत है। मुहम्मद (सल्ल०) का नाम रसूलों और विश्व चिंतकों की सूची में सब से ऊपर है।

(8) मिस्टर सिंक्स : हज़रत ईसा के 570 साल बाद मुहम्मद (सल्ल०) का उदय हुआ और उनकी ज़िम्मेदारी उच्च नैतिकता के बुनियादी सिद्धांतों के ज़रिये मानव विवेक को विकसित करना थी। मानव बुद्धि को एक ख़ुदा और इस जीवन के बाद दूसरे जीवन की मान्यता की ओर वापस करना था। वे आगे लिखते हैं इस्लामी चिंतन ने दुनिया को बड़ी उन्नति की राह दिखाई और ज्योतशियों, जादूगरों और देवी-देवताओं की क़ैद में फंसी मानव बुद्धि को आज़ाद कराया, इबादतगाहों के अन्दर पाई जाने वाली पूज्य की हर साकार मूर्ती को ख़त्म करते हुए मुहम्मद (सल्ल०) ने मानव चिंतन को मूर्तिपूजा से नजात दिलाने में कामयाबी प्राप्त की।

(9) आन बेज़िंट : जो व्यक्ति अरब के महान नबी के व्यक्तित्व, और उनके जीवन का अध्ययन करे और इस बात से परिचित हो कि इस नबी ने किस तरह का जीवन गुज़ारा और लोगों को किस तरह की शिक्षा दी, उसके लिए नामुमकिन है कि उस महान नबी की महानता का एतिराफ़ न करे। यक़ीनन वह अल्लाह के चुने हुए रसूलों में हैं। बावजूद इसके कि जो बातें मैं पेश करने जा रहा हूँ, वे बहुत से लोगों के सम्बन्ध से मशहूर हो सकती हैं, फिर भी मैं जब भी इन बातों से को पढ़ता हूँ तो उस महान अरब शिक्षक के प्रति हैरत और प्रतिष्ठा के नए एहसास से भर जाता हूँ।

क्या आप यह हमें बताना चाहते हैं कि एक व्यक्ति ठीक जवानी के दौर में जब कि उसकी उम्र 24 वर्ष से ज़्यादा नहीं थी, ख़ुद से उम्र में बहुत बड़ी महिला से शादी करता है और 26 साल तक अपने जज़्बात और एहसास को उसी के लिए वक़्फ़ रखता है। फिर जब 50 साल की उम्र को पहुँचता है, जिसमें शरीर की यौन इच्छाएँ ठंडी पड़ जाती हैं, तो अपनी यौन इच्छाओं की तृप्ति के लिए शादियाँ करने लगता है? याद रहे यह फ़ैसला लोगों के जीवन के आधार पर किया जाएगा, अगर आप उन औरतों के हालात से परिचित हों जिनसे उन्होंने निकाह किया तो यह बात साफ़ हो जाएगी कि हर एक से शादी की कोई अहम वजह और मस्लिहत थी। जिसके अच्छे नतीजे उनके अनुयायियों पर पड़े, या मज़हब को फ़ायदा पहुँचा, या जिससे निकाह किया उन्हें ख़ुद सुरक्षा की ज़रूरत थी।

(10) माईकल हार्ट : "दुनिया के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची का नेतृत्व करने के लिए मुहम्मद की मेरी पसन्द कुछ पाठकों को आश्चर्यचकित कर सकती है और दूसरों द्वारा पूछताछ की जा सकती है, लेकिन वह इतिहास में एकमात्र व्यक्ति थे जो धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों स्तरों पर सर्वोच्च सफल थे।"

(11) टाल्स्टाय : मुहम्मद (सल्ल०) के फ़ख़र के लिए यही काफ़ी है कि इन्होंने बरी शैतानी रीतियों और परंपराओं के पंजे से पिछड़ी और हिंसक जाति को नजात दिलाई और उनकी पेशानी पर बुलंदी और विकास का ताज पहना दिया। यक़ीनन मुहम्मद का धर्मविधान दुनिया पर शासन करेगा, क्योंकि वह बुद्धि और विवेक के साँचे में ढला हुआ है।

– – – – –

समाप्ति

हमारी हमदर्दी पूरी मानवता के साथ है और हमारी इच्छा है कि मानवजाति को फ़ायदा पहुँचे। हमने अपने रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से यही सीखा है। इस किताब का यही प्रेरक है ताकि उस महान व्यक्तित्व के बारे में जो नहीं जानता उसकी आँखों का पर्दा उठे और सच्चाई सामने आए। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) संसार के लिए रहमत हैं, इस किताब में भावनाओं से पहले बुद्धि को संबोधित किया गया है। जो भावनाओं को एक ओर रखे, नकारात्मक सोच, जो मीडिया ने बना दी है, उससे अलग हो जाए तो इस किताब की किरणें उसे उज्ज्वल कर देंगी। फिर वह अपनी बुद्धि और चिंतन को इस सच्चाई के क़रीब ले जा सकेगा जो बिल्कुल साफ़ है, बल्कि जब उसका दिल और दिमाग़ खुल जाएगा तो वह ख़ुद विश्व इतिहास के सबसे महान इन्सान और रहनुमा के पैग़ाम को आम करने के लिए आगे बढ़ेगा।

– – – – –

डाक्टर अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली कुवैत के मशहूर लेखक, और पत्रकार हैं। उन्होंने इस्लामी उलूमे शरीअत (धर्मशास्त्र) में डाक्ट्रेट किया है। वे चार दर्जन से ज़्यादा किताबों के लेखक हैं।

डॉ० अब्दुल हमीद अल-बिलाली कुवैत में नशा के ख़िलाफ़ "बशाइरुल ख़ैर सोसाइटी" के बैनर तले बहुत व्यवस्थित ठंग से काम कर रहे हैं। उनकी कोशिशों के नतीजे में नशा के आदी सैकड़ों लोगों को नशा से तौबा करने, अल्लाह की ओर पलटने और एक सुखी जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस किताब को लिखने का मक़सद लोगों को अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तित्व से परिचित कराना है। यह किताब अल्लाह के रसूल के आचरण, उनके गुणों, आदमी, औरत, बच्चे, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और अन्य धर्मों के प्रति उनके रवैय्ये का बिलकुल क़रीब से परिचय कराती है। अल्लाह के रसूल के व्यक्तित्व में मानवाधिकार और नैतिक गुणों का वह आदर्श नज़र आता है जिसकी अपेक्षा दुनिया इस दौर में या किसी भी दौर में कर सकती है। यह किताब मानव जीवन के सभी विभागों के के बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के निर्देशों से अवगत कराती है।

डाक्टर अब्दुल हमीद जासिम अल-बिलाली कुवैत के मशहूर लेखक, और पत्रकार हैं। उन्होंने इस्लामी उलूमे शरीअत (धर्मशास्त्र) में डाक्ट्रेट किया है। वे चार दर्जन से ज़्यादा किताबों के लेखक हैं।

डॉ० अब्दुल हमीद अल-बिलाली कुवैत में नशा के ख़िलाफ़ "बशाइरुल ख़ैर सोसाइटी" के बैनर तले बहुत व्यवस्थित ठंग से काम कर रहे हैं। उनकी कोशिशों के नतीजे में नशा के आदी सैकड़ों लोगों को नशा से तौबा करने, अल्लाह की ओर पलटने और एक सुखी जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस किताब को लिखने का मक़सद लोगों को अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तित्व से परिचित कराना है। यह किताब अल्लाह के रसूल के आचरण, उनके गुणों, आदमी, औरत, बच्चे, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और अन्य धर्मों के प्रति उनके रवैय्ये का बिलकुल क़रीब से परिचय कराती है। अल्लाह के रसूल के व्यक्तित्व में मानवाधिकार और नैतिक गुणों का वह आदर्श नज़र आता है जिसकी अपेक्षा दुनिया इस दौर में या किसी भी दौर में कर सकती है। यह किताब मानव जीवन के सभी विभागों के के बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के निर्देशों से अवगत कराती है।

المنار
AL-MANAR

अल-मनार पब्लिशिंग हाउस

N-27, Abul Fazal Enclave, Jamia Nagar, N. Delhi-25

imo +965 65948929 | +91 9667072147